गुटका १५० बाणीयां वाला

भाई जवाहर सिंह कृपाल सिंह एन्ड को०

पुस्तकों वाले, अमृतसर

❀ जपुजी साहिब ❀

१ ओं सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

जपु ॥

आदि सचु जुगादि सचु ॥ है भी सचु नानक होसीभी सचु॥१॥सोचै सोचि न होवई जे सोचीलखवार॥ चुपै चुपि न होवई जे लाइ रहा लिवतार ॥ भुखिआ भुख न उतरी जे बंना पुरीआ भार ॥ सहस

सिग्रागपा लखहोहि त इकन चलै नालि॥किव सचिग्रारा होईऐ किव कूड़ै तुटै पालि ॥ हुकमि रजाई चलणा नानक लिखग्रा नालि॥१॥ हुकमी होवनि ग्राकार हुकमु न कहिग्रा जाई ॥ हुकमी होवनि जीग्रहुकमि मिलै वडिग्राई ॥हुकमी उतमु नीचु हुकमि लिखि दुख सुख पाईग्रहि॥ इकना हुकमी बखसीस इकि हुकमि सदा भवाईग्रहि॥ हुकमै ग्रंदरि सभु को बाहरि हुकम न कोइ॥नानकहुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ॥२॥

गावै को ताणु होवै किसै ताणु ॥
गावै को दाति जाणै नीसाणु ॥
गावै को गुण वडिआईआ चारु ॥
गावै को विदिआ विखमु वीचारु ॥
गावै को साजि करे तनु खेह ॥ गावै
को जीअ लै फिरि देह ॥ गावै को
जापै दिसै दूरि ॥ गावै को वेखै
हादरा हदूरि ॥ कथना कथी न
आवै तोटि ॥ कथि कथि कथी
कोटी कोटि कोटि ॥ देदा दे लैदे
थकि पाहि ॥ जुगा जुगंतरि खाही
खाहि ॥ हुकमी हुकमु चलाए राहु ॥
नानक विगसै वेपरवाहु ॥ ३ ॥

साचा साहिबु साचु नाइ भाखिआ भाउ अपारु ॥ आखहि मंगहि देहि देहि दाति करे दातारु ॥ फेरि कि अगै रखीऐ जितु दिसै दरबारु ॥ मुहौ कि बोलणु बोलीऐ जितु सुणि धरे पिआरु ॥ अंमृत वेला सचु नाउ वडिआई वीचारु ॥ करमी आवै कपड़ा नदरी मोखु दुआरु ॥ नानक एवै जाणीऐ सभु आपे सचि- आरु॥४॥थापिआ न जाइ कीता न होइ॥आपे आपि निरंजनु सोइ ॥ जिनि सेविआ तिनि पाइआ मानु॥ नानक गावीऐ गुणी निधानु ॥

गावीऐ सुणीऐ मनि रखीऐ भाउ॥
दुख परहरि सुखु घरि लै जाइ ॥
गुरमुखि नादं गुरमुखि वेदं गुर-
मुखि रहिआ समाई ॥ गुरु ईसरु
गुरु गोरखु बरमा गुरु पारबती
माई ॥ जे हउ जाणा आखा नाही
कहणा कथनु न जाई ॥ गुरा इक
देहि बुझाई ॥ सभना जीआ का
इकु दाता सो मै विसरि न जाई॥५॥
तीरथि नावा जे तिसु भावा विणु
भाणे कि नाइ करी॥ जेती सिरठि
उपाई वेखा विणु करमा कि मिलै
लई ॥ मति विचि रतन जवाहर

माणिक जे इक गुर की सिख सुणी ॥ गुरा इक देहि बुझाई ॥ सभना जीया का इकु दाता सो मैं विसरि न जाई ॥ ६ ॥ जे जुग चारे आरजा होर दसूणी होइ ॥ नवा खंडा विचि जाणीऐ नालि चलै सभु कोइ ॥ चंगा नाउ रखाइकै जसु कीरति जगि लेइ ॥ जे तिसु नदरि न आवई त वात न पुछै के ॥ कीटा अंदरि कीटु करि दोसी दोसु धरे ॥ नानक निरगुणि गुणुकरे गुणवंतिया गुणु दे ॥ तेहा कोइ न सुझई जि तिसु गुणु कोइ

करे ॥ ७ ॥ सुणिऐ सिध पीर सुरिनाथ ॥ सुणिऐ धरति धवल आकास ॥ सुणिऐ दीप लोअ पाताल ॥ सुणिऐ पोहि न सकै कालु ॥ नानक भगता सदा विगासु ॥ सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥ ८ ॥ सुणिऐ ईसरु बरमा इंदु ॥ सुणिऐ मुखि सालहणु मंदु ॥ सुणिऐ जोग जुगति तनि भेद ॥ सुणिऐ सासत सिमृति वेद ॥ नानक भगता सदा विगासु ॥ सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥ ६ ॥ सुणिऐ सतु संतोखु गि

सुणिऐ अठसठि का इसनानु ॥
सुणिऐ पड़ि पड़ि पावहि मानु ॥
सुणिऐ लागै सहजि धिआनु ॥
नानक भगता सदा विगासु ॥
सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥१०॥
सुणिऐ सरा गुणा के गाह ॥
सुणिऐ सेख पीर पातिसाह ॥
सुणिऐ अंधे पावहि राहु॥ सुणिऐ
हाथ होवै असगाहु ॥ नानक
भगता सदा विगासु ॥ सुणिऐ
दूख पाप का नासु ॥ ११ ॥
मंने की गति कही न जाइ ॥ जे
को कहै पिछै पछुताइ ॥ कागदि

कलम न लिखणहारु ॥ मंनै का
बहि करनु वीचारु ॥ ऐसा नामु
निरंजनु होइ॥ जे को मनि जाणै
मनि कोइ ॥ १२ ॥ मंनै सुरति
होवै मनि बुधि ॥ मंनै सगल
भवन की सुधि ॥ मंनै मुहि
चोटा न खाइ ॥ मंनै जम कै
साथि न जाइ॥ऐसा नामु निरंजनु
होइ ॥ जे को मंनि जाणै मनि
कोइ ॥ १३ ॥ मंनै मारगि ठाक
न पाइ ॥ मंनै पति सिउ परगटु
जाइ ॥ मंनै मगु न चलै पंथु ॥
मंनै धरम सेती सनबंधु ॥ ऐसा

नामु निरंजनु होइ ॥ जे को मंनि
जाणै मनि कोइ॥१४॥मंनै पावहि
मोखुदुआरु॥मंनै परवारै साधारु॥
मंनै तरै तारेगुरुसिख॥मंनै नानक
भवहि न भिख॥ऐसानामु निरंजनु
होइ ॥ जे को मंनि जाणै मनि
कोइ ॥ १५ ॥ पंच परवाण पंच
परधानु॥पंचे पावहि दरगहिमानु
पंचे सोहहि दरि राजानु ॥ पंचा
का गुरु एकु धिआनु॥ जे को कहै
करै वीचारु ॥ करते कै करणै
नाही सुमारु ॥ धौलु धरमु दइआ
का पूतु ॥ संतोखु थापि रखिआ

जिति सूति ॥ जे को बुझै होवै सचिआरु ॥ धवलै उपरि केता भारु॥धरती होरु परै होरु होरु ॥ तिस ते भारु तलै कवणु जोरु ॥ जीअ जाति रंगा के नाव॥ सभना लिखिआ वुड़ी कलाम॥एहु लेखा लिखि जाणै कोइ॥लेखा लिखिआ केता होइ ॥ केता ताणु सुआलिहु रूपु॥ केती दाति जाणै कौणु कूतु ॥ कीता पसाउ एको कवाउ॥ तिसते होइ लख दरीआउ॥कुदरति कवण कहा वीचारु ॥ वारिआ न जावा एक वार ॥ जो तुधु भावै

साई भली कार ॥ तू सदा सला-
मति निरंकार ॥ १६ ॥ असंख
जप असंख भाउ ॥ असंख पूजा
असंख तप ताउ ॥ असंख गरंथ
मुखि वेद पाठ ॥ असंख जोग
मनि रहहि उदास ॥ असंख भगत
गुण गिआन वीचार ॥ असंख
सती असंख दातार ॥ असंख सूर
मुह भख सार ॥ असंख मोनि
लिव लाइतार ॥ कुदरति कवण
कहा वीचारु ॥ वारिआ न जावा
एक वार ॥ जो तुधु भावै साई
भली कार ॥ तू सदा सलामति

निरंकार ॥ १७ ॥ असंख मूरख
अंध घोर ॥ असंख चोर हराम
खोर ॥ असंख अमर करि जाहि
जोर ॥ असंख गल वढ हतिआ
कमाहि ॥ असंख पापी पापु करि
जाहि ॥ असंख कूड़िआर कूड़े
फिराहि ॥ असंख मलेछ मलु भखि
खाहि ॥ असंख निंदक सिरि करहि
भारु ॥ नानकु नीचु कहै वीचारु ॥
वारिआ न जावा एक वार ॥ जो
तुधु भावै साई भलीकार ॥ तू सदा
सलामति निरंकार ॥ १८ ॥ असंख
नाव असंख थाव ॥ अगंम अगंम

असंख लोअ॥ असंख कहहि सिरि
भारु होइ ॥ अखरी नामु अखरी
सालाह॥अखरी गिआनु गीत गुण
गाह॥अखरीलिखणुबोलणुबाणि॥
अखरा सिरि संजोगु वखाणि ॥
जिनिएहिलिखे तिसु सिरि नाहि॥
जिव फुरमाए तिवतिव पाहि॥जेता
कीता तेता नाउ॥विणु नावै नाही
को थाउ ॥ कुदरति कवणु कहा
वीचारु॥वारिआ न जावाएकवार॥
जो तुधु भावै साई भलीकार ॥ तू
सदासलामति निरंकार।१९।भरीऐ
हथु पैरु तनु देह।पाणीधोतै उतरसु

खेह॥मूत पलीती कपड़ु होइ॥ दै साबूणु लईऐ ओहु धोइ॥ भरीऐ मति पापाकै संगि॥ओहु धोपै नावै कै रंगि॥पुंनीपा पीआखणुनाहि। ॥करिकरि करणा लिखिलै जाहु॥ आपे बीजि आपे ही खाहु॥नानक हुकमी आवहु जाहु॥२०॥ तीरथु तपु दइआ दतु दानु॥ जेको पावै तिलकामानु॥सुणिआमंनिआमनि कीता भाउ॥ अंतर गति तीरथि मलि नाउ॥ सभि गुण तेरेमै नाही कोइ॥ विणु गुण कीते भगति न होइ॥ सुअसति आथि बाणी

सिआणा ॥ वडा साहिब वडी नाई
कीता जाका होवै ॥ नानक जेको
आपौजाणैअगै गइआन सोहै॥२१
॥ पाताला पाताल लख आगासा
आगास ॥ ओड़क ओड़क भालि
थके वेद कहनि इक वात ॥ सहस
अटारह अहनि कतेबा असुलू इकु
धातु ॥ लेखा होइ त लिखीऐ लेखै
होइ विणासु॥नानक वडा आखीऐ
आपे जाणै आपु ॥२२॥ सालाही
सालाहि एती सुरति न पाईआ ॥
नदीआ अतै वाह पवहि समुंदि न
जाणीअहि॥ समुंद साह सुलतान

गिरहा सेतीमालु धनु॥कीड़ीतुलि
न होवनी जेतिसु मनहु न वीसरहि
॥ २३ ॥ अंतु न सिफती कहणि
न अंतु ॥ अंतु न करणै देणि न
अंतु ॥ अंतु न वेखणि सुणणि
न अंतु ॥ अंतु न जापै किआ
मनि मंतु ॥ अंतु न जापै कीता
आकारु ॥ अंतु न जापै पारावारु
॥ अंत कारणि केते बिललाहि ॥
ताके अंतु न पाए जाहि ॥ एहु
अंतु न जाणै कोइ॥ बहुता कहीऐ
बहुता होइ ॥ वडा साहिबु ऊचा
थाउ॥ऊचे उपरि ऊचा नाउ॥ एवडु

ऊचा होवै कोइ ॥ तिसु ऊचे कउ जाणै सोइ ॥ जेवडु आपि जाणै आपि आपि॥ नानक नदरी करमी दाति॥२४॥बहुता करमु लिखिआ ना जाइ ॥ वडा दाता तिलु न तमाइ॥ केते मंगहि जोध अपार ॥ केतिआ गणत नही वीचारु॥ केते खपि तुटहि वेकार ॥ केते लै लै मुकरु पाहि ॥ केते मूरख खाही खाहि॥केतिआ दूख भूख सद मार॥ एहि भि दाति तेरी दातार॥ बंदि खलासी भाणै होइ ॥ होरु आखि न सकै कोइ ॥ जे को खाइकु

आखणि पाइ॥ओहु जाणै जेतीआ मुहि खाइ॥आपे जाणै आपे देइ ॥ आखहि सि भि केई केइ॥ जिसनो बखसे सिफति सालाह ॥ नानक पातिसाही पातिसाहु॥२५॥अमुल गुण अमुल वापार॥अमुल वापारीए अमुलभंडार॥अमुल आवहि अमुल लैजाहि॥अमुलभाइ अमुलासमाहि ॥ अमुलु धरमु अमुलु दीबाणु ॥ अमुलु तुलु अमुलु परवाणु॥ अमुलु बखसीस अमुलु नीसाणु ॥ अमुलु करमु अमुलु फुरमाणु ॥ अमुलो अमुलु आखिआ न जाइ॥ आखि

आखि रहे लिवलाइ ॥ आखहि वेद पाठ पुराण ॥ आखहि पड़े करहि वखिआण ॥ आखहि बरमे आखहि इंद ॥ आखहि गोपी तै गोविंद ॥ आखहि ईसर आखहि सिध ॥ आखहि केते कीते बुध ॥ आखहि दानव आखहि देव ॥ आखहि सुरि नर मुनि जन सेव ॥ केते आखहि आखणि पाहि ॥ केते कहि कहि उठि उठि जाहि ॥ एते कीते होरि करेहि ता आखि न सकहि केई केइ ॥ जेवडु भावै तेवडु होइ ॥ नानक जाणै सचा सोइ ॥ जे को आखै बोलु

विगाड़॥ता लिखीऐ सिरि गावारु
गावारु॥२६॥सोदरुकेहासोघरुकेहा
जितु बहि सरब समाले॥वाजेनाद
अनेक असंखा केते वावण हारे॥
केते राग परी सिउ कहीअनि केते
गावण हारे॥ गावहि तुहनो पउणु
पाणी वैसंतरु गावै राजा धरमु
दुआरे॥ गावहि चितु गुपतु लिखि
जाणहिलिखि लिखिधरमुवीचारे॥
गावहि ईसरु बरमा देवी सोहनि
सदा सवारे॥ गावहि इंद इदासणि
बैठे देवतिआ दरि नाले॥ गावहि
सिध समाधी अंदरि गावनि साध

विचारे॥गावनि जतीसती संतोखी गावहि वीर करारे॥गावनि पंडति पड़नि रखीसर जुगुजुगु वेदानाले॥ गावहिमोहणीत्रामनुमोहनिसुरगा मछ पइत्राले॥ गावनि रतन उपाए तेरे अठसठि तीरथ नाले॥ गावहि जोध महाबल सूरा गावहि खाणी चारे ॥ गावहि खंड मंडल वरभंडा करि करि रखे धारे ॥ सेई तुधुनो गावहि जो तुधु भावनि रते तेरे भगत रसाले ॥ होरि केते गावनि से मै चिति ना आवनि नानकु किआ वीचारे ॥ सोई सोई सदा

सचु साहिब साचा साची नाई॥ है भी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई॥ रंगी रंगी भाती करि करि जिनसी माइआ जिनि उपाई॥ करि करि वेखै कीता आपणा जिव तिस दी वडिआई॥ जो तिसु भावै सोई करसी हुकमु न करणा जाई॥ सो पातिसाहु साहा पातिसाहिबु नानक रहणु रजाई ॥२७॥ मुंदा संतोखु सरमु पतु झोली धिआनकी करहि बिभूति॥ खिंथा कालु कुआरी काइआ जुगति डंडा परतीति॥ आई पंथी सगल जमाती मनि जीतै जगजीतु॥

आदेसु तिसै आदेसु॥आदि अनीलु
अनादि अनाहति जुगु जुगु एको
वेसु॥२८॥ भुगति गिआनु दइआ
भंडारणि घटि घटि वाजहि नाद॥
आपि नाथु नाथी सभ जाकीरिधि
सिधि अवरा साद॥संजोगु विजोगु
दुइ कार चलावहि लेखे आवहि
भाग॥ आदेसु तिसै आदेसु॥ आदि
अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु
एको वेसु॥२६॥एका माई जुगति
विआई तिनि चेले परवाणु॥ इकु
संसारीइकुभंडारीइकुलाएदीबाणु॥
जिवतिसुभावैतिवै चलावैजिवहोवै

फुरमाणु ॥ ओहु वेखै ओना नदरि न आवै बहुता एहु विडाणु॥आदेसु तिसैआदेसु॥आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगुजुगु एकोवेसु॥३०॥ आसणु लोइलोइ भंडार॥जो किछु पाइआ सु एकावार॥करि करिवेखै सिरजणहारु॥नानकसचेकी साची कार॥आदेसु तिसै आदेसु ॥ आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगुजुगु एकोवेसु।३१।इकदूजीभौ लखहोहि लख होवहि लखवीस ॥ लखु लखु गेड़ा आखीअहि एकु नामुजगदीस ॥ एतु राहि पति पवड़ीआ चड़ीऐ

होइ इकीस॥ सुणि गला आकास
की कीटा आई रीस॥नानक नदरी
पाईऐ कूड़ी कूड़ै ठीस ॥ ३२ ॥
आखणिजोरुचुपै नह जोरु॥ जोरु
न मंगणि देणि न जोरु॥ जोरु न
जीवणि मरणि नह जोरु॥जोरु न
राजिमालिमनिसोरु॥जोरुनसुरती
गिआनिवीचारि।जोरुनजुगतीछुटै
संसारु॥जिसुहथिजोरुकरिवेखैसोइ
॥नानक उतमुनीचु न कोइ॥ ३३॥
राती रुती थिती वार॥पवणपाणी
अगनी पाताल॥तिसु विचि धरती
थापिरखीधरमसाल।तिसुविचिजीअ

जुगतिके रंग॥ तिनके नाम अनेक अनंत॥करमी करमी होइ वीचारु॥ सचा आपि सचा दरबारु ॥ तिथै सोहनि पंचपरवाणु॥ नदरी करमि पवै नीसाणु॥कच पकाई ओथै पाइ॥ नानक गइआ जापै जाइ ॥३४॥

धरमखंडकाएहो धरमु॥गिआनखंड का आखहु करमु॥केते पवन पाणी वैसंतर केते कान्ह महेस॥केते बरमे घाड़ति घड़ीअहि रूप रंगके वेस॥ केतीआ करम भूमी मेर केते केते धू उपदेस ॥ केते इंद चंद सूर केते केते मंडल देस ॥ केते सिध

बुध नाथ केते केते देवी वेस ॥
केते देव दानव मुनि केते केते रतन
समुंद ॥ केतीआ खाणी केतीआ
बाणी केते पात नरिंद ॥ केतीआ
सुरती सेवक केते नानक अंतु न
अंतु॥३५॥गिआन खंड महि गिआनु
परचंडु ॥ तिथै नादु बिनोद कोड
अनंदु ॥ सरम खंड की बाणी
रूपु ॥ तिथै घाड़ति घड़ीऐ बहुतु
अनूपु ॥ ताकीआ गला कथीआ
न जाहि॥जेको कहै पिछै पछुताइ॥
तिथै घड़ीऐ सुरति मति मनि बुधि
॥ तिथै घड़ीऐ सुरा सिधा की

सुधि ॥ ३६ ॥ करम खंड की बाणी जोरु ॥ तिथै होरु न कोई होरु ॥ तिथै जोध महाबल सूर ॥ तिनमहि राम रहिआ भरपूर॥तिथै सीतो सीता महिमा माहि॥ ताके रूप न कथनेजाहि॥न ओहिमरहि न ठागे जाहि ॥ जिनकै राम वसै मन माहि॥ तिथै भगत वसहि के लोअ॥ करहि अनंदु सचा मनि सोइ ॥ सच खंडि वसै निरंकारु॥ करिकरि वेखै नदरि निहाल॥तिथै खंड मंडल वरभंड ॥ जे को कथै त अंत न अंत॥ तिथै लोअ लोअ

आकार ॥ जिव जिव हुकमु तिवै
तिनकार॥वेखै विगसैकरि वीचारु॥
नानक कथना करड़ा सारु॥३७॥
जतु पाहारा धीरजु सुनिश्रारु ॥
अहरणि मति वेदु हथीआरु॥ भउ
खला अगनि तपताउ ॥ भांडा
भाउ अमृतु तितु ढालि ॥ घड़ीऐ
सबदु सची टकसाल ॥ जिन कउ
नदरि करमु तिनकार ॥ नानक
नदरी नदरि निहाल ॥ ३८ ॥

सलोकु ॥

पवणु गुरू पाणी पिता माता
धरति महतु ॥ दिवसु राति दुइ

दाई दाइआ खेलै सगल जगतु ॥ चंगिआईआ बुरिआईआ वाचै धरमु हदूरि ॥ करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि ॥ जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि ॥ नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि ॥ १ ॥

❀—❀

माझ महला ५ चउपदे घरु १

मेरा मनु लोचै गुरदरसन ताई ॥ बिलप करे चात्रिक की निआई ॥ त्रिखा न उतरै सांति न आवै बिनु दरसन संत पिआरे जीउ ॥ १ ॥ हउ घोली हउ घोलि घुमाई गुर दरसन संत पिआरे जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरा मुखु सुहावा जीउ सहज धुनि बाणी ॥ चिरु होआ देखे सारिंग पाणी ॥ धंनु सु देसु जहा तूं वसिआ मेरे

सजरण मीत मुरारे जीउ ॥२॥ हउ घोली हउ घोलि घुमाई गुर सजरण मीत मुरारे जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इक घड़ी न मिलते ता कलिजुगु होता॥हुरिणकदि मिलीऐ प्रिअ तुधु भगवंता ॥ मोहि रैरिण न विहावै नीद न आवै बिनु देखे गुर दरबारे जीउ ॥ ३ ॥ हउ घोली जीउ घोलि घुमाई तिस सचे गुर दरबारे जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भागु होआ गुरि संतु मिलाइआ ॥ प्रभु अबिनासी घर महि पाइआ ॥ सेव करी पलु

चसा न विछुड़ा जन नानक दास तुमारे जीउ॥४॥ हउ घोली जीउ घोलि घुमाई जन नानक दास तुमारे जीउ ॥ रहाउ॥ १ ॥ ८ ॥

धनासरी महला १ घरु १ चउपदे

१ ओ सतिनामु करता पुरखु निरभउ
निरवैरु अकाल मूरति अजूनी
सैभं गुरप्रसादि ॥

जीउ डरतु है आपणा कै सिउ करी पुकार ॥ दूख विसारणु सेविआ सदा सदा दातारु ॥ १ ॥ साहिबु मेरा नीत नवा सदा सदा दातारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनदिनु

साहिबु सेवीऐ अंति छडाए सोइ ॥ सुणि सुणि मेरी कामणी पारि उतारा होइ ॥ २ ॥ दइआल तेरै नामि तरा सद कुरबाणै जाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सरबं साचा एकु है दूजा नाही कोइ ॥ ताकी सेवा सो करे जाकउ नदरि करेइ ॥३॥ तुधु बाझु पिआरे केव रहा ॥ सा वडिआई देहि जितु नामि तेरे लागि रहां ॥ दूजा नाही कोइ जिसु आगै पिआरे जाइ कहा ॥ १॥ रहाउ ॥ सेवी साहिबु आपणा अवरु न जाचंउ कोइ ॥ नानकु

ताका दासु है बिंद बिंद चुख चुख होइ ॥ ४ ॥ साहिब तेरे नाम विटहु बिंद बिंद चुख चुख होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ४ ॥ १ ॥

तिलंग महला १ घर ३

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

इहु तनु माइआ पाहिआ पिआरे लीतड़ा लबि रंगाए ॥ मेरै कंत न भावै चोलड़ा पिआरे किउ धन सेजै जाए ॥ १ ॥ हंउ कुरबानै जाउ मिहरवाना हंउ कुरबानै जाउ ॥ हंउ कुरबानै

जाउ तिना कै लैनि जो तेरा नाउ ॥ लैनि जो तेरा नाउ तिना कै हंउ सद कुरबानै जाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काइआ रंङणि जे थीऐ पिआरे पाईऐ नाउ मजीठ ॥ रंङण वाला जे रंङै साहिबु ऐसा रंगु न डीठ ॥ २ ॥ जिनके चोले रतड़े पिआरे कंतु तिना कै पासि॥ धूड़ि तिना की जे मिलै जी कहु नानक की अरदासि ॥ ३ ॥ आपे साजे आपे रंगे आपे नदरि करेइ ॥ नानक कामणि कंतै भावै आपे ही रावेइ ॥ ४ ॥ १ ॥ ३ ॥

तिलंग म० १ ॥

इआनड़ीए मानड़ा काइ करेहि ॥ आपनड़ै घरि हरि रंगो की न माणेहि ॥ सहु नेड़ै धनु कंमलीए बाहरु किआ ढूढेहि ॥ भै कीआ देहि सलाईआ नैणी भाव का करि सीगारो॥ ता सोहागणि जाणीऐ लागी जा सहु धरे पिआरो॥१॥इआणी बाली किआ करे जा धन कंत न भावै ॥ करण पलाह करे बहुतेरे सा धन महलु न पावै ॥ विणु करमा किछु पाईऐ नाही जे बहुतेरा धावै॥ लब लोभ

अहंकार की माती माइआ माहि समाणी ॥ इनी बाती सहु पाईऐ नाही भई कामणि इआणी ॥२॥ जाइ पुछहु सोहागणी वा है किनी बाती सहु पाईऐ॥जोकिछु करे सो भला करि मानीऐ हिकमति हुकमु चुकाईऐ ॥ जाकै प्रेमि पदारथु पाईऐ तउ चरणी चितु लाईऐ ॥ सहु कहै सो कीजै तनु मनो दीजै ऐसा परमलु लाईऐ ॥ एव कहहि सोहागणी भैणो इनी बाती सहु पाईऐ ॥ ३ ॥ आपु गवाईऐ ता सहु पाईऐ अउरु

कैसी चतुराई ॥ सहु नदरि करि देखै सो दिनु लेखै कामणि नउ निधि पाई ॥ आपणे कंत पिआरी सा सोहागणि नानक सा सभराई ॥ऐसे रंगि राती सहज की माती अहिनिसि भाइ समाणी ॥ सुंदरि साइ सरूप बिचखणि कहीऐ सा सिआणी ॥ ४ ॥ २ ॥ ४ ॥

सूही महला १ ॥

कउण तराजी कवणु तुला तेरा कवणु सराफु बुलावा॥ कउणु गुरू कै पहि दीखिआ लेवा कै पहि मुलु करावा ॥ १ ॥ मेरे लाल जीउ

तेरा अंतु न जाणा॥ तूं जल थलि महीअलि भरिपुरि लीणा तूं आपे सरब समाणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनु ताराजी चितु तुला तेरी सेव सराफु कमावा ॥ घट ही भीतरि सोसहु तोलीइनबिधि चितु रहावा ॥ २ ॥ आपे कंडा तोलु तराजी आपे तोलणहारा ॥ आपे देखै आपे बूझै आपे है वणजारा ॥३॥ अंधुला नीच जाति परदेसी खिनु आवै तिलु जावै ॥ ताकी संगति नानकु रहदा किउ करि मूड़ा पावै ॥ ४ ॥ २ ॥ ६ ॥

१ ओं सतिनामु करता पुरखु
निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी
सैभं गुर प्रसादि ॥

राग बिलावलु महला १ ॥
चउपदे घरु १ ॥

तू सुलतानु कहा हउ मीआ तेरी कवन वडाई ॥ जो तू देहि सु कहा सुआमी मै मूरख कहणु न जाई ॥ १ ॥ तेरे गुण गावा देहि बुझाई ॥ जैसे सच महि रहउ रजाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो किछु होआ सभु किछु तुझ ते तेरी सभ असनाई ॥ तेरा अंतु न जाणा

मेरे साहिब मै अंधुले किआ चतु-
राई ॥२॥ किआ हउ कथी कथे
कथि देखामै अकथु न कथना जाई
॥ जो तुधु भावै सोई आखा तिलु
तेरी वडिआई॥३॥ एते कूकर हउ
बेगाना भउका इसु तन ताई ॥
भगति हीणु नानकु जे होइगा
ता खसमै नाउ न जाई ॥४॥१॥

बिलावलु महला १ ॥

मनु मंदरु तनु वेस कलंदरु घट ही
तीरथि नावा॥एकु सबदु मेरै प्रानि
बसतु है बाहुड़ि जनमि न आवा
॥१॥ मनु बेधिआ दइआल सेती

मेरी माई ॥ कउणु जाणै पीर
पराई ॥ हम नाही चित पराई
॥ १ ॥ रहाउ ॥ अगम अगोचर
अलख अपारा चिंता करहु हमारी
॥ जलि थलि महीअलि भरिपुरि
लीणा घटि घटि जोति तुम्हारी॥
सिख मति सभ बुधि तुम्हारी
मंदरि छावा तेरे ॥ तुझ बिनु
अवरु न जाणा मेरे साहिबा गुण
गावा नित तेरे ॥ ३ ॥ जीअ जंत
सभि सरणि तुम्हारी सरबचिततुधु
पासे ॥ जो तुधु भावै सोई चंगा
इक नानक की अरदासे ॥४॥२॥

❀ अरदास ❀

१ ओं श्री वाहिगुरू जी की फतहि ॥

श्री भगौती जी सहाइ ॥

वार श्री भगौती जी की पातशाही १० ॥

प्रथम भगौती सिमरि कै गुर नानक लईं धिआइ ॥ फिर अंगद गुर ते अमरदासु राम दासै होईं सहाइ ॥ अरजन हरगोबिंद नो सिमरो श्री हरिराइ ॥ श्री हरि कृशन धिआईऐ जिस डिठे सभि दुखि जाइ ॥ तेग बहादर सिमरीऐ घर नउ निधि आवै धाइ। सभ थाईं होइ सहाइ। दसवां पातशाह श्री गुरू गोबिंद सिह महाराज जी ! सब थांई होइ सहाइ।दसों सत्गुरूओं के ज्योति स्वरूप श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी के पाठ व दर्शन का ध्यान धर कर बोलो जी वाहिगुरू!पांच प्यारों, चार गुरू कुमारों, चालीस मुक्तों,

हठी-जपी-तपियों, जिन्हों ने नाम जपा, बांट खाया, देग चलाई, तेग चलाई, देख कर अडीठ किया, उन प्रेमी सत्य वादियो की पवित्र कमाई का ध्यान धर कर खालसा जी ! बोलो जी वाहिगुरू !

जिन सिह सिहनियों ने धरम पर बलि-दान दिये अंग अंग कटवाए, सिर की खोपरियाँ उतरवाईं, चर्खियो पर चडाए गये, करवत्त से तन चिरवाए, गुरदवारों के सुधार और पवित्रता के निमित्त शहीद हुए, धरम नही छोडा, सिख धरम का केशो तथा प्राणों सहित पालिन किया। उनकी कृत्य कमाई का ध्यान धर कर खालसा जी ! बोलो जी वाहिगुरू।

चारो तखतो, समह गुरदवारों का ध्यान धर कर बोलो जी वाहिगुरू !

प्रथमे सर्व खालसा जी की अरदास है जी

सर्व खालसा जी को वाहिगुरू, वाहिगुरू, वाहिगुरू चित आवै, चित में आने से सर्व सुख हो, जहां जहाँ खालसा जी साहिब, तहां तहां रक्षा रियात, देग तेग फतह; बिरद की लाज पन्थ की जीत, श्री साहिब जी सहाय, खालसा जी का बोल बाला हो, बोलो जी वाहिगुरू !!!

सिखो का मन नम्र, मति ऊंची मति का रक्षक स्वयं वाहिगुरू। हे नि:मानो के सम्मान, नि:त्राणो के त्राण, नि:ओटो की ओट, निरासरयो के आसरे, सच्चे पिता वाहिगुरू आप की सेवा में.............. की प्रार्थना है।

अक्षर लग मात्र भूल चूक माफ करना सर्व के कार्य सिद्ध हों उन प्रेमियो का मिलाप हो जिनके मिलने से चित में तेरे नाम का निवास हो।

नानक नाम चढ़दी कला ॥
तेरे भाणे सर्वत का भला ॥

❀—❀

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

❀ जापु साहिब ❀

❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

श्री मुखवाक पातिसाही १० ॥

छपै छंद ॥ त्वप्रसादि ॥

चक्र चिहन अरु बरन जाति अरु पाति नहिन जिह ॥ रूप रंग अरु रेखभेख कोऊ कहि न सकत किह ॥ अचल मूरति अनभउ प्रकास अमितोजि कहिज्जै ॥ कोटि इद्र इंद्राण साहु साहाणि गणिज्जै ॥ त्रिभवण महीप सुर नर असुर नेत नेत बन तृण कहत ॥ तव

सरब नाम कथै कवन करम नाम बरनत सुमत ॥ १ ॥

भुभंग प्रयात छंद ॥

नमसत्वं अकाले॥नमसत्वं क्रिपाले ॥ नमसतं अरूपे ॥ नमसतं अनूपे ॥ २ ॥ नमसतं अभेखे ॥ नमसतं अलेखे ॥ नमसतं अकाए॥ नमसतं अजाए॥ ३ ॥ नमसतं अगंजे॥नमसतं अभंजे ॥ नमसतं अनामे॥ नमसतं अठामे ॥ ४ ॥ नमसतं अकरमं ॥ नमसतं अधरमं॥ नमसतं अनामं ॥ नमसतं अधामं ॥ ५ ॥ नमसतं अजीते॥नमसतं अभीते ॥ नमसतं

अबाहे ॥ नमसतं अदाहे ॥ ६ ॥
नमसतं अनीले ॥ नमसतं अनादे
॥ नमसतं अछेदे ॥ नमसतं
अगाधे ॥ ७ ॥ नमसतं अगंजे ॥
नमसतं अभंजे ॥ नमसतं उदारे ॥
नमसतं अपारे ॥८॥ नमसतं सुएकै
॥ नमसतं अनेकै॥नमसतं अभूते॥
नमसतं अजूपे ॥ ९ ॥ नमसतं
निरकरमे ॥ नमसतं निरभरमे ॥
नमसतं निरदेसे ॥नमसतं निरभेसे
॥१०॥ नमसतं निरनामे॥ नमसतं
निरकामे ॥ नमसतं निरधाते ॥
नमसतं निरघाते ॥ ११ ॥ नमसतं

निरधूते॥ नमसतं अभूते॥ नमसतं अलोके ॥ नमसतं असोके ॥१२॥ नमसतं निरतापे॥ नमसतं अथापे॥ नमसतं त्रिमाने ॥ नमसतं निधाने ॥१३॥ नमसतं अगाहे ॥ नमसतं अबाहे ॥ नमसतं त्रिबरगे ॥ नमसतं असरगे ॥ १४ ॥ नमसतं प्रभोगे ॥ नमसतं सुजोगे॥ नमसतं अरंगे ॥ नमसतं अभंगे ॥ १५॥ नमसतं अगंमे ॥ नमसतसतु रंमे ॥ नमसतं जलासरे ॥ नमसतं निरासरे ॥ १६ ॥ नमसतं अजाते ॥ नमसतं अपाते ॥

नमसतं अमजबे ॥ नमसतसतु
अजबे ॥ १७ ॥ अदेसं अदेसे ॥
नमसतं अभेसे॥ नमसतं निरधामे॥
नमसतं निरबामे ॥ १८ ॥ नमो
सरब काले॥ नमो सरब दिआले॥
नमो सरब रूपे॥ नमो सरब भूपे ॥
१९॥नमो सरब खापे॥ नमो सरब
थापे॥नमो सरब काले॥ नमो सरब
पाले ॥ २० ॥ नमसतसतु देवे ॥
नमसतं अभेवे ॥ नमसतं अजनमे॥
नमसतं सुबनमे ॥ २१ ॥ नमो
सरब गउने ॥ नमो सरब भउने ॥
नमोसरबरंगे॥नमोसरबभंगे॥२२॥

नमो काल काले ॥ नमसतसतु
दिआले॥नमसतं अबरने ॥ नमसतं
अमरने ॥२३॥ नमसतं जराकं॥
नमसतं क्रितारं ॥ नमो सरब
धंधे ॥ नमो सत अबंधे ॥ २४ ॥
नमसतं निरसाके॥ नमसतं निरबाके
॥नमसतं रहीमे ॥नमसतं करीमे ॥
२५ ॥ नमसतं अनंते ॥ नमसतं
महंते ॥ नमसतसतु रागे॥ नमसतं
सुहागे ॥२६॥ नमो सरब सोखं
नमोसरब पोखं॥नमो सरबकरता॥
नमो सरब हरता॥२७॥नमो जोग
जोगे॥नमो भोग भोगे॥नमो सरब

दिआले ॥ नमो सरब पाले॥२८॥

चाचरी छंद त्व प्रसादि ॥

अरूप हैं ॥ अनूप हैं ॥ अजू
हैं ॥ अभू हैं ॥२९॥ अलेख हैं ॥
अभेख हैं ॥ अनाम हैं ॥ अकाम
हैं ॥३०॥ अधे हैं ॥ अभे हैं ॥
अजीत हैं ॥ अभीत हैं ॥ ३१ ॥
त्रिमान हैं ॥ निधान हैं॥ त्रिबरग
हैं ॥ असरग हैं ॥ ३२ ॥ अनील
हैं ॥ अनाद हैं॥ अजे हैं॥ अजादि
हैं॥३३॥अजनम हैं॥ अबरन हैं ॥
अभूत हैं॥ अभरन हैं ॥ ३४ ॥
अगंज हैं॥अभंज हैं॥अझूझ हैं ॥

अभंझ हैं ॥ ३५ ॥ अभीक हैं ॥ रफीक हैं॥ अधंध हैं॥ अबंध हैं॥ ३६॥ निरबूझ हैं ॥ असूझ हैं ॥ अकाल हैं ॥ अजाल हैं ॥ ३७ ॥ अलाह हैं ॥ अजाह हैं ॥ अनंत हैं ॥ महंत हैं ॥ ३८ ॥ अलीक हैं ॥ निरसरीक हैं॥निरलंभ हैं॥ असंभ हैं ॥ ३९ ॥ अगंम हैं ॥ अजंम हैं॥अभूत हैं ॥ अछूत हैं ॥ ४०॥अलोक हैं॥असोक हैं॥अकरम हैं ॥ अभरम हैं ॥४१॥ अजीत हैं ॥ अभीत हैं ॥ अबाह हैं ॥ अगाह हैं ॥ ४२ ॥ अमान हैं ॥

निधान हैं ॥ अनेक हैं ॥ फिरि एक हैं ॥ ४३ ॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

नमो सरब माने ॥ समसती निधाने ॥ नमो देव देवे ॥ अभेखी अभेवे ॥४४॥ नमो काल काले ॥ नमो सरब पाले ॥ नमो सरब गउणे ॥ नमो सरब भउणे ॥४५॥ अनंगी अनाथे ॥ निरसंगी प्रमाथे ॥ नमो भान भाने ॥ नमो मान माने॥४६॥नमो चंद्र चंद्रे ॥ नमो भान भाने॥ नमो गीत गीते॥नमो तान ताने ॥ ४७ ॥ नमो नृत

नृत्ते ॥ नमो नाद नादे॥ नमो पान
पाने ॥ नमो बाद वादे ॥ ४८ ॥
अनंगी अनामे ॥ समसती सरूपे॥
प्रभंगी प्रमाथे॥ समसती बिधूते ॥
४६ ॥कलंकं विनाने कलंकीसरूपे
॥ नमो राज राजेस्वरं परमरूपे ॥
५० ॥ नमो जोग जोगेस्वरं परम
सिद्धे ॥ नमो राज राजेस्वरं परम
बृद्धे ॥५१॥ नमो सस्त्र पाणे ॥
नमो अस्त्र माणे ॥ नमो परम
गिग्राता॥नमो लोक माता॥५२॥
अभेखी अभरमी अभोगी अभुगते
॥नमो जोगजोगेस्वरं परमजुगते॥

५३ ॥ नमो नित्त नाराइणे क्रूर करमे ॥ नमो प्रेम अप्रेत देवे सुधरमे ॥५४॥ नमो रोग हरता॥ नमो राग रूपे ॥ नमो साह साहं नमो भूप भूपे ॥ ५५ ॥ नमो दान दाने ॥ नमो मान माने ॥ नमो रोग रोगे॥नमसतं इसनाने॥ ५६ ॥ नमो मंत्र मंत्रं॥ नमो जंत्र जंत्रं ॥ नमो इसट इसटे ॥ नमो तंत्र तंत्रं ॥ ५७ ॥ सदा सच्चदा नंद सरबं प्रणासी ॥ अनूपे अरूपे समसतुल निवासी ॥ ५८ ॥ सदा सिद्धदा बुद्धदा बृद्ध करता ॥

अधो उरध अरधं अगं अोघ हरता ॥५९॥ परं परम परमेस्वरं प्रोछ पालं ॥ सदा सरबदा सिद्ध दाता दियालं ॥ ६० ॥ अछेदी अभेदी अनामं अकामं ॥ समसतो पराजी समसतसतु धामं ॥ ६१ ॥

तेरा जोरु ॥ चाचरी छंद ॥

जले हैं ॥ थले हैं ॥ अभीत हैं ॥ अभे हैं ॥ ६२ ॥ प्रभू हैं ॥ अजू हैं ॥ अदेस हैं ॥ अभेस हैं ॥ ६३ ॥

भुभंग प्रयात छंद ॥

अगाधे अबाधे ॥ अनंदी सरूपे

॥ नमो सरब माने ॥ समसती निधाने॥६४॥नमसत्वं निरनाथे ॥ नमसत्वं प्रमाथे॥नमसत्वं अगंजे ॥ नमसत्वं अभंजे ॥ ६५ ॥ नमसत्वं अकाले ॥ नमसत्वं अपाले ॥ नमो सरब देसे॥नमो सरब भेसे ॥६६॥ नमो राज राजे ॥ नमो साज साजे ॥नमोशाह शाहे॥ नमो माह माहे॥ ६७ ॥ नमो गीत गीते ॥ नमो प्रीत प्रीते॥ नमो रोख रोखे॥नमो सोख सोखे॥६८॥ नमो सरब रोगे ॥ नमो सरब भोगे ॥ नमो सरब जीतं ॥ नमो सरब भीतं ॥६९॥

नमो सरब गिम्रानं ॥ नमो परम तानं॥नमो सरब मंत्रं ॥ नमोसरब जंत्रं ॥ ७०॥ नमो सरब द्रस्सं ॥ नमो सरब क्रस्सं॥नमो सरब रंगे॥ त्रिभंगी अनंगे ॥७१॥ नमो जीव जीवं॥नमो बीज बीजे॥ अखिज्जे अभिज्जे ॥ समस्तं प्रसिज्जे ॥ ७२ ॥ क्रपालं सरूपे कुकरमं प्रणासी ॥ सदा सरबदा रिद्धि सिद्धं निवासी ॥७३॥

चरपट छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

अम्रित करमे ॥ अब्रित धरमे ॥ अखल्लजोगे॥अचल्लभोगे ॥७४॥

अचल्ल राजे ॥ अटल्ल साजे ॥ अखल्ल धरमं ॥ अलक्ख करमं ७५ ॥ सरबं दाता ॥ सरबं गिआता ॥ सरबं भाने ॥ सरबं माने ॥७६॥ सरबं प्राणं ॥ सरबं त्राणं॥सरबं भुगता॥ सरबं जुगता ॥७७॥ सरबं देवं ॥ सरबं भेवं ॥ सरबं काले ॥ सरबं पाले ॥७८॥

रूआल छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

आदि रूप अनादि मूरति अजोनि पुरख अपार ॥ सरब मान त्रिमान देव अभेव आदि उदार ॥ सरब पालक सरब

घालक सरब को पुनि काल ॥ जत्र तत्र बिराजही अवधूत रूप रसाल ॥ ७६ ॥ नाम ठाम न जाति जाकर रूप रंग न रेख ॥ आदि पुरख उदार मूरति अजोनि आदि असेख ॥ देस और न भेस जाकर रूप रेख न राग ॥ जत्र तत्र दिसा विसा हुइ फैलिओ अनुराग ॥ ८० ॥ नाम काम बिहीन पेखत धाम हूं नहि जाहि ॥ सरब मान सरबत्र मान सदैव मानत ताहि ॥ एक मूरति अनेक दरसन कीन रूप अनेक ॥

खेल खेल अखेल खेलन अंत
को फिरि एक ॥८१॥ देव भेव न
जानही जिह बेद और कतेब ॥
रूप रंग न जाति पाति सु जानई
किंह जेब ॥ तात मात न जात
जाकर जनम मरन बिहीन ॥
चक्र बक्र फिरै चतुर चक्र मानई
पुर तीन ॥८२॥ लोक चौदह के
बिखै जग जापही जिह जाप ॥
आदि देव अनादि मूरति थापिओ
सबै जिह थापि ॥ परमरूप पुनीत
मूरति पूरन पुरख अपार ॥
सरब बिस्व रचिओ सुयंभव गड़न

भंजनहार ॥ ८३ ॥ काल हीन कला संजुगति अकाल पुरख अदेस ॥ धरम धाम सु भरम रहित अभूत अलख अभेस॥ अंग राग न रंग जाकहि जाति पाति न नाम॥ गरब गंजन दुसट भंजन मुकति दाइक काम ॥ ८४ ॥ आप रूप अमीक अन उसतति एक पुरख अवधूत ॥ गरब गंजन सरब भंजन आदि रूप असूत ॥ अंग हीन अभंग अनातम एक पुरख अपार ॥ सरब लाइक सरब घाइक सरब को प्रतिपार

॥ ८५ ॥ सरब गंता सरब हंता सरब ते अनभेख ॥ सरब सासत्र न जानही जिहरूप रंगु अरु रेख॥ परमबेद पुरान जाकहि नेत भाखत नित्त ॥ कोटि सिमृत पुरान सास्त्र न आवई वहु चित्त ॥ ८६ ॥

मधुभार छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

गुन गन उदार ॥ महिमा अपार ॥ आसन अभंग ॥ उपमा अनंग ॥ ८७ ॥ अनभउ प्रकास ॥ निसदिन अनास ॥ आजानबाह ॥ साहान साह ॥ ८८ ॥ राजान राज॥भानान भान ॥ देवान देव॥

उपमा महान ॥ ८९ ॥ इन्द्रान इन्द्र॥बालान बाल॥ रंकान रंक॥ कालान काल॥९०॥ अनभूत अंग आभा अभंग॥गति मिति अपार ॥ गुन गन उदार ॥ ९१ ॥ मुनि गन प्रनाम ॥ निरभै निकाम ॥ अति दुति प्रचंड ॥ मिति गति अखंड ॥९२॥ आलिस्य करम ॥ आदृस्य धरम॥ सरबा भरणाढय ॥ अनडंड बाढय ॥ ९३ ॥

चाचरी छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

गुबिंदे ॥ मुकंदे ॥ उदारे ॥ अपारे ॥९४॥ हरीअं॥ करीअं॥

निरनामे ॥ अकामे ॥ ९५ ॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

चतर चक्र करता ॥ चतर चक्र हरता ॥ चतर चक्र दाने ॥ चतर चक्र जाने ॥ ९६ ॥ चतर चक्र वरती ॥ चतर चक्र भरती ॥ चतर चक्र पाले ॥ चतर चक्र काले ॥ ९७ ॥ चतर चक्र पासे॥चतर चक्र वासे ॥ चतर चक्र मानयै ॥ चतर चक्र दानयै ॥९८॥

चाचरी छंद ॥

न सत्रै ॥ न मित्रै ॥ न भरमं ॥ न भित्रै ॥ ९९ ॥ न करमं ॥ न

काए ॥ अजनमं अजाए ॥१००॥
न चित्रै ॥ न मित्रै ॥ परे है पवित्रै
॥ १०१ ॥ पृथीसै ॥ अदीसै ॥
अद्रसै ॥ अक्रसै ॥ १०२ ॥

भगवती छंद ॥ त्व प्रसादि कथते ॥

कि आछिज्ज देसै॥ कि आभिज्ज
भेसै ॥ कि आगंज करमै ॥ कि
आभंज भरमै ॥ १०३ ॥ कि
आभिज्जलोकै॥किआदित्त सोकै॥
कि अवधूत बरनै ॥ कि बिभूत
करनै ॥१०४॥कि राजं प्रभा हैं॥
कि धरमं धुजा हैं ॥ कि आसोक
बरनै ॥ कि सरबा अभरनै ॥

१०५ ॥ कि जगतं क्रिती हैं ॥
कि छत्रं छत्री हैं॥कि ब्रहमं सरूपै
॥ कि अनभउ अनूपै ॥ १०६ ॥
कि आदि अदेव हैं ॥ कि आपि
अभेव हैं ॥ कि चित्रं बिहीनै ॥
कि एकै अधीनै ॥ १०७ ॥ कि
रोज़ी रज़ाकै ॥ रहीमै रिहाकै ॥
कि पाक बिऐब हैं ॥ कि गैबुल
ग़ैब हैं ॥ १०८ ॥ कि अफ़्अल
गुनाह हैं ॥ कि शाहान शाह हैं ॥
कि कारन कुनिंद हैं ॥ कि रोज़ी
दिहंद हैं ॥ १०९ ॥ कि राज़क
रहीम हैं ॥ कि करमं करीम

हैं ॥ कि सरबं कली हैं ॥ कि सरबं दली हैं ॥ ११० ॥ कि सरबत्र मानियै ॥ कि सरबत्र दानियै ॥ कि सरबत्र गउनै ॥ कि सरबत्र भउनै ॥ १११ ॥ कि सरबत्र देसै ॥ कि सरबत्र भेसै ॥ कि सरबत्र राजै ॥ कि सरबत्र साजै ॥११२॥ कि सरबत्र दीनै॥ कि सरबत्र लीनै ॥ कि सरबत्र जाहो॥कि सरबत्र भाहो ॥११३॥ कि सरबत्र देसै ॥ कि सरबत्र भेसै ॥ कि सरबत्र कालै ॥ कि सरबत्र पालै ॥११४॥ कि सरबत्र

हंता ॥ कि सरबत्र गंता ॥ कि सरबत्र भेखी ॥ कि सरबत्र पेखी ॥११५॥ कि सरबत्र काजै ॥ कि सरबत्र राजै ॥ कि सरबत्र सोखै॥ कि सरबत्र पोखै ॥ ११६ ॥ कि सरबत्र त्राणै ॥ कि सरबत्र प्राणै॥ कि सरबत्र देसै ॥ कि सरबत्र भेसै ॥ ११७ ॥ कि सरबत्र मानियै ॥ सदैवं प्रधानियै ॥ कि सरबत्र जापियै ॥ कि सरबत्र थापियै ॥ ११८ ॥ कि सरबत्र भानै ॥ कि सरबत्र मानै ॥ कि सरबत्र इन्द्रै ॥ कि सरबत्र

चन्द्रै ॥ ११६ ॥ कि सरबं कलीमै ॥ कि परमं फ़हीमै ॥ कि आकल अलामै ॥ कि साहिब कलामै ॥१२०॥ कि हुसनल वजू हैं ॥ तमामुल रुजू हैं ॥ हमेसुल सलामै ॥ सलीखत मुदामै ॥ १२१ ॥ ग़नीमुल शिकसतै ॥ ग़रीबुल परसतै ॥ बिलंदुल मकानैं ॥ ज़मीमुल ज़मानैं ॥ १२२ ॥ तमीज़ुल तमामैं ॥ रुजूअल निधानैं ॥ हरीफुल अज़ीमैं ॥ रज़ाइक यकीनैं ॥ १२३ ॥ अनेकुल तरंग हैं ॥

अभेद हैं ॥ अभंग हैं ॥ अज़ीज़ुल निवाज़ हैं ॥ ग़नीमुल ख़िराज हैं ॥१२४॥ निरुकत सरूप हैं ॥ त्रिमुकति बिभूत हैं ॥ प्रभुगति प्रभा हैं ॥ सुजुगति सुधा हैं ॥ १२५॥ सदैवं सरूप हैं ॥ अभेदी अनूप हैं ॥ समसतो पराज हैं ॥ सदा सरब साज हैं ॥ १२६ ॥ समसतुल सलाम हैं ॥ सदैवल अकाम हैं ॥ निबाध सरूप हैं ॥ अगाध हैं ॥ अनूप हैं ॥ १२७ ॥ ओअं आदि रूपे ॥ अनादि सरूपै ॥ अनंगी अनामे ॥ त्रिभंगी

त्रिकामे ॥१२८॥ त्रिबरगं त्रिबाधे ॥ अगंजे अगाधे॥सुभं सरब भागे॥ सु सरबा अनुरागे ॥ १२६ ॥ त्रिभुगत सरूप हैं ॥ अछिज हैं अछूत हैं ॥ कि नरकं प्रणास हैं ॥ पृथीउल प्रवास हैं ॥ १३० ॥ निरुकति प्रभा हैं ॥ सदैवं सदा हैं ॥ बिभुगति सरूप हैं ॥ प्रजुगति अनूप हैं ॥ १३१ ॥ निरुकति सदा हैं ॥ बिभुगति प्रभा हैं ॥ अनउकति सरूप हैं ॥ प्रजुगति अनूप हैं ॥ १३२ ॥

चाचरी छंद ॥

अभंग हैं ॥ अनंग हैं ॥ अभेख हैं ॥ अलेख हैं ॥१३३॥ अभरम हैं ॥ अकरम हैं ॥ अनादि हैं ॥ जुगादि हैं ॥ १३४ ॥ अजै हैं ॥ अबै हैं ॥ अभूत हैं ॥ अधूत हैं॥ १३५॥ अनास हैं ॥ उदास हैं ॥ अधंध हैं ॥ अबंध हैं ॥ १३६ ॥ अभगत हैं ॥ बिरक्त हैं॥ अनास हैं ॥ प्रकास हैं ॥१३७॥ निचिंत हैं ॥ सुनित हैं ॥ अलिक्ख हैं ॥ अदिक्ख हैं ॥१३८॥ अलेख हैं ॥ अभेख हैं॥ अढाह हैं॥ अगाह हैं॥

१३६ ॥ असंभ हैं ॥ अगंम हैं ॥ अनील हैं ॥ अनादि हैं ॥१४०॥ अनित्त हैं ॥ सुनित्त हैं ॥ अजात हैं ॥ अजाद हैं ॥ १४१ ॥

चरपट छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

सरबं हंता ॥ सरबं गंता ॥ सरबं खिआता ॥ सरबं गिआता ॥ १४२ ॥ सरबं हरता ॥ सरबं करता ॥ सरबं प्राणं ॥ सरबं त्राणं ॥ १४३ ॥ सरबं करमं ॥ सरबं धरमं ॥ सरबं जुगता ॥ सरबं मुकता ॥ १४४ ॥

रसावल छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

नमो नरक नासे ॥ सदैवं प्रकासे ॥ अनंगं सरूपे ॥ अभंगं बिभूते ॥ १४५ ॥ प्रमाथं प्रमाथे ॥ सदा सरब साथे ॥ अगाध सरूपे ॥ निरबाध बिभूते ॥१४६॥ अनंगी अनामे ॥ त्रिभंगी त्रिकामे ॥ निरभंगी सरूपे ॥ सरबंगी अनूपे ॥१४७॥ न पोत्रै न पुत्रै ॥ न सत्रै न मित्रै ॥ न तातै न मातै ॥ न जातै न पातै ॥१४८॥ निरसाकं सरीक हैं ॥ अमितो अमीक हैं ॥ सदैवं प्रभा हैं ॥ अजै हैं अजा

हैं ॥ १४९ ॥

भगवती छंद ॥ त्वं प्रसादि ॥

कि ज़ाहिर ज़हूर हैं ॥ कि हाज़र हज़ूर हैं ॥ हमेसुल सलाम हैं ॥ समसतुल कलाम हैं ॥ १५० ॥ कि साहिब दिमाग़ हैं ॥ कि हुसनल चराग़ हैं ॥ कि कामल करीम हैं ॥ कि राज़क रहीम हैं ॥ १५१ ॥ कि रोज़ी दिहिंद हैं ॥ कि राजक रहिंद हैं ॥ करीमुल कमाल हैं ॥ कि हुसनल जमाल हैं ॥१५२॥ ग़नीमुल ख़िराज हैं ॥ ग़रीबुल निवाज़ हैं ॥ हरीफ़ुल

शिकंन हैं ॥ हिरासुल फिकंन हैं
॥ १५३ ॥ कलंकं प्रणास हैं ॥
समसतुल निवास हैं ॥ अगंजुल
गनीम हैं ॥ रज़ाइक रहीम हैं ॥
१५४ ॥ समसतुल जुबां हैं ॥
कि साहिब किरां हैं ॥ कि नरकं
प्रणास हैं ॥ बहिसतुल निवास
हैं ॥ १५५ ॥ कि सरबुल गवंन
हैं ॥ हमेसुल रवंन हैं ॥ तमामुल
तमीज हैं ॥ समसतुल अजीज
हैं ॥ १५६ ॥ परं परम ईस हैं ॥
समसतुल अदीस हैं ॥ अदेसुल
अलेख हैं ॥ हमेसुल अभेख हैं ॥

१५७ ॥ ज़मीनुल ज़मां हैं ॥ अमीकुल इमां हैं॥करीमुल कमाल हैं॥कि जुरअति ज़माल हैं॥१५८॥ कि अचलं प्रकास हैं॥ कि अमितो सुबास हैं ॥ कि अजब सरूप हैं॥ कि अमितो बिभूत हैं॥१५९॥कि अमितो पसा हैं॥ कि आतम प्रभा हैं ॥ कि अचलं अनंग हैं ॥ कि अमितो अभंग हैं ॥ १६० ॥

मधुभार छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

मुनि मन प्रनाम ॥ गुनि गन मुदाम॥ अरिबर अगंज ॥ हरिनर प्रभंज ॥ १६१ ॥ अन गन प्रनाम

॥ मुनि मन सलाम ॥ हरि नर अखंड ॥ बरनर अमंड ॥ १६२ ॥ अनभव अनास॥मुनि मनि प्रकास ॥ गुनि गन प्रनाम ॥ जल थल मुदाम ॥१६३॥ अनछिज्ज अंग॥ आसन अभंग ॥ उपमा अपार गति मिति उदार ॥ १६४ ॥ जल थल अमंड ॥ दिस विस अभंड ॥ जल थल महंत ॥ दिस विस बिअंत ॥ १६५ ॥ अनभव अनास धृत धर धुरास ॥ आजानु बाहु ॥ एकै सदाहु ॥ १६६ ॥ ओअंकार आदि ॥ कथनी अनादि ॥ खल

खंड खिआल ॥ गुरबर अकाल ॥ १६७ ॥ घर घरि प्रनाम ॥ चित चरन नाम ॥ अनछिज्ज गात ॥ आजिज न बात ॥ १६८ ॥ अनझंझ गात ॥ अनरंज बात ॥ अनटुट भंडार ॥ अनठट अपार ॥ १६९ ॥ आडीठ धरम ॥ अति ढीठ करम ॥ अणब्रण अनंत ॥ दाता महंत ॥ १७० ॥

हरिबोल मना छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

करुणालय हैं ॥ अरि घालय हैं ॥ खल खंडन हैं ॥ महि मंडन हैं ॥ १७१ ॥ जगतेस्वर हैं ॥ परमेस्वर

हैं ॥ कलि कारण हैं ॥ सरब उबारण हैं ॥ १७२ ॥ धृत के धरण हैं ॥ जग के करण हैं ॥ मन मानिय हैं ॥ जग ज़ानिय हैं ॥ १७३ ॥ सरबं भर हैं ॥ सरबं कर हैं ॥ सरब पासिय हैं ॥ सरब नासिय हैं ॥ १७४ ॥ करुणा कर हैं ॥ बिस्वंभर हैं ॥ सरबेस्वर हैं ॥ जगतेस्वर हैं ॥ १७५ ॥ ब्रहमंडस हैं ॥ खल खंडस हैं ॥ पर ते पर हैं ॥ करुणा कर हैं ॥ १७६ ॥ अजपा जप हैं ॥ अथपा थप हैं ॥

अकृता कृत हैं ॥ अंमृता मृत हैं ॥ १७७ ॥ अमृता मृत हैं ॥ करुणा कृत हैं ॥ अकृता कृत हैं ॥ धरणी धृत हैं ॥ १७८ ॥ अमृतेस्वर हैं ॥ परमेस्वर हैं ॥ अकृता कृता हैं ॥ अमृता मृत हैं ॥ १७६ ॥ अजबा कृत हैं ॥ अमृता मृत हैं ॥ नर नाइक हैं ॥ खल घाइक हैं ॥ १८० ॥ बिस्वंभर हैं ॥ करुणालय हैं ॥ नृप नाइक हैं ॥ सरब पाइक हैं ॥ १८१ ॥ भवभंजन हैं ॥ अरि गंजन हैं ॥ रिपु तापन

हैं ॥ जपु जापन हैं ॥ १८२ ॥
अकलं कृत हैं ॥ सरबा कृत हैं ॥
करता कर हैं ॥ हरता हरि
हैं ॥ १८३ ॥ परमातम हैं ॥
सरबातम हैं ॥ आतम बस हैं ॥
जस के जस हैं ॥ १८४ ॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

नमो सूरज सूरजे नमो चंद्र चंद्रे ॥
नमो राज राजे नमो इंद्र इंद्रे ॥
नमो अंधकारे नमो तेज तेजे ॥
नमो बृंद बृंदे नमो बीज बीजे ॥
१८५ ॥ नमो राजसं तामसं सांत
रूपे ॥ नमो परम तत्तं अतत्तं

सरूपे ॥ नमो जोग जोगे नमो
गिआन गिआने ॥ नमो मंत्र मंत्रे
नमो धिआन धिआने ॥ १८६ ॥
नमो जुद्ध जुद्धे नमो गिआन
गिआने ॥ नमो भोज भोजे नमो
पान पाने ॥ नमो कलह करता
नमो सांत रूपे ॥ नमो इंद्र इंद्रे
अनादं बिभूते ॥१८७॥ कलंकार
रूपे अलंकार अलंके ॥ नमो
आस आसे नमो बांक बंके ॥
अभंगी सरूपे अनंगी अनामे ॥
त्रिभंगी त्रिकाले अनंगी अकामे
॥ १८८ ॥

एक अछरी छंद ॥

अजै ॥ अलै ॥ अभै ॥ अबै ॥
१८९ ॥ अभू ॥ अजू ॥ अनास ॥
अकास ॥१९०॥ अगंज॥ अभंज॥
अलक्ख॥अभक्ख॥१९१॥ अकाल
॥दिआल॥अलेख॥अभेख॥१९२॥
अनाम ॥ अकाम ॥ अगाह ॥
अढाह ॥१९३॥ अनाथे॥ प्रमाथे ॥
अजोनी ॥ अमोनी ॥ १९४ ॥
न रागे॥न रंगे॥ न रूपे ॥ न रेखे
॥ १९५ ॥ अकरमं ॥ अभरमं ॥
अगंजे ॥ अलेखे ॥ १९६ ॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

नमसतुल प्रणामे समसतुल

प्रणासे ॥ अगंजुल अनासे समस-
तुल निवासे ॥ निरकामं विभूते
समसतुल सरूपे ॥ कुकरमं
प्रणासी सुधरमं बिभूते ॥१६७॥
सदा सच्चिदानंद सत्रं प्रणासी ॥
करीमुल कुनिंदा समसतुलनिवासी
॥ अजाइब बिभूते गजाइब गनीमे
॥ हरीश्रं करीश्रं करीमुल रहीमे
॥ १६८ ॥ चतर चक्र वरती चतर
चक्र भुगते ॥ सुयंभव सुभं सरबदा
सरब जुगते ॥ दुकालं प्रणासी
दिश्रालं सरूपे ॥ सदा श्रंग संगे
अभंगं बिभूते ॥ १६९ ॥

ੴ शबद पातशाही १० ॥ ੴ

१ ओ सतिगुरप्रसादि ॥

रामकली पातशाही १० ॥

रे मन ऐसो कर संनिआसा ॥ बन से सदन सबै कर समझहु मन ही माहि उदासा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जत की जटा जोगके मजननेमके नखन बढाओ ॥ ज्ञान गुरू आतम उपदेसहु नाम बिभूत लगाओ ॥१॥ अलप अहार सुलप सी निंद्रा दया छिमा तन प्रीति ॥ सील

संतोख सदा निरबाहिबो ह्वैबो त्रिगुण अतीत ॥ २ ॥ काम क्रोध हंकार लोभ हठ मोह न मन सिउ लिआवै ॥ तबही आतम ततको दरसै परम पुरखकह पावै ॥३॥१॥

रामकली पातशाही १० ॥

रे मन इह बिधि जोग कमाओ ॥ सिंङीसाच अकपट कंठला धिआन बिभूति चड़ाओ॥१॥रहाउ॥ ताती गहु आतम बस करकी भिछा नाम अधारं ॥ बाजै परम तार तत हरि को उपजै राग रसारं ॥ १ ॥ उघटै तान तरंग रंग अति

गिआन गीत बंधानं ॥ चकि चकि रहे देव दानव मुनि छकि छकि बयोम बिवानं ॥२॥ आतम उपदेस भेस संजम को जापु सु अजपा जाप॥ सदा रहै कंचन सी काइआ काल न कबहूँ ब्यापै ॥ ३ ॥ २॥

रामकली पातशाही १० ॥

प्रानी परम पुरख पग लागो ॥ सोवत कहा मोह निंद्रा मै कबहूँ सुचितह्वै जागो॥१॥रहाउ॥औरन कहिं उपदेसत है पसु तोहि प्रबोध न लागो॥सिचत कहां परे बिखयन कहिंकबहूं बिखैरस तिआगो॥१॥

केवल करम भरम से चीनहु धरम करम अनुरागो ॥ संग्रह करो सदा सिमरन को परम पाप तज भागो ॥ २ ॥ जाते दूख पाप नहि भेटै काल जाल ते तागो ॥ जो सुख चाहो सदा सभन को तउ हरि के रस पागो ॥ ३ ॥ ३ ॥

रागु सोरठि पा: १० ॥

प्रभ जू तोकह लाज हमारी ॥ नील कंठ नर हरि नाराइण नील बसन बनवारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ परम पुरख प्रमेस्वर सुआमी पावन पउन अहारी ॥

माधव महा जोत मधु मरदन मान मुकंद मुरारी ॥ १ ॥ निरबिकार निरजुर निद्रा बिन निरबिख नरक निवारी ॥ कृपा सिंध काल त्रैदरसी कुकृत प्रनासन कारी ॥ २ ॥ धनुरपान धृतमान धराधर अन बिकार अस धारी ॥ हौ मति मंद चरन सरनागति कर गहि लेहु उबारी ॥ ३ ॥ ४ ॥

राग कलिआण पा. १० ॥

बिन करतार न किरतम मानो ॥ आदि अजोनि अजै अबिनासी तिह परमेसर जानो ॥१॥ रहाउ॥

कहा भइग्रो जो ग्रान जगत मै दसक ग्रसुर हरिधाए ॥ ग्रधिक परपंच दिखाइ सभन कह ग्रापहि ब्रहम कहाए ॥ १ ॥ भंजन गड़न समरथ सदा प्रभु सो किम जात गिनायो ॥ तांते सरब काल के ग्रसि को घाइ बचाइ न ग्रायो ॥ २ ॥ कैसे तोहि तार है सुन जड़ ग्राप डुबिग्रो भव सागर ॥ छुटहो काल फास ते तब ही गहो सरनि जगतागर ॥ ३ ॥ ५ ॥

खिग्राल पातशाही १० ॥

मित्र पिग्रारे नूं हाल मुरीदां

दा कहणा ॥ तुध बिन रोग रजाईआं दा ओढण नाग निवासां दे रहणा ॥ सूल सुराही खंजर पिआला बिंग कसाईआं दा सहणा ॥ यारड़े दा सानूं सथर चंगा भठ खेड़िआं दा रहणा ॥ ३ ॥ ६ ॥

तिलंग काफी पातशाही १० ॥

केवल कालई करतार ॥ आदि अंत अनंते मूरत गड़न भंजन हार ॥१॥ रहाउ ॥ निंद उसतति जतन के सम सत्र मित्र न कोइ ॥ कउन बाट परी तिसै पथ सारथी

रथ होइ ॥ १ ॥ तात मात न जात जाकर पुत्र पोत्र मुकंद ॥ कउन काजि कहाइंगे ते आनि देवकि नंद ॥ २ ॥ देव दैत दिसा विसा जिह कीन सरब पसार ॥ कौन उपमा तउन को मुख लेत नामु मुरार ॥ ३ ॥ ७ ॥

राग बिलावल पातशाही १० ॥

सो किम मानस रूप कहाए ॥ सिध समाधि साधि कर हारे कउहूँ न देखन पाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नारद बिआस परासर ध्रूअ से धिआवत धिआन लगाए ॥ बेद

पुरान हार हठ छाडिओ तदपि धिआन न आए ॥ १ ॥ दानव देव पिसाच प्रेत ते नेतहि नेत कहाए ॥ सूछम ते सूछम कर चीने बृधन बृध बताए ॥ २ ॥ भूमि अकास पताल सभै सजि एक अनेक सदाए ॥ सो नर काल फास ते बाचे जो हरि सरणि सिधाए ॥३॥१॥८॥३२॥

रागु देवगंधारी पातशाही १० ॥

इक बिन दूसर सो न चिनार ॥ भंजन गड़न समरथ सदा प्रभु जानत हैं करतार ॥१॥ रहाउ ॥

कहा भइग्रो जो ग्रति हित चित कर बहु
बिधि सिला पुजाई॥ पान थकिग्रो
पाहन कहि परसत कछु कर सिध
न ग्राई ॥ १ ॥ ग्रछत धूप दीप
ग्ररपत है पाहन कछू न खै है॥ तां मै
कहा सिधि है रे जड़ तोहि कछू बर
दै है ॥२॥ जो जीग्र होत तौ देत
कछू तुहि मन बच करम बिचार॥
केवल एक सरणि सुग्रामी बिनयौ
नहि कतहि उधार ॥ ३ ॥ ६ ॥

रागु देवगंधारी पातशाही १० ॥

बिन हरिनामु न बाचन पै है॥
चौदहि लोक जाहि बसिकीनेतांते

कहा पलै है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राम रहीम उबार न साकहै जाकर नाम रटै है ॥ ब्रहमा बिसनु रुद्र सूरज ससि ते बसि काल सबै हैं ॥ १ ॥ बेद पुरान कुरान सबै मत जाकर नेत कहै है ॥ इंद्र फनिंद्र मुनिंद्र कलप बहु धिआवत धिआन न ए हैं ॥ २ ॥ जाकर रूप रंग नहि जनियत सो किम स्याम कहै है ॥ छुटहो काल जाल ते तव ही ताहि चरन लपटै है ॥ ॥ ३ ॥ १० ॥

१ ओं श्री वाहिगुरू जी की फतह ॥

सवय्ये श्री मुखवाक
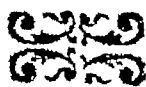
पातशाही १० ॥

(अकाल उसतति विचों)

स्रावग सुद्ध समूह सिद्धानके देखि फिरिओ घर जोग जतीके ॥ सूर सुरारदन सुद्ध सुधादिक संत समूह अनेक मतीके॥सारेही देसको देखि रहिओ मत कोऊ न देखीअत प्रान पतीके॥श्री भगवान की भाइ कृपा हूंते एक रतीबिनु एकरती के॥१॥ माते मतंग जरे जर संग अनूप उतंग सुरंग सवारे ॥ कोट

तुरंग कुरंगसे कूदत पउन के गउन को जात निवारे॥ भारी भुजानके भूप भली बिधि निआवत सीस न जात बिचारे॥एते भए तु कहाभए भूपतिअंतकोनांगेहीपांइपधारे॥२॥

जीत फिरै सभ देस दिसान को बाजत ढोल मृदंग नगारे॥ गुंजत गूड़ गजानके सुंदर हिंसत हैं हयराज हजारे॥ भूत भविक्ख भवान के भूपत कउनु गनै नही जात बिचारे॥ श्री पति श्री भगवान भजे बिनु अंत को अंत के धाम सिधारे॥ ३॥

तीरथ नान दइश्रा दम दान सु संजम नेम अनेक बिसेखे ॥ बेद पुरान कतेब कुरान जमीन जमान सबान के पेखे ॥ पउन अहार जती जतधार सबैसुबिचार हजारक देखे ॥ श्री भगवान भजे बिनु भूपति एक रती बिनु एक न लेखे ॥४॥

सुद्ध सिपाह दुरंत दुबाह सु साज सनाह दुरजान दलैंगे ॥ भारी गुमान भरे मन मैं करपरबत पंख हले न हलैंगे ॥ तोरि अरीन मरोरि मवासन माते मतंगनि मान मलैंगे॥ श्री पति श्री भगवान कृपा

बिनुतिआगिजहाननिदानचलैंगे।५।

बीर अपार बडे बरिआर अब
चारहि सार की धार भछय्या ॥
तोरत देस मलिंद मवासन माते
गजान के मान मलय्या ॥ गाढ़े
गढ़ान के तोड़नहार सु बातन ही
चक चार लवय्या ॥ साहिबु श्री
सभ को सिरनाइक जाचक अनेक
सु एक दिवय्या ॥ ६ ॥

दानव देव फनिंद निसाचर भूत
भविक्ख भवान जपैंगे ॥ जीव
जिते जल मै थल मै पल ही पल
मै सब थाप थपैंगे ॥ पुंन प्रतापन

बाढत जै धुन पापन के बहु पुंज खपैंगे ॥ साध समूह प्रसंन फिरै जग सत्र सभै अवलोक चपैंगे॥७॥

मानव इंद्र गजिंद्र नराधप जौन त्रिलोक को राज करैंगे ॥ कोटि सनान गजादिक दान अनेक सुअंबर साज बरैंगे ॥ ब्रह्मा महेसर बिसन सचीपति अंतफसे जम फास परैंगे ॥ जे नर श्रीपति के प्रस हैं पग ते नर फेर न देह धरैंगे ॥८॥

कहा भयो जो दोऊ लोचन मूंद कै बैठि रहिओ बक धिआन लगाइओ ॥ न्हात फिरिओ लीए

सात समुद्रनि लोक गयो परलोक गवाइश्रो॥ बास कीश्रो बिखिश्रान सोवैठकै ऐसेहीऐससुबैस बताइश्रो ॥साचु कहों सुनलेहु सभै जिन प्रेम कीश्रो तिन ही प्रभ पाइश्रो ॥६॥

काहू लै पाहन पूज धरयो सिर काहू लै लिंग गरे लटकाइश्रो ॥ काहू लखिश्रो हरि अवाची दिसा महि काहू पछाहको सीसुनिवाइश्रो ॥कोऊ बुतान को पूजतहैपसु कोऊ मृतानको पूजनधाइश्रो॥कूर क्रिश्रा उरभिश्रो सभही जग श्री भगवान को भेदु न पाइश्रो ॥ १० ॥

त्व प्रसादि सवय्ये
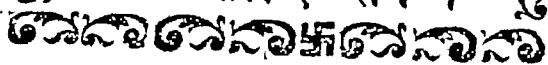
दीनन की प्रतिपाल करे नित संत उबार गनीमन गारैं ॥ पछ्छ पसू नग नाग नराधप सरब समै सभ को प्रतिपारैं ॥ पोखतहै जल मै थल मै पल मै कल के नही करम विचारैं ॥ दीन दइस्राल दइस्रा निधि दोखन देखत है पर देत न हारै ॥१॥ दाहत है दुख दोखन को दल दुजन के पल मै दल डारै ॥ खंड अखंड प्रचंड प्रहारन पूरन प्रेम की प्रीत संभारै ॥ पार

न पाइ सकै पदमापति बेद कतेब अभेद उचारै ॥ रोजी ही राज बिलोकत राजक रोख रूहान की रोजी न टारै ॥ २ ॥ कीट पतंग कुरंग भुजंगम भूत भविक्खभवान बनाए ॥ देव अदेव खपे अहंमेव न भेव लखिओ भ्रम सिउ भरमाए ॥ बेद पुरान कतेब कुरान हसेब थके कर हाथ न आए ॥ पूरन प्रेम प्रभाउ बिना पति सिउ किन श्रीपति पदमापति पाए ॥ ३ ॥ आदि अनंत अगाध अद्वैख सुभूत भविक्ख भवान अभै है ॥ अंति

बिहीन अनातम आप अदाग अदोख अछिद्र अछै है ॥ लोगन के करता हरता जल मै थल मै भरता प्रभ वै है ॥ दीन दइआल दइआ कर श्री पति सुंदर श्री पदमापति ऐ है ॥ ४ ॥ काम न क्रोध न लोभ न मोह न रोग न सोग न भोग न भै है ॥ देह बिहीन सनेह सभो तन नेह बिरकत अगेह अछै है ॥ जानको देत अजान को देत जमीन को देत जमान को दै है ॥ काहे को डोलत है तुमरी सुध सुंदर श्री

पदमापति लैहै ॥ ५ ॥ रोगन ते
अर सोगन ते जल जोगन ते बहु
भांति बचावै॥ सत्र अनेक चलावत
घाव तऊ तन एक न लागन पावै
॥ राखत है अपनो कर दैकर पाप
संबूह न भेटन पावै ॥ और की
बात कहा कह तोसो सु पेट ही के
पट बीच बचावै॥६॥ जच्छ भुजंग
सु दानव देव अभेव तुमै सबही
कर धिआवै ॥ भूमि अकास पताल
रसातल जच्छ भुजंग सभै सिर
निआवै ॥ पाइ सकै नही पार
प्रभाहू को नेत ही नेतह भेद

बतावै॥खोज थके सभही खुजीत्रा सुरहार परे हरि हाथ न त्रावै॥७॥ नारद से चतुरानन से रुमनारिखि से सभहू मिलि गाइत्रो ॥ बेद कतेब न भेद लखित्रो सभ हारि परे हरि हाथि न त्राइत्रो ॥ पाइ सकै नही पार उमापत सिध सनाथ सनंतन धित्राइत्रो ॥ धित्रान धरो तिहको मनमै जिह कोत्रमितोजुसभैजगुछाइत्रो ॥८॥ बेद पुरान कतेब कुरान त्रभेद नृपान सभै पचहारे ॥ भेद न पाइ सकित्रो त्रनभेद को खेदत है

अनछेद पुकारे ॥ राग न रूप न रेख न रंग न साक न सोग न संग तिहारे ॥ आदि अनादि अगाध अभेख अद्वेख जपिओ तिनही कुल तारे ॥ ६ ॥ तीरथ कोट कीए इसनान दीए बहु दान महा ब्रति धारे ॥ देस फिरिओ कर भेस तपो धन केस धरे न मिले हरि पिआरे ॥ आसन कोट करे असटांग धरे बहु निआस करे मुख कारे ॥ दीन दइआल अकाल भजे बिनु अंत को अंत के धाम सिधारे ॥ १० ॥

रामकली महला ३ ॥

अनंदु

१ ओं सतिगुरप्रसादि ॥

अनंदु भइआ मेरी माए सतिगुरू मै पाइआ ॥ सतिगुरू त पाइआ सहज सेती मनि वजीआ वाधाईआ ॥ राग रतन परवार परीआ सबद गावण आईआ ॥ सबदो त गावहु हरी केरा मनि जिनी वसाइआ ॥ कहै नानकु अनंदु होआ सतिगुरू मै पाइआ ॥ १ ॥ ए मन मेरिआ तू सदा रहु हरि नाले ॥ हरि

नालि रहु तू मंन मेरे दूख सभि विसारणा ॥ अंगीकारु ओहु करे तेरा कारज सभि सवारणा ॥ सभना गला समरथु सुआमी सो किउ मनहु विसारे ॥ कहै नानकु मंन मेरे सदा रहु हरि नाले ॥२॥ साचे साहिबा किआ नाही घरि तेरै ॥ घरि त तेरै सभु किछु है जिसु देहि सु पावए ॥ सदा सिफति सलाह तेरी नामु मनि वसावए ॥ नामु जिनकै मनि वसिआ वाजे सबद घनेरे ॥ कहै नानकु सचे

साहिब किया नाही घरि तेरै॥३॥
साचा नामु मेरा आधारो ॥ साचु
नामु आधारु मेरा जिनि भुखासभि
गवाईआ ॥ करि सांति सुख मनि
आइ वसिआ जिनि इछा सभि
पुजाईआ ॥ सदा कुरबाणु कीता
गुरू विटहु जिस दीआ एहि
वडिआईआ ॥ कहै नानकु सुणहु
संतहु सबदि धरहु पिआरो॥ साचा
नामु मेरा आधारो ॥४॥ वाजे पंच
सबदतितु घरिसभागै॥घरि सभागै
सबद वाजे कला जितु घरि
धारीआ॥ पंच दूत तुधु वसि कीते

कालु कंटकु मारिआ ॥ धुरि करमि पाइआ तुधु जिनकउ सिनामि हरि कैलागे॥कहै नानकु तहसुखु होआ तितुघरि अनहद वाजे ॥५॥ साची लिवैबिनुदेहनिमाणी॥देहनिमाणी लिवै बाझहु किआ करवेचारीआ॥ तुधु बाझु समरथ कोइ नाही कृपा करि बनवारीआ ॥ एस नउ होरु थाउनाही सबदि लागि सवारीआ॥ कहै नानकु लिवै बाझहु किआकरे वेचारीआ ॥ ६ ॥ आनंदु आनंदु सभुकोकहैआनंदु गुरूतेजाणिआ॥ जाणिआ आनंदु सदा गुर ते कृपा

करे पिआरिआ ॥ करि किरपा किलविख कटे गिआन अंजनु सारिआ ॥ अंदरहु जिन का मोहु तुटा तिनका सबदु सचै सवारिआ ॥ कहै नानकु एहु अनंदु है आनंदु गुर ते जाणिआ ॥७॥ बाबा जिसु तू देहि सोई जनु पावै ॥ पावै त सो जनु देहि जिसनो होरि किआ करहि वेचारिआ ॥ इकि भरमि भूले फिरहि दह दिसि इकि नामि लागि सवारिआ ॥ गुरपरसादी मनु भइआ निरमलु जिना भाणा भावए ॥ कहै नानकु जिसु देहि

पिआरे सोई जनु पावए ॥ ८ ॥
आवहु संत पिआरिहो अकथ की
करह कहाणी ॥ करह कहाणी
अकथ केरी कितु दुआरै पाईऐ ॥
तनु मनु धनु सभु सउपि गुर कउ
हुकमि मंनिऐ पाईऐ ॥ हुकमु
मंनिहु गुरू केरा गावहु सची बाणी॥
कहै नानकु सुणहु संतहु कथिहु
अकथ कहाणी॥ ९॥ ए मन चंचला
चतुराई किनै न पाइआ ॥ चतुराई
न पाइआ किनै तू सुणि मंन मेरिआ
॥ एह माइआ मोहणी जिनि एतु
भरमि भुलाइआ ॥ माइआ त

मोहणी तिनै कीतीजिनि ठगउली
पाईआ ॥ कुरबाणु कीता तिसै
विटहु जिनि मोहु मीठा लाइआ ॥
कहै नानकु मन चंचल चतुराई
किनै न पाइआ ॥ १० ॥ ए
मन पिआरिआ तू सदा सचु
समाले ॥ एहु कुटंबु तू जि देखदा
चलै नाही तेरै नाले ॥ साथि
तेरै चलै नाही तिसु नालि किउ
चितु लाईऐ ॥ ऐसा कंमु मूले
न कीचै जितु अंति पछोताईऐ ॥
सतिगुरू का उपदेसु सुणि तू
होवै तेरै नाले ॥ कहै नानकु मन

पिआरे तू सदा सचु समाले॥११॥
अगम अगोचरा तेरा अंतु
न पाइआ ॥ अंतो न पाइआ
किनै तेरा आपना आपु तू
जाणहे ॥ जीअ जंत सभि खेलु
तेरा किआ को आखि वखाणए॥
आखहि त वेखहि सभु तूहै जिनि
जगतु उपाइआ ॥ कहै नानकु तू
सदा अगंमु है तेरा अंतु न
पाइआ ॥ १२ ॥ सुरि नर मुनि
जन अंमृतु खोजदे सु अंमृतु
गुर ते पाइआ ॥ पाइआ
अंमृतु गुरि कृपा कीनी सचा

मनि वसाइआ ॥ जीअ जंत सभि तुधु उपाए इकि वेखि परसणि आइआ ॥ लबु लोभु अहंकारु चूका सतिगुरू भला भाइआ ॥ कहै नानकु जिसनो आपि तुठा तिनि अंमृतु गुर ते पाइआ ॥ १३ ॥ भगता की चाल निराली ॥ चाला निराली भगताह केरी बिखम मारगि चलणा ॥ लबु लोभु अहंकारु तजि तृसना बहुतु नाही बोलणा ॥ खंनिअहु तिखी वालहु निकी एतु मारगि जाणा ॥ गुर परसादी जिनी आपु

तजिश्रा हरि वासना समाणी ॥ कहै नानकु चाल भगता जुगहु जुगु निराली ॥१४॥ जिउ तू चला-इहि तिव चलह सुश्रामी होरु किश्रा जाणा गुण तेरे ॥ जिव तू चलाइहि तिवै चलह जिना मारगि पावहे ॥ करि किरपा जिनि नामि लाइहि सि हरि हरि सदा धिश्रावहे॥ जिसनो कथा सुणाइहि आपणी सि गुर दुश्रारै सुखु पावहे ॥ कहै नानकु सचे साहिब जिउ भावै तिवै चलावहे ॥ १५ ॥ एहु सोहिला

सबदु सुहावा ॥ सबदो सुहावा
सदा सोहिला सतिगुरू सुणाइआ
॥ एहु तिन कै मंनि वसिआ
जिन धुरहु लिखिआ आइआ ॥
इकि फिरहि घनेरे करहि गला
गली किनै न पाइआ ॥ कहै
नानकु सबदु सोहिला सतिगुरू
सुणाइआ ॥ १६ ॥ पवितु होए
से जना जिनी हरि धिआइआ ॥
हरि धिआइआ पवितु होए
गुरमुखि जिनी धिआइआ ॥
पवितु माता पिता कुटंब सहित
सिउ पवितु संगति सबाइआ ॥

कहदे पवितु सुणदे पवितु से
पवितु जिनी मंनि वसाइआ ॥
कहै नानकु से पवितु जिनी गुर-
मुखि हरि हरि धिआइआ ॥१७॥
करमी सहजु न ऊपजै विणु
सहजै सहसा न जाइ ॥ नह
जाइ सहसा कितै संजमि रहे
करम कमाए ॥ सहसै जीउ
मलीणु है कितु संजमि धोता
जाए ॥ मंनु धोवहु सबदि लागहु
हरि सिउ रहहु चितु लाइ ॥
कहै नानकु गुरपरसादी
सहजु उपजै इहु सहसा इव

जाइ ॥१८॥ जीअहु मैले बाहरहु
निरमल ॥ बाहरहु निरमल
जीअहु त मैले तिनी जनमु जूऐ
हारिआ ॥ एह तिसना वडा रोगु
लगा मरणु मनहु विसारिआ ॥ वेदा
महि नामु उतमु सो सुणहि नाही
फिरहि जिउ बेतालिआ ॥ कहै
नानकु जिन सचु तजिआ कूड़े लागे
तिनी जनमु जूऐ हारिआ ॥१६॥
जीअहु निरमल बाहरहु
निरमल ॥ बाहरहु त निरमल
जीअहु निरमल सतिगुर ते
करणी कमाणी ॥ कूड़ की सोइ

पहुचै नाही मनसा सचि समाणि॥ जनमु रतनु जिनी खटिआ भले से वणजारे ॥ कहै नानकु जिन मंनु निरमलु सदा रहहि गुर नाले ॥ २० ॥ जे को सिखु गुरू सेती सनमुखु होवै ॥ होवै त सनमुखु सिखु कोई जीअहु रहै गुर नाले ॥ गुर के चरन हिरदै धिआए अंतर आतमै समाले ॥ आपु छडि सदा रहै परणै गुर बिनु अवरु न जाणै कोए ॥ कहै नानकु सुणहुसंतहु संतहु सो सिखु सनमुखु होए ॥२१॥ जे को गुर

ते वेमुखु होवै बिनु सतिगुरु मुकति न पावै ॥ पावै मुकति न होरथै कोई पुछहु बिबेकीआ जाए ॥ अनेक जूनी भरमि आवै विणु सतिगुर मुकति न पाए ॥ फिरि मुकति पाए लागि चरणी सतिगुरू सबदु सुणाए ॥ कहै नानकु वीचारि देखहु विणु सतिगुर मुकति न पाए ॥ २२ ॥ आवहु सिख सतिगुरू के पिआरिहो गावहु सची बाणी ॥ बाणी त गावहु गुरू केरी बाणीआ सिरि बाणी ॥ जिन

कउ नदरि करमु होवै हिरदै तिना समाणी ॥ पीवहु अंमृतु सदा रहहु हरि रंगि जपिहु सारिग पाणी ॥ कहै नानकु सदा गावहु एह सची बाणी ॥ २३ ॥ सतिगुरू बिना होर कची है बाणी ॥ बाणी त कची सतिगुरू बाझहु होर कची बाणी ॥ कहदे कचे सुणदे कचे कचीं आखि वखाणी ॥ हरि हरि नित करहि रसना कहिआ कछू न जाणी ॥ चितु जिन का हिरि लइआ माइआ बोलनि पए रवाणी ॥

कहै नानकु सतिगुरु वाझहु होर
कची बाणि ॥ २४ ॥ गुर का
सबदु रतंनु है हीरे जितु जड़ाउ ॥
सबदु रतनु जितु मंनु लागा
एहु होआ समाउ ॥ सबद सेती
मनु मिलिआ सचै लाइआ
भाउ ॥ आपे हीरा रतनु आपे
जिसनो देइ बुझाइ ॥ कहै नानकु
सबदु रतनु है हीरा जितु
जड़ाउ ॥ २५ ॥ सिव सकति
आपि उपाइ कै करता आपे
हुकमु वरताए ॥ हुकमु वरताए
आपि वेखै गुरमुखि किसै बुझाए ॥

तोड़े बंधन होवै मुकतु स
मंनि वसाए ॥ गुरमुखि जिसनो
आपि करे सु होवै एकस सिउ
लिव लाए ॥ कहै नानकु आपि
करता आपे हुकमु बुझाए ॥२६॥
सिमृति सासत्र । पुंन पाप
बीचारदे ततै सार न जाणी ॥
ततै सार न जाणी गुरू बाझहु
ततै सार न जाणी ॥ तिही गुणी
संसारु भ्रमि सुता सुतिआ रैणि
विहाणी ॥ गुर किरपा ते से जन
जागे जिना हरि मनि वसिआ
बोलहि अंमृत बाणी ॥ कहै

नानकु सो ततु पाए जिस नो
अनदिनु हरि लिव लागै जागत
रैणि विहाणी ॥ २७ ॥ माता के
उदर महि प्रतिपाल करे सो किउ
मनहु विसारीऐ ॥ मनहु किउ
विसारीऐ एवडु दाता जि अगनि
महि आहारु पहुचावए ॥ ओस नो
किहु पोहि न सकी जिस नउ आपणी
लिव लावए ॥ आपणी लिव आपे
लाए गुरमुखि सदा समालीऐ ॥
कहै नानकु एवडु दाता सो किउ
मनहु विसारीऐ ॥ २८ ॥ जैसी
अगनि उदर महि तैसी बाहरि

माइआ ॥ माइआ अगनि सभ इको जेही करतै खेलु रचाइआ ॥ जा तिसु भाणा ता जंमिआ परवारि भला भाइआ ॥ लिव छुड़की लगी त्रिसना माइआ अमरु वरताइआ ॥ एह माइआ जितु हरि विसरै मोहु उपजै भाउ दूजा लाइआ ॥ कहै नानकु गुर परसादी जिना लिवलागी तिनी विचे माइआ पाइआ ॥२६॥ हरि आपि अमुलकु है मुलि न पाइआ जाइ ॥ मुलि न पाइआ जाइ किसै विटहु रहे लोक विललाए ॥

ऐसा सतिगुरु जे मिलै तिसनो
सिरु सउपीऐ विचहु आपु जाइ ॥
जिसदा जीउ तिसु मिलि रहै
हरि वसै मनि आइ ॥ हरि आपि
अमुलकु है भाग तिना के नानका
जिन हरि पलै पाइ ॥ ३० ॥
हरि रासि मेरी मनु वणजारा ॥
हरि रासि मेरी मनु वणजारा
सतिगुर ते रासि जाणी ॥ हरि
हरि नित जपिहु जीअहु लाहा
खटिहु दिहाड़ी ॥ एहु धनु तिना
मिलिआ जिन हरि आपे भाणा॥
कहै नानकु हरि रासि मेरी मनु

होआ वणजारा ॥ ३१ ॥ ए रसना तू अनरसि राचि रही तेरी पिआस न जाइ ॥ पिआस न जाइ होरतु कितै जिचरु हरि रसु पलै न पाइ ॥ हरि रसु पाइ पलै पीऐ हरि रसु बहुड़ि न तृसना लागै आइ ॥ एहु हरि रसु करमी पाईऐ सतिगुरु मिलै जिसु आइ ॥ कहै नानकु होरि अनरस सभि वीसरे जा हरि वसै मनि आइ ॥ ३२ ॥ ए सरीरा मेरिआ हरि तुम महि जोति रखी ता तू जग महि आइआ ॥

हरि जोति रखी तुधु विचि ता तू जग महि आइआ ॥ हरि आपे माता आपे पिता जिनि जीउ उपाइ जगतु दिखाइआ ॥ गुर परसादी बुझिआ ता चलतु होआ चलतु नदरी आइआ ॥ कहै नानकु स्रिसटि का मूलु रचिआ जोति राखी ता तू जग महि आइआ ॥ ३३ ॥ मनि चाउ भइआ प्रभ आगमु सुणिआ ॥ हरि मंगलु गाउ सखी ग्रिहु मंदरु बणिआ ॥ हरि गाउ मंगलु नित सखीए सोगु दूखु न विआपए ॥

गुर चरन लागे दिन सभागे आपणा पिरु जापए ॥ अनहत बाणी गुर सबदि जाणी हरिनामु हरि रसु भोगो ॥ कहै नानकु प्रभु आपि मिलिआ करण कारण जोगो ॥ ३४ ॥ ए सरीरा मेरिआ इसु जग महि आइकै किआ तुधु करम कमाइआ ॥ कि करम कमाइआ तुधु सरीरा जा तू जग महि आइआ ॥ जिनि हरि तेरा रचनु रचिआ सो हरि मनि न वसाइआ ॥ गुर परसादी हरि मंनि वसिआ

पूरबि लिखिआ पाइआ ॥ कहै नानकु एहु सरीरु परवाणु होआ जिनि सतिगुर सिउ चितु लाइआ ॥ २५ ॥ ए नेत्रहु मेरिहो हरि तुम महि जोति धरी हरि बिनु अवरु न देखहु कोई ॥ हरि बिनु अवरु न देखहु कोई नदरी हरि निहालिआ ॥ एहु विसु संसारु तुम देखदे एहु हरि का रूपु है हरि रूपु नदरी आइआ ॥ गुर परसादी बुझिआ जा वेखा हरि इकु है हरि बिनु अवरु न कोई ॥ कहै नानकु

एहि नेत्र अंध से सतिगुरि
मिलीऐ दिब द्रसटि होई ॥३६॥
ए स्रवणहु मेरिहो साचै सुनणै नो
पठाए ॥ साचै सुनणै नो पठाए
सरीरि लाए सुणहु सति बाणी॥
जितु सुणी मनु तनु हरिआ होआ
रसना रसि समाणी ॥ सचु अलख
विडाणी ताकी गति कही न जाए
॥ कहै नानकु अंमृत नामु सुणहु
पवित्र होवहु साचै सुनणै नो
पठाए ॥ ३७ ॥ हरि जीउ गुफा
अंदरि रखिकै वाजा पवणु वजा
इआ ॥ वजाइआ वाजा पउण

बुझावहे ॥ इहु सचु सभना का खसमु है जिसु बखसे सो जनु पावहे ॥ कहै नानकु सचु सोहिला सचै घरि गावहे ॥ ३६ ॥ अनदु सुणहु वडभागी हो सगल मनोरथ पूरे ॥ पारब्रहम प्रभु पाइआ उतरे सगल विसूरे ॥ दूख रोग संताप उतरे सुणी सची बाणी ॥ संत साजन भए सरसे पूरे गुर ते जाणी ॥ सुणते पुनीत कहते पवितु सतिगुरु रहिआ भरपूरे ॥ बिनवंति नानकु गुर चरण लागे वाजे अनहद तूरे ॥ ४० ॥ १ ॥

❀ रहरासि ❀

९ ओं सतिगुरप्रसादि ॥

सलोकु म० १ ॥

दुखु दारू सुखुरोगु भइया जासुखु तामि न होई ॥ तू करता करणा मै नाही जा हउ करी न होई ॥१॥ बलिहारी कुदरति वसिया तेरा अंतु न जाई लखिया ॥१॥रहाउ॥ जाति महि जोति जोतिमहिजाता अकल कला भरपूरि रहिया ॥ तू सचा साहिबु सिफति सुआल्हिउ जिनि कीती सो पारि पइया ॥

कहु नानक करते कीआ बाता जो किछु करणा सु करि रहिआ ॥२॥

सो दरु रागु आसा महला १

१ ओं सतिगुरप्रसादि ॥

सो दरु तेरा केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले॥ वाजे तेरे नाद अनेक असंखा केते तेरे वावणहारे ॥ केते तेरे राग परी सिउ कहीअहि केते तेरे गावण हारे ॥ गावनि तुधनो पवणु पाणी वैसंतरु गावै राजा धरमु दुआरे ॥ गावनि तुधनो चितु गुपतु लिखि जाणनि लिखिलिखि धरमुबीचारे॥

गावनि तुधनो ईसरु ब्रहमा देवी सोहनि तेरे सदा सवारे ॥ गावनि तुधनो इंद्र इंद्रासणि बैठे देवतिआ दरि नाले ॥ गावनि तुधनो सिध समाधी अंदरि गावनि तुधनो साध बीचारे ॥ गावनि तुधनो जती सती संतोखी गावनि तुधनो वीर करारे ॥ गावनि तुधनो पंडित पड़नि रखीसुर जुगु जुगु वेदा नाले ॥ गावनि तुधनो मोहणीआ मनु मोहनि सुरगु मछु पइआले ॥ गावनि तुधनो रतन उपाए तेरे अठसठि

तीरथ नाले॥ गावनि तुधनो जोध महाबलसूरा गावनि तुधनो खाणी चारे ॥ गावनि तुधनो खंड मंडल ब्रहमंडा करि करि रखे तेरे धारे ॥ सेई तुधनो गावनि जो तुधु भावनि रते तेरे भगत रसाले ॥ होरि केते तुधनो गावनि से मै चिति न आवनि नानकु किआबीचारे॥सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई ॥ हैभी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई ॥ रंगी रंगी भाती करि करि जिनसी माइआ जिनि उपाई ॥ करि करि देखै

कीता आपणा जिउ तिसदी वडि-आई॥ जो तिसु भावै सोई करसी फिरि हुकमु न करणा जाई ॥ सो पातिसाहु साहा पतिसाहिबु नानक रहणु रजाई ॥ १ ॥

आसा महला १ ॥

सुणि वडा आखै सभु कोइ॥ केवडु वडा डीठा होइ ॥ कीमति पाइ न कहिआ जाइ ॥ कहणै वाले तेरे रहे समाइ ॥१॥ वडे मेरे साहिबा गहिर गंभीरा गुणी गहीरा॥ कोइ न जाणै तेरा केता केवडु चीरा ॥१॥ रहाउ ॥ सभि सुरती मिलि

सुरति कमाई ॥ सभ कीमति मिलि कीमति पाई ॥ गिम्रानी धिम्रानी गुर गुरहाई ॥ कहणु न जाई तेरी तिलु वडिम्राई ॥ २ ॥ सभि सत सभि तप सभि चंगि-म्राईम्रा ॥ सिधा पुरखा कीम्रा वडिम्राईम्रा ॥ तुधु विणु सिधी किनै न पाईम्रा ॥ करमि मिलै नाही ठाकि रहाईम्रा ॥ ३ ॥ म्राखण वाला किम्रा वेचारा ॥ सिफती भरे तेरे भंडारा ॥ जिसु तू देहि तिसै किम्रा चारा॥नानक सचु सवारणहारा ॥ ४ ॥ २ ॥

रहै न चूकै भोगु ॥ गुणु एहो होरु नाही कोइ॥ ना को होआ ना को होइ ॥३॥ जेवडु आपि तेवडु तेरी दाति ॥ जिनि दिनु करिकै कीती राति॥खसमुविसारहितेकमजाति॥ नानक नावै बाझु सनाति ॥४॥

रागु गूजरी महला ४ ॥

हरि के जन सतिगुर सत पुरखा बिनउ करउ गुर पासि ॥ हम कीरे किरम सतिगुर सरणाई करि दइआ नामु परगासि ॥ १ ॥ मेरे मीत गुरदेव मोकउ राम नामु परगासि ॥ गुरमति

नामु मेरा प्रान सखाई हरि कीरति हमरी रहरासि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि जन के वड भाग वडेरे जिन हरि हरि सरधा हरि पिआस ॥ हरि हरि नामु मिलै तृपतासहि मिलि संगति गुण परगासि ॥ २ ॥ जिन हरि हरि हरि रसु नामु न पाइआ ते भागहीण जम पासि ॥ जो सतिगुर सरणि संगत नही आए ध्रिगु जीवे ध्रिगु जीवासि ॥ ३ ॥ जिन हरि जन सतिगुर संगति पाई तिन धुरि मसतकि लिखिआ

लिखासि ॥ धनु धंनु सते संगति जितु हरि रसु पाइआ मिलि जन नानक नामु परगासि ॥ ४ ॥ ४ ॥

राग गूजरी महला ५ ॥

काहे रे मन चितवहि उदमु जा आहरि हरि जीउ परिआ ॥ सैल पथर महि जंत उपाए ताका रिजकु आगै करि धरिआ ॥ १ ॥ मेरे माधउ जी सत संगति मिले सु तरिआ ॥ गुर परसादि परम पदु पाइआ सूके कासट हरिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जननि पिता लोक सुत बनिता

कोइ न किसकी धरिआ ॥ सिरि सिरि रिजकु संबाहे ठाकुरु काहे मन भउ करिआ ॥ २ ॥ ऊडे ऊडि आवै सै कोसा तिसु पाछै बचरे छरिआ ॥ तिन कवणु खलावै कवणु चुगावै मन महि सिमरनु करिआ ॥ ३ ॥ सभि निधान दस असट सिधान ठाकुर कर तल धरिआ ॥ जन नानक बलि बलि सद बलि जाईऐ तेरा अंतु न पारा वरिआ ॥ ४ ॥ ५ ॥

रागु आसा महला ४ सो पुरखु
१ ओ सतिगुरप्रसादि ॥

सो पुरखु निरंजनु हरि पुरखु निरंजनु हरि अगमा अगम अपारा ॥ सभि धिआवहि सभि धिआवहि तुधु जी हरि सचे सिरजणहारा ॥ सभि जीअ तुमारे जी तूं जीआ का दातारा ॥ हरि धिआवहु संतहु जी सभि दूख विसारणहारा ॥ हरि आपे ठाकुरु हरि आपे सेवकु जी किआ नानक जंत विचारा ॥ १ ॥ तूं घट घट अंतरि सरबनिरंतरि जीहरि एको

पुरखु समाणा ॥ इकि दाते इकि भेखारीजी सभि तेरे चोज विडाणा ॥ तूं आपे दाता आपे भुगता जी हउ तुधु बिनु अवरु न जाणा ॥ तूं पारब्रहमु बेअंतु बेअंतु जी तेरे किआ गुण आखि वखाणा ॥ जो सेवहि जो सेवहि तुधु जी जनु नानकु तिन कुरबाणा ॥ २ ॥ हरि धिआवहि हरि धिआवहि तुधु जी से जन जुग महि सुख वासी ॥ से मुकतु से मुकतु भए जिन हरि धिआइआ जी तिन तूटी जम की फासी॥जिन निरभउ

जिन हरि निरभउ धिआइआ जी
तिन का भउ सभु गवासी ॥ जिन
सेविआ जिन सेविआ मेरा हरि
जी ते हरि हरि रूपि समासी॥ से
धंनु से धंनु जिन हरि धिआईआ
जी जनु नानकु तिन बलि जासी
॥ ३ ॥ तेरी भगति तेरी भगति
भंडार जी भरे बिअंत बेअंता ॥
तेरे भगत तेरे भगत सलाहनि
तुधु जी हरि अनिक अनेक
अनंता ॥ तेरी अनिक तेरी
अनिक करहि हरि पूजा जी तपु
तापहि जपहि बेअंता॥ तेरे अनेक

तेरे अनेक पड़हि बहु सिमृति सासत जी करि किरिआ खटु करम करंता ॥ से भगत से भगत भले जन नानकजी जो भावहि मेरे हरि भगवंता॥४॥तूं आदि पुरखु अपरंपरु करता जी तुधु जेवडु अवरु न कोई ॥ तूं जुगु जुगु एको सदा सदा तूं एको जी तूं निहचलु करता सोई ॥ तुधु आपे भावै सोई वरतै जीतूं आपेकरहि सु होई ॥ तुधु आपे सृसटि सभ उपाई जी तुधु आपे सिरजि सभ गोई॥ जनु नानकु गुण गावै करते

केजीजोसभसै का जाणोई॥५॥१॥

आसा महला ४ ॥

तूं करता सचिआरु मैडा सांई ॥ जो तउ भावै सोई थीसी जो तूं देहि सोई हउ पाई ॥१॥ रहाउ ॥ सभ तेरी तूं सभनी धिआइआ ॥ जिसनो क्रिपा करहि तिनि नाम रतनु पाइआ ॥ गुरमुखि लाधा मनमुखि गवाइआ ॥ तुधु आपि विछोड़िआ आपि मिलाइआ ॥ १ ॥ तूं दरीआउ सभ तुझही माहि ॥ तुझ बिनु दूजा कोई नाहि ॥ जीअ जंत सभि तेरा

खेलु॥ विजोगि मिलि विछुड़िआ संजोगी मेलु॥२॥जिसनोतूजाणा- इहि सोई जनु जाणै ॥ हरि गुण सद ही आखि वखाणै ॥ जिनि हरि सेविआ तिनि सुखु पाइआ ॥ सहजेही हरिनामि समाइआ ॥३॥ तूं आपे करता तेरा कीआ सभु होइ ॥ तुधु बिनु दूजा अवरु न कोइ ॥ तू करि करि वेखहि जाणहि सोइ ॥ जन नानक गुरमुखि परगटु होइ ॥ ४ ॥ २ ॥

आसा महला १ ॥

तितु सरवरड़ै भईले

निवासा पाणी पावकु तिनहि कीआ ॥ पंकजु मोह पगु नही चालै हम देखा तह डूबीअले ॥ १ ॥ मन एकु न चेतसि मूड़ मना ॥ हरि बिसरत तेरे गुण गलिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ना हउ जती सती नही पड़िआ मूरख मुगधा जनमु भइआ ॥ प्रणवति नानक तिन की सरणा जिन तूं नाही वीसरिआ ॥ २ ॥ ३ ॥

आसा महला ५ ॥

भई परापति मानुख देहुरीआ ॥ गोबिंदमिलणकीइह तेरी बरीआ॥

अवरि काज तेरै किते न काम ॥ मिलु साध संगति भजु केवल नाम ॥१॥ सरंजामि लागु भवजल तरन कै ॥ जनमु ब्रिथा जात रंगि माइआ कै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जपु तपु संजमु धरमु न कमाइआ ॥ सेवा साध न जानिआ हरि राइआ ॥ कहु नानक हम नीच करंमा ॥ सरणि परे की राखहु सरमा ॥ २ ॥ ४ ॥

१ ओं वाहिगुरू जी की फतह ॥
पातशाही १० ॥ चौपई ॥

पुनि राछस का काटा सीसा ॥

श्री असिकेत जगतु के ईसा ॥
पुहपन बृसटि गगन ते भई ॥
सभहिन आन वधाई दई ॥ १ ॥
धंन्य धंन्य लोगन के राजा ॥
दुसटन दाह गरीब निवाजा ॥
अखल भवन के सिरजन हारे ॥
दास जानि मुहि लेहु उबारे ॥१॥

कबियो वाच बेनती चौपई ॥

हमरी करो हाथ दै रच्छा ॥
पूरन होइ चित की इच्छा ॥
तव चरनन मन रहै हमारा ॥
अपना जान करो प्रतिपारा ॥१॥
हमरे दुसट सभै तुम घावहु ॥

आपु हाथ दै मोहि बचावहु ॥
सुखी बसै मोरो परवारा ॥
सेवक सिक्ख सभै करतारा ॥२॥
मो रच्छा निज कर दै करीऐ ॥
सभ बैरन को आज संघरीऐ ॥
पूरन होइ हमारी आसा ॥
तोर भजन की रहै पिआसा ॥३॥
तुमहि छाड कोई अवर नधिआऊं॥
जो बर चहौं सु तुमते पाऊं ॥
सेवक सिक्ख हमारे तारीअहि ॥
चुनि चुनि सत्र हमारे मारीअहि ॥
४॥ आप हाथ दै मुझै उबरीऐ ॥
मरन काल का त्रास निवरीऐ ॥

हूजो सदा हमारे पच्छा ॥ श्री
असिधुज जू करियहु रच्छा ॥५॥
राखि लेहु मुहि राखनहारे ॥
साहिब संत सहाइ पियारे ॥
दीन बंधु दुसटन के हंता ॥
तुमहो पुरी चतुर दस कंता ॥६॥
काल पाइ ब्रहमा बपु धरा ॥
काल पाइ सिवजू अवतरा ॥
काल पाइ कर बिसनु प्रकासा ॥
सकल कालका कीआ तमासा॥७॥
जवन काल जोगी सिव कीओ ॥
बेदराज ब्रहमा जु थीओ ॥
जवन काल सभ लोक सवारा ॥

नमसकार है ताहि हमारा ॥८॥
जवन काल सभ जगत बनायो ॥
देव दैत जच्छन उपजायो ॥ आदि
अंत एकै अवतारा ॥ सोई गुरू
समझियहु हमारा ॥९॥ नमसकार
तिस ही को हमारी॥ सकल प्रजा
जिन आप सवारी ॥ सिवकन को
सिवगुन सुख दीओ ॥ सत्रुन को
पल मो बध कीओ ॥ १० ॥ घट
घट के अंतर की जानत ॥ भले
बुरे की पीर पछानत ॥ चींटी ते
कुंचर असथूला ॥ सब पर
कृपा द्रसटि कर फूला ॥ ११ ॥

संतन दुख पाए ते दुखी ॥ सुख
पाए साधन के सुखी ॥ एक एक
की पीर पछानै ॥ घट घट के
पट पट की जानै ॥ १२ ॥ जब
उदकरख करा करतारा ॥ प्रजा
धरत तब देह अपारा ॥ जब
आकरख करत हो कबहू ॥ तुम मै
मिलत देह धर सभहू ॥ १३ ॥
जेते बदन सृसटि सब धारै ॥
आपु आपनी बूझ उचारै ॥ तुम
सब ही ते रहत निरालम ॥ जानत
बेद भेद अर आलम ॥ १४ ॥
निरंकार निरबिकार निरलंभ ॥

आदि अनील अनादि असंभ ॥ ताका मूढ़ उचारत भेदा ॥ जाको भेव न पावत बेदा ॥ १५ ॥ ताकौ करि पाहन अनुमानत ॥ महा मूढ़ कछु भेद न जानत ॥ महादेव को कहत सदा सिव ॥ निरंकारका चीनतनहिभिव॥१६॥ आप आपनी बुधि है जेती ॥ बरनत भिन भिन तुहि तेती ॥ तुमरा लखा न जाइ पसारा ॥ किह बिधि सजा प्रथम संसारा ॥ १७ ॥ एकै रूप अनूप सरूपा॥रंक भयो राव कहीं भूपा॥

अंडज जेरज सेतज कीनी॥ उतभुज खानि बहुर रचि दीनी ॥ १८ ॥
कहूं फूल राजा ह्वै बैठा ॥ कहूं सिमटि भयो संकर इकैठा ॥
सगरी सृसटि दिखाई अचंभव ॥ आदिजुगादि सरूप सुयंभव॥ १९॥
अब रच्छा मेरी तुम करो ॥ सिक्ख उबारि असिक्ख संघरो ॥
दुसट जिते उठवत उतपाता ॥ सकल मलेछ करो रण घाता॥ २०॥
जे असिधुज तव सरनी परे ॥ तिनके दुसट दुखित ह्वै मरे ॥
पुरख जवन पग परे तिहारे ॥

तिनके तुम संकट सब टारे॥२१॥
जो कलि को एक बार धिऐ है॥
ताके काल निकटि नहि ऐ है॥
रच्छा होइ ताहि सब काला॥दुसट
अरिसट टरें ततकाला ॥ २२ ॥
कृपा द्रसटि तन जाहि
निहरिहो ॥ ताके ताप तनक मो
हरिहो॥ रिद्धि सिद्धि घर मो सभ
होई ॥ दुष्ट छाह ह्वै सकै न कोई
॥ २३ ॥ एक बार जिन तुमै
संभारा ॥ काल फास ते ताहि
उबारा ॥ जिन नर नाम तिहारो
कहा॥दारिद दुसट दोख ते रहा ॥

२४॥खड़ग केत मैं सरणि तिहारी ॥ आप हाथ दै लेहु उबारी॥ सरब ठौर मो होहु सहाई ॥ दुसट दोख ते लेहु बचाई ॥ २५ ॥ कृपा करी हम पर जग माता ॥ ग्रन्थ करा पूरन सुभ राता ॥ किल बिख सकल देह को हरता ॥ दुसट दोखियन को छै करता ॥२६॥श्री असधुज जब भए दइआला॥ पूरन करा ग्रन्थ ततकाला ॥ मन बांछत फल पावै सोई ॥ दूख न तिसै बिआपत कोई ॥२७॥ अड़िल्ल ॥ सुनै गुंग जो याहि सु रसना

पावई ॥ सुनै मूढ़ चित लाइ चतुरता आवई ॥ दूख दरद भौ निकट न तिन नर के रहै ॥ हो जो याकी एक बार चौपई को कहै ॥ २८ ॥ चौपई ॥ संवत सत्रह सहस भणिज्जै ॥ अरध सहस फुनि तीन कहिज्जै॥ भाद्रव सुदी असटमी रविवारा ॥ तीर सतुद्रव ग्रन्थ सुधारा ॥ २६ ॥ इति श्री चरित्रो पख्याने तृया चरित्रो मंत्री भूप संवादे चार सौ पांच चरित्र समापत मसतु सुभ मसतु ॥ ३० ॥ अफजू ॥

दोहरा ॥ दास जान कर दास पर
कीजै कृपा अपार ॥ आप हाथ दै
राख मुहि मन क्रम बचन विचार
॥ १ ॥ चौपई ॥ मैं न गनेसहि
पृथम मनाऊं ॥ किशन बिशन
कबहूँ नहिं धिआऊं ॥ कान सुने
पहिचान न तिनसों ॥ लिव
लागी मोरी पग इनसो ॥ २ ॥
महाकाल रखवार हमारो ॥ महा
लोह मैं किंकर थारो ॥ अपना
जान करो रखवार ॥ बाहि गहे
की लाज विचार ॥ ३ ॥ अपना
जान मुझै प्रतिपरीए ॥ चुन

चुन सत्र हमारे मारीऐ ॥ देग
तेग जग मै दोऊ चलै ॥ राख
आप मुहि अउर न दलै ॥ ४ ॥
तुम मम करहु सदा प्रतिपारा ॥
तुम साहिब मैं दास तिहारा ॥
जान आपना मुझै निवाज ॥
आप करो हमरे सभ काज ॥ ५ ॥
तुम हो सभ राजन के राजा ॥
आपे आप गरीब निवाजा ॥
दास जान करि कृपा करहु मुहि ॥
हारि परा मैं आन द्वार तुहि ॥ ६ ॥
अपना जान करो प्रतिपारा ॥
तुम साहिब मैं किंकरु थारा ॥

दास जान दै हाथ उबारो ॥
हमरे सब बैरीअन संघारो ॥ ७ ॥
पृथम धरो भगवत को धिआना ॥
बहुर करो कबिता बिधि नाना ॥
क्रिसन जथा मत चरित्र उचारो ॥
चूक होइ कबि लेहु सुधारो ॥
कबिवाच दोहरा ॥ जो निज
प्रभ मो सो कहा सो कहिहों जग
माहि॥जो तिह प्रभ को धिआइ हैं
अंत सुरग को जाहि॥८॥ दोहरा॥
हरि हरि जन दुई एक है बिब
बिचार कछु नाहि ॥ जल ते उपज
तरंग जिउ जल ही बिखै समाहि

॥दोहरा॥जब आइस प्रभ को भयो जनम धरा जग आइ॥अब मैं कथा सछेपते सभहूँ कहत सुनाइ ॥११॥ कबिबाच दोहरा ॥ ठाढ भयो मैं जोर कर बचन कहा सिर नयाइ॥ पंथ चलै तब जगत मैं जब तुम करो सहाइ ॥ १२ ॥ दोहरा ॥ जे जे तुमरे धिआन को नित उठि धिऐहै संत ॥ अंत लहैंगे मुकत फल पावहिंगे भगवंत ॥ १३ ॥ दोहरा ॥ राम कथा जुग जुग अटल सभ को भाखत नेत ॥ सुरगवास

रघुवर करा सगरी पुरी सम्पूरन ॥
१४ ॥ चौपई ॥ जो इह कथा
सुनै अर गावै ॥ दूख पाप तिह
निकट न आवै ॥ बिसन भगत
कीए फल होई ॥ आधि बिआधि
छ्वै सकै न कोई ॥ १५ ॥
संमत सत्रह सहस पचावन ॥
हाड़ वदी पृथम सुख दावन ॥
त्व प्रसादि कर ग्रन्थ सुधारा ॥
भूल परी लहु लेहु सुधारा ॥१६॥
दोहरा ॥ नेत्र तुंग के चरन
तर सतुद्रव तीर तरंग ॥
श्री भगवत पूरन कीओ रघुबर

कथा प्रसंग ॥ २७ ॥ साध स्वभाव
जानत्यो नहीं वादसुवाद विवाद ॥
ग्रन्थ सकल पूरन कीयो भगवत
क्रिपा प्रसादि ॥ २८ ॥ सवैया ॥
पांइ गहे हम ने तुमरे तब ते कोइ
आंख तरे नहीं आन्यो ॥ राम
रहीम पुरान कुरान अनेक कहैं
मत एक न मान्यो ॥ सिम्रत
शास्त्र बेद सबै बहु भेद कहैं
हम एक न जान्यो ॥ श्री असिपान
क्रिपा तुमरी करि मैं न कह्यो
सभ तोहि बखान्यो ॥ २९ ॥
दोहरा ॥ सगल दुआर कउ

छाडिकै गहिओ तुहारो दुआर ॥ बांहि गहे की लाज अस गोविंद दास तुहार ॥ २० ॥

रामकली महला ३ अनंदु

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

अनंदु भइआ मेरी माए सतिगुरू मैं पाइआ ॥ सतिगुरु त पाइआ सहज सेती मनि वजीआ वाधाईआ ॥ राग रतन परवार परीआ सबद गावण आईआ ॥ सबदो त गावहु हरी केरा मनि जिनी वसाइआ ॥ कहै नानकु अनंदु होआ सतिगुरू मै पाइआ ॥ १ ॥

ए मन मेरिआ तू सदा रहु हरि नाले ॥ हरि नालि रहु तू मंन मेरे दूख सभि विसारणा ॥ अंगीकारु ओहु करे तेरा कारज सभि सवारणा ॥ सभना गला समरथु सुआमी सो किउ मनहु विसारे ॥ कहै नानकु मंन मेरे सदा रहु हरि नाले ॥२॥ साचे साहिबा किआ नाही घरि तेरै॥ घरि त तेरै सभु किछु है जिसु देहि सु पावए ॥ सदा सिफति सलाह तेरी नामु मनि वसावए ॥ नामु जिन कै मनि वसिआ वाजे सबद घनेरे ॥

कहै नानकु सचे साहिब किस्रा नाही घरि तेरै ॥३॥ साचा नामु मेरा आधारो ॥ साचु नामु आधारु मेरा जिनि भुखा सभि गवाईआ ॥ करि सांति सुख मनि आइ वसिआ जिनि इछा सभि पुजाईआ ॥ सदा कुरबाणु कीता गुरू विटहु जिसदीआ एहि वडिआईआ ॥ कहै नानकु सुणहु संतहु सबदि धरहु पिआरो ॥ साचा नामु मेरा आधारो ॥४॥ वाजे पंच सबद तितु घरि सभागै॥ घरि सभागै सबद वाजे कला

जितु घरि धारीआ ॥ पंच दूत तुधु वसि कीते कालु कंटकु मारिआ ॥ धुरि करमि पाइआ तुधु जिन कउ सि नामि हरि कै लागे ॥ कहै नानकु तह सुखु होआ तितु घरि अनहद वाजे ॥५॥ अनंदु सुणहु वडभागीहो सगल मनोरथ पूरे॥पारब्रहमु प्रभु पाइआ उतरे सगल विसूरे ॥ दूख रोग संताप उतरे सुणी सची बाणी ॥ संत साजन भए सरसे पूरे गुर ते जाणी ॥ सुणते पुनीत कहते पवितु सतिगुरु रहिआ भरपूरे ॥

बिनवंति नानक गुर चरण लागे वाजे अनहद तूरे ॥ ४० ॥ १ ॥

मु दावणी महला ५ ॥

थाल विचि तिंनि वसतू पईओ सतु संतोखु वीचारो॥ अंमृत नामु ठाकुर का पइओ जिसका सभसु अधारो॥जे को खावै जे को भुंचै तिसका होइउधारो॥एहवसतु तजी नह जाई नितनित रखु उरिधारो॥ तम संसारु चरन लगि तरीऐ सभु नानक ब्रहम पसारो ॥ १ ॥

सलोक महला ५ ॥

तेरा कीता जातो नाही मैनो

जोगु कीतोई ॥ मै निरगुणिआरे को गुणु नाही आपे तरसु पइओई ॥ तरसु पइआ मिहरामति होई सतिगुर सजणु मिलिआ ॥ नानक नामु मिलै ता जीवां तनु मनु थीवै हरिआ ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ तिथै तू समरथु जिथै कोइ नाहि ॥ ओथै तेरी रख अगनी उदर माहि ॥ सुणि कै जम के दूत नाइ तेरै छडि जाहि ॥ भउजल बिखम असगाहु गुरसबदी पारि पाहि ॥ जिन कउ लगी पिआस अंमृतु सेई खाहि ॥ कलि महि

एहो पुंन गुणा गोविंद गाहि ॥ सभसै नो किरपाल समाले साहि साहि ॥ बिरथा कोइ न जाइ जि आवै तुधु आहि ॥ ९ ॥

सलोक महला ५ ॥

अंतरि गुरू अराधणा जिहवा जपि गुर नाउ ॥ नेत्री सतिगुर पेखणा स्रवणी सुनणा गुर नाउ ॥ सतिगुर सेती रतिआ दरगह पाईऐ ठाउ ॥ कहु नानक किरपा करे जिसनो एह वथु देह ॥ जग महि उतम काढीअहि विरले केई केइ ॥ १ ॥

महला ५ ॥

रखे रखणहारि आपि उबारिअनु ॥ गुर की पैरी पाइ काज सवारिअनु ॥ होआ आपि दइआलु मनहु न विसारिअनु ॥ साध जना कै संगि भवजलु तारिअनु ॥ साकत निंदक दुसट खिन माहि बिदारिअनु ॥ तिसु साहिब की टेक नानक मनै माहि ॥ जिसु सिमरत सुखु होइ सगले दूख जाहि ॥ २ ॥

❀ अरदास ❀

१ ओ श्री वाहिगुरू जी की फतहि ॥

श्री भगौती जी सहाइ ॥

वार श्री भगौती जी की पातशाही १० ॥

प्रथम भगौती सिमरि कै गुर नानक लईं धिआइ ॥ फिर अंगद गुर ते अमरदासु रास दासै होईं सहाइ ॥ अरजन हरगोबिंद नो सिमरो श्री हरिराइ ॥ श्री हरि कृशन धिआईऐ जिस डिठे सभि दुखि जाइ ॥ तेग बहादर सिमरीऐ घर नउ निधि आवै धाइ। सभ थाईं होइ सहाइ। दसवा पातशाह श्री गुरू गोबिंद सिंह महाराज जी ! सब थांई होइ सहाइ।दसों सतगुरुओ के ज्योति स्वरूप श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी के पाठ व दर्शन का ध्यान धर कर बोलो जी वाहिगुरू!पांच प्यारों, चार गुरू कुमारो, चालीस मुक्तो,

हठी-जपी-तपियों, जिन्हों ने नाम जपा, बांट खाया, देग चलाई, तेग चलाई, देख कर अडीठ किया, उन प्रेमी सत्य वादियो की पवित्र कमाई का ध्यान धर कर खालसा जी ! बोलो जी वाहिगुरू !

जिन सिह सिहनियो ने धरम पर बलि-दान दिये अंग अंग कटवाए, सिर की खोपरियाँ उतरवाईं, चर्खियो पर चड़ाए गये, कर्वत्त से तन चिरवाए, गुरदवारो के सुधार और पवित्रता के निमित्त शहीद हुए, धरम नही छोड़ा सिख धरम का केशों तथा प्राणों सहित पालिन किया। उनकी कृत्य कमाई का ध्यान धर कर खालसा जी ! बोलो जी वाहिगुरू।

चारो तखतों, समूह गुरदवारों का ध्यान धर कर बोलो जी वाहिगुरू !

प्रथमे सर्व खालसा जी की अरदास है जी

सर्व खालसा जी को वाहिगुरू, वाहिगुरू, वाहिगुरू चित आवै, चित्त में आने से सर्व सुख हो, जहां जहाँ खालसा जी साहिब, तहां तहां रक्षा रियात, देग तेग फतह, बिरद की लाज पन्थ की जीत, श्री साहिब जी सहाय, खालसा जी का बोल बाला हो, बोलो जी वाहिगुरू !!!

सिखो का मन नम्र, मति ऊंची मति का रक्षक स्वयं वाहिगुरू। हे निःमानों के सम्मान, निःत्राणो के त्राण, निःओटों की ओट, निरासरयो के आसरे, सच्चे पिता वाहिगुरू आप की सेवा मे................ की प्रार्थना है।

अक्षर लग मात्र भूल चूक माफ करना सर्व के कार्य सिद्ध हों उन प्रेमियो का मिलाप हो जिनके मिलने से चित में तेरे नाम का निवास हो।

नानक नाम चढ़दी कला ॥
तेरे भाणे सर्वत का भला ॥

※—※

❀ सोहिला ❀

रागु गउड़ी दीपकी महला १ ॥

ੴ सतिगुरप्रसादि ॥

जै घरि कीरति आखीऐ करते का होइ बीचारो ॥ तितु घरि गावहु सोहिलासिवरिहुसिरजणहारो॥१॥ तुम गावहु मेरे निरभउका सोहिला ॥ हउ वारी जितु सोहिलै सदा सुखु होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नित नित जीअड़े समालीअनि देखैगा देवणहारु ॥ तेरे दानै कीमति ना पव तिसु दाते कवणु सुमारु ॥२॥ संबति साहा लिखिआ मिलि

करि पावहु तेलु ॥ देहु सजण असीसड़ीआ जिउहोवै साहिबसिउ मेलु ॥३॥घरिघरिएहो पहुचासदड़े नित पवंनि ॥ सदणहारा सिमरीऐ नानक से दिह आवंनि ॥४॥१॥

रागु आसा महला १ ॥

छिअघरिछिअगुरछिअउपदेस ॥गुरु गुरु एको वेस अनेक॥१॥बाबा जै घरिकरते कीरति होइ॥सो घरुराखु वडाई तोइ ॥१॥ रहाउ ॥ विसुए चसिआ घड़ीआ पहरा थितीवारी माहुहोआ॥सूरजुएकोरुति अनेक॥ नानक करते के केते वेस ॥२॥२॥

रागु धनासरी महला १ ॥

गगन मै थालु रवि चंदु दीपक बने तारिका मंडल जनक मोती ॥ धूपु मलआनलो पवणु चवरो करे सगल बनराइ फूलंत जोती ॥ १ ॥ कैसी आरती होइ भवखंडना तेरी आरती ॥ अनहता सबद वाजंत भेरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सहस तव नैन नन नैन हहि तोहि कउ सहस मूरति नना एक तोही ॥ सहस पद बिमल नन एक पद गंध बिनु सहस तव गंध इव चलत मोही ॥ २ ॥ सभ महि जोति जोति है सोइ ॥ तिस दै चानणि सभ महि चानणु

होइ॥गुरसाखी जोति परगटु होइ॥
जोतिसु भावै सु आरती होइ ॥३॥
हरि चरण कवल मकरंद लोभित
मनो अनदिनुो मोहि आही पिआसा॥
क्रिपा जलु देहि नानक सारिंगकउ
होइ जाते तेरै नाइ वासा॥४॥३॥

रागु गउड़ी पूरबी महला ४ ॥

कामि क्रोधि नगरु बहु भरिआ मिलि
साधू खंडल खंडा हे॥पूरबि लिखत
लिखे गुरु पाइआ मनि हरि लिव मंडल
मंडा हे॥१॥करि साधू अंजुली पुनु
वडा हे॥करि डंडउत पुनु वडा हे॥१॥
रहाउ॥साकत हरि रस सादु न जाणिआ

तिन अंतरि हउमै कंडा हे॥ जिउ जिउ चलहि चुभै दुखु पावहि जमकालु सहहि सिरि डंडा हे॥२॥ हरि जन हरि हरि नामि समाणे दुखु जनम मरण भवखंडा हे॥ अबिनासी पुरखु पाइआ परमेसरु बहु सोभ खंड ब्रहमंडा हे॥३॥ हम गरीब मसकीन प्रभ तेरे हरि राखु राखु वड वडा हे॥ जन नानक नामु अधारु टेक है हरि नामे ही सुखु मंडा हे॥४॥४॥

रागु गउड़ी पूरबी महला ५ ॥

करउ बेनंती सुणहु मेरे मीता संत टहल की बेला॥ ईहा खाटि चलहु

हरिलाहा आगै बसनु सुहेला ॥१॥
अउध घटै दिनसु रैणारे ॥ मन
गुरमिलि काज सवारे ॥१॥रहाउ॥
इहु संसारु बिकारु संसे महितरिओ
ब्रहम गिआनी ॥ जिसहि जगाइ
पीआव इहु रसु अकथ कथा तिनि
जानी ॥ २ ॥ जाकउ आए सोई
बिहाझहु हरिगुरतेमनहि बसेरा ॥
निज घरि महलु पावहु सुख सहजे
बहुरिनहोइगोफेरा॥३॥अंतरजामी
पुरख बिधाते सरधा मन की पूरे ॥
नानक दासु इहै सुखु मागै मोकउ
करि संतन की धूरे ॥ ४ ॥ ५ ॥

बारह माहा

मांझ महला ५ घरु ४ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

किरति करमके वीछुड़े करिकिरपा मेलहु राम ॥ चारि कुंट दहदिस भ्रमे थकि आए प्रभ की साम॥धेनु दुधै ते बाहरी कितै न आवै काम ॥ जलु बिनु साख कुमलावती उपजहि नाही दाम ॥ हरि नाह न मिलीऐ साजनै कत पाईऐ बिसराम ॥ जितु घरि हरि कंतु न प्रगटई भठि नगर से ग्राम ॥ स्रब सीगार तंबोल रस सणु देही सभ

खाम॥ प्रभ सुआमी कंत विहूणीआ मीत सजण सभि जाम ॥ नानक की बेनंतीआ करि किरपा दीजै नामु ॥ हरि मेलहु सुआमी संगि प्रभ जिसका निहचल धाम ॥१॥

चेति गोविंदु अराधीऐ होवै अनंदु घणा ॥ संत जना मिलि पाईऐ रसना नामु भणा ॥ जिनि पाइआ प्रभु आपणा आए तिसहि गणा॥इकु खिनु तिसु बिनु जीवणा बिरथा जनमु जणा ॥ जलि थलि महीअलि पूरिआ रविआ विचि वणा ॥ सो प्रभु चिति न आवई

कितड़ा दुखु गणा॥जिनी रावित्रा सो प्रभू तिंना भागु मणा ॥ हरि दरसन कउ मनु लोचदा नानक पिआस मना ॥ चेति मिलाए सो प्रभू तिस कै पाइ लगा ॥ २ ॥

वैसाखि धीरनि किउ वाढीआ जिना प्रेम बिछोहु ॥ हरि साजनु पुरखु विसारिकै लगी माइआधोहु ॥ पुत्र कलत्र न संगि धना हरि अविनासी ओहु ॥ पलचि पलचि सगली मुई झूठै धंधै मोहु ॥ इकसु हरिके नाम बिनु अगै लईअहि खोहि॥दयु विसारि विगुचणा प्रभ

बिनु अवरु न कोइ॥ प्रीतम चरणी जो लगे तिनकी निरमल सोइ ॥ नानक की प्रभ बेनती प्रभ मिलहु परापति होइ ॥ वैसाखु सुहावा तां लगै जा संतु भेटै हरि सोइ ॥३॥

हरि जेठि जुड़ंदा लोड़ीऐ जिसु अगै सभि निवंनि ॥ हरि सजण दावणि लगिआ किसै न देई बंनि ॥माणक मोती नामु प्रभ उन लगै नाही संनि ॥ रंग सभे नाराइणै जेते मनि भावंनि॥ जो हरि लोड़े सो करे सोई जीअ करंनि॥जो प्रभि कीते आपणे सेई कहीअहि धंनि॥

आपण लीआ जे मिलै विछुड़ि किउ रोवंनि ॥ साधू संगु परापते नानक रंग माणंनि ॥ हरि जेठु रंगीला तिसु धणी जिसकै भागु मथंनि ॥४॥ आसाड़ु तपंदा तिसु लगै हरि नाहु न जिना पासि॥जग जीवन पुरखु तिआगि कै माणस संदी आस ॥ दुयै भाइ विगुचीऐ गलि पईसु जम की फास ॥ जेहा बीजै सो लुणै मथै जो लिखिआसु ॥ रैणि विहाणी पछुताणी उठि चली गई निरास ॥ जिनकौ साधू भेटीऐ सो दरगह होइ खलासु ॥

करि किरपा प्रभ आपणी तेरे दरसन होइ पिआस ॥ प्रभ तुधु बिनु दूजाको नही नानककी अरदासि ॥ आसाड़ु सुहंदा तिसु लगै जिसु मनि हरि चरण निवास॥५॥

सावणि सरसी कामणी चरन कमल सिउ पिआरु ॥ मनु तनु रता सच रंगि इको नामु अधारु ॥ बिखिआ रंगि कूड़ाविआ दिसनि सभे छारु ॥ हरि अंमृत बूंद सुहावणी मिलि साधू पीवणाहारु॥ वणु तिणु प्रभ संगि मउलिआ संम्रथ पुरख अपारु ॥ हरि मिलणै

नो मनु लोचदा करमि मिलावणहारु ॥ जिनी सखीए प्रभु पाइआ हंउ तिनकै सदबलिहार ॥ नानक हरिजी मइआ करिसबदि सवारणहारु ॥ सावणु तिना सुहागणी जिन राम नाम उरिहारु ॥ ६ ॥

भादुइ भरमि भुलाणीआ दूजै लगा हेतु॥ लख सीगार बणाइआ कारजि नाही केतु ॥ जितु दिनि देह बिनससी तितु वेलै कहसनि प्रेतु ॥ पकड़ि चलाइनि दूत जम किसै न देनी भेतु ॥ छडि खड़ोते खिनै माहि जिन सिउ लगा

हेतु॥हथ मरोड़ै तनु कपे सिआहहु होआ सेतु ॥ जेहा बीजै सो लुणै करमा संदड़ा खेतु ॥ नानक प्रभ सरणागती चरण बोहिथ प्रभ देतु ॥ से भादुइ नरकि न पाईअहि गुरु रखण वाला हेतु ॥ ७ ॥

असुनि प्रेम उमाहड़ा किउ मिलीऐ हरि जाइ ॥ मनि तनि पिआस दरसन घणी कोई आणि मिलावै माइ ॥ संत सहाई प्रेम के हउ तिनकै लागा पाइ ॥ विणु प्रभ किउ सुखु पाईऐ दूजी नाही जाइ॥ जिन्नी चाखिआ प्रेम रसु से

तृपति रहे आघाइ ॥ आपु तिआगि बिनती करहि लेहु प्रभू लड़िलाइ॥जोहरि कंति मिलाईआ सि विछुड़ि कतहि न जाइ ॥ प्रभविणु दूजा को नही नानक हरि सरणाइ ॥ असू सुखी वसंदीआ जिना मइआ हरि राइ ॥ ८ ॥

कतकि करम कमावणे दोसु न काहू जोगु ॥ परमेसर ते भुलिआं विआपनि सभे रोग ॥ वेमुख होए राम ते लगनि जनम विजोग ॥ खिन महि कउड़े होइ गए जितड़े माइआ भोग ॥ विचु न कोई करि

सकै किसथै रोवहि रोज ॥ कीता किछू न होवई लिखिआ धुरि संजोग ॥ वडभागी मेरा प्रभु मिलै तां उतरहि सभि बिओग ॥ नानक कउ प्रभ राखि लेहि मेरे साहिब बंदी मोच ॥ कतिक होवै साध संगु बिनसहि सभे सोच ॥ ६ ॥

मंघिरि माहि सोहंदीआ हरि पिर संगि बैठड़ीआह ॥ तिनकी सोभा किआ गणी जि साहिबि मेलड़ीआह ॥ तनु मनु मउलिआ राम सिउ संगि साध सहेलड़ीआह

॥ साध जना ते बाहरी से रहनि इकेलड़ीआह ॥ तिन दुखु न कबहू उतरै से जम कै वसि पड़ीआह ॥ जिनी राविआ प्रभु आपणा से दिसनि नित खड़ीआह ॥ रतन जवेहर लाल हरि कंठि तिना जड़ीआह ॥ नानक बांछै धूड़ि तिन प्रभ सरणी दरि पड़ीआह ॥ मंघिरि प्रभु आराधणा बहुड़ि न जनमड़ीआह ॥ १० ॥

पोखि तुखारु न विआपई कंठि मिलिआ हरि नाहु ॥ मनु बेधिआ चरनारबिंद दरसनि लगड़ा

साहु ॥ ओट गोविंद गोपाल राइ सेवा सुआमी लाहु॥बिखिआपोहि न सकई मिलि साधू गुण गाहु ॥ जह ते उपजी तह मिली सची प्रीति समाहु ॥ कर गहि लीनी पारब्रहमि बहुड़ि न विछुड़ी आहु ॥ बारि जाउ लख बेरीआ हरि सजणु अगम अगाहु ॥ सरम पई नाराइणै नानक दरि पईआहु ॥ पोखु सुहंदा सरब सुख जिसु बखसे वेपरवाहु ॥ ११ ॥

माघि मजनु संगि साधूआ धूड़ी करि इसनानु ॥ हरि का

नामु धिआइ सुणि सभना नो करि दानु ॥ जनम करम मलु उतरै मनते जाइ गुमानु ॥ कामि करोधि न मोहीऐ बिनसै लोभु सुआनु ॥ सचै मारगि चलदिआ उसतति करे जहानु ॥ अठसठि तीरथ सगल पुंन जीअ दइआ परवानु ॥ जिसनो देवै दइआ करि सोई पुरखु सुजानु ॥ जिना मिलिआ प्रभु आपना नानक तिन कुरबानु ॥ माघि सुचेसे कांढीअहि जिन पूरा गुरु मिहरवानु ॥१२॥

फलगुणि अनंद उपारजना हरि

सजण प्रगटे आइ ॥ संत सहाई
राम के करि कृपा दीआ मिलाइ ॥
सेज सुहावी सरब सुख हुणि दुखा
नाही जाइ ॥ इछ पुनी वडभागणी
वरु पाइआ हरि राइ ॥ मिलि
सहीआ मंगलु गावही गीतगोविंद
अलाइ ॥ हरि जेहा अवरु न
दिसई कोई दूजा लवै न लाइ ॥
हलतु पलतु सवारिओनु निहचल
दितीअनु जाइ ॥ संसार सागर ते
रखिअनु बहुड़ि न जनमै धाइ ॥
जिहवा एक अनेक गुण तरे नानक
चरणी पाइ ॥ फलगुणि नित

जीअ बसावै ॥ ताकी महिमा गनी न आवै॥कांखी एकै दरस तुहारो॥ नानक उन संगि मोहि उधारो॥१॥ सुखमनी सुख अंमृत प्रभ नामु ॥ भगतजनाकै मनि बिस्राम॥रहाउ॥ प्रभकै सिमरनि गरभि न बसै ॥ प्रभकै सिमरनि दूखु जमु नसै ॥ प्रभकै सिमरनि कालु परहरै॥ प्रभ कै सिमरनि दुसमनु टरै ॥ प्रभ सिमरत कछु बिघनु न लागै॥प्रभकै सिमरनि अनदिनु जागै ॥ प्रभकै सिमरनिभउनबिआपै॥प्रभकै सिम-रनि दुखु न संतापै॥प्रभकासिमरनु

साधकै संगि॥ सरब निधान नानक
हरिरंगि॥२॥प्रभकै सिमरनि रिधि
सिधि नउनिधि ॥ प्रभकै सिमरनि
गिआनु धिआनु ततु बुधि ॥ प्रभकै
सिमरनिजपतपपूजा॥प्रभकैसिमरनि
बिनसै दूजा॥प्रभकैसिमरनि तीरथ
इसनानी ॥ प्रभकै सिमरनि दरगह
मानी॥प्रभकै सिमरनिहोइ सु भला
॥ प्रभकै सिमरनि सुफल फला ॥
से सिमरहि जिन आपि सिमराए॥
नानक ताकै लागउ पाए ॥३॥ प्रभ
का सिमरनु सब ते ऊचा ॥ प्रभकै
सिमरनि उधरे मूचा ॥ प्रभकै सिम-

रनि तृसना बुझै॥ प्रभकै सिमरनि सभु किछु सुझै॥ प्रभ कै सिमरनि नाही जम त्रासा॥ प्रभकै सिमरनि पूरन आसा॥ प्रभकै सिमरनि मन की मलु जाइ॥ अंमृत नामु रिद माहि समाइ॥ प्रभ जी बसहि साध की रसना॥ नानक जन का दासनि दसना॥४॥

प्रभ कउ सिमरहि से धनवंते॥ प्रभ कउ सिमरहि से पतिवंते॥ प्रभ कउ सिमरहि से जन परवान॥ प्रभकउ सिमरहि से पुरख प्रधान॥ प्रभ कउ सिमरहि सि बेमुहताजे॥

प्रभकउ सिमरहि सि सरबके राजे॥
प्रभ कउ सिमरहि से सुखवासी ॥
प्रभकउ सिमरहि सदा अबिनासी॥
सिमरनतेलागेजिन आपिदइआला
॥नानक जनकी मंगै रवाला ॥५॥
प्रभ कउ सिमरहि से परउपकारी॥
प्रभकउ सिमरहितिनसदबलिहारी॥
प्रभ कउ सिमरहि से मुख सुहावे ॥
प्रभकउसिमरहितिन सूखिबिहावै॥
प्रभकउ सिमरहितिनआतमुजीता॥
प्रभकउ सिमरहितिननिरमलरीता॥
प्रभकउ सिमरहि तिन अनदघनेरे॥
प्रभकउ सिमरहि बसहि हरि नेरे॥

संत कृपा ते अन दिनु जागि ॥
नानक सिमरनु पूरै भागि ॥६॥
प्रभ कै सिमरनि कारज पूरे ॥
प्रभ कै सिमरनि कबहु न झूरे ॥
प्रभकै सिमरनि हरि गुन बानी ॥
प्रभकै सिमरनि सहजि समानी ॥
प्रभकै सिमरनि निहचल आसनु ॥
प्रभकै सिमरनि कमल बिगासनु ॥
प्रभकै सिमरनि अनहद झुनकार॥
सुखुप्रभ सिमरन का अंतु न पार॥
सिमरहिसेजनजिनकउ प्रभमइआ॥
नानक तिनजन सरनी पइआ॥७॥
हरि सिमरनु करि भगत प्रगटाए॥

हरि सिमरनि लगि बेद उपाए ॥
हरिसिमरनि भए सिध जती दाते॥
हरिसिमरनि नीच चहुकुंट जाते॥
हरि सिमरनि धारी सभ धरना ॥
सिमरि सिमरि हरि कारन करना॥
हरिसिमरनिकीओ सगलअकारा॥
हरिसिमरनि महिआपिनिरंकारा॥
करिकृपा जिसु आपि बुझाइआ ॥
नानक गुरमुखि हरि सिमरनु
तिनि पाइआ ॥ ८ ॥ १ ॥

सलोकु ॥ दीन दरद दुख
भंजना घटि घटि नाथ अनाथ ॥
सरणितुमारी आइओ नानककेप्रभ

साथ ॥१॥ असटपदी ॥ जह मात पिता सुत मीत न भाई॥मन ऊहा नामु तेरै संगि सहाई ॥ जह महा भइआन दूत जम दलै ॥ तह केवल नामु संगि तेरै चलै॥ जह मुसकल होवै अति भारी ॥ हरि को नामु खिन माहि उधारी ॥ अनिक पुनह चरन करत नही तरै ॥ हरि को नामु कोटि पाप परहरै ॥ गुरमुखि नामु जपहु मनमेरे ॥ नानक पावहु सूख घनेरे ॥१॥ सगल सृसटि को राजा दुखीआ॥हरिका नामु जपत होइ सुखीआ॥ लाख करोरी बंधुन

परै ॥हरिका नामु जपत निसतरै ॥
अनिकमाइआरंग तिख न बुझावै॥
हरि का नामु जपत आघावै ॥
जिह मारगि इहु जात इकेला॥ तह
हरि नामु संगि होत सुहेला ॥
ऐसा नामु मन सदा धिआईऐ ॥
नानकगुरमुखिपरमगतिपाईऐ॥२॥
छूटत नही कोटि लख बाही ॥
नामु जपत तह पारि पराही ॥
अनिक बिघन जह आइ संघारै ॥
हरि का नामु ततकाल उधारै ॥
अनिक जोनि जनमै मरि जाम ॥
नामु जपत पावै बिस्राम ॥

हउ मैला मलु कबहु न धोवै ॥
हरि का नामु कोटि पाप खोवै ॥
ऐसा नामु जपहु मन रंगि ॥
नानक पाईऐ साध कै संगि ॥३॥
जिह मारग के गने जाहि न कोसा ॥
हरि का नामु ऊहा संगि तोसा ॥
जिह पैडै महा अंध गुबारा ॥
हरि का नामु संगि उजीआरा ॥
जहा पंथि तेरा को न सिञानू ॥
हरि का नामु तह नालि पछानू ॥
जह महा भइआन तपति बहु घाम ॥
तह हरि के नाम की तुम ऊपरि छाम ॥
जहा तृखा मन तुझु आकरखै ॥ तह

नानक हरिहरि अंमृतु बरखै ॥४॥
भगत जना की बरतनि नामु॥ संत
जना कै मनि बिस्रामु ॥ हरि का
नामु दास की ओट॥ हरि कै नामि
उधरे जन कोटि ॥ हरि जसु करत
संत दिनु राति॥ हरि हरि अउखधु
साध कमाति ॥ हरि जन कै हरि
नामुनिधानु॥पारब्रहमि जन कीनो
दान॥ मनतन रंगि रते रंग एकै॥
नानकजनकैबिरतिबिबेकै॥५॥हरि
का नामु जन कउ मुकति जुगति॥
हरिकैनामिजनकउ तृपति भुगति॥
हरि का नामु जन का रूप रंगु ॥

हरि नामु जपत कछु परै न भंगु॥
हरि का नामु जन की वडिआई ॥
हरि कै नामि जन सोभा पाई ॥
हरि का नामु जनकउ भोग जोग॥
हरिनामु जपत कछु नाहि बिओगु॥
जनु राता हरि नाम की सेवा ॥
नानक पूजै हरि हरि देवा ॥ ६ ॥
हरि हरि जनकै मालु खजीना ॥
हरिधनु जनकउ आपि प्रभि दीना॥
हरि हरि जनकै ओट सताणी ॥
हरि प्रतापि जन अवरु न जाणी॥
ओति पोति जन हरि रस राते ॥
सुंन समाधि नाम रस माते ॥

आठ पहर जनु हरि हरि जपै ॥
हरि का भगतु प्रगट नही छपै ॥
हरिकी भगति मुकति बहु करे ॥
नानक जन संगि केते तरे ॥ ७ ॥
पारजातु इहु हरि को नाम ॥
कामधेन हरि हरि गुण गाम ॥
सभ ते ऊतम हरि की कथा ॥
नामु सुनत दरद दुख लथा ॥
नाम की महिमा संत रिद वसै ॥
संत प्रतापि दुरतु सभु नसै ॥
संत का संगु वडभागी पाईऐ ॥
संत की सेवा नामु धिआईऐ ॥
नाम तुलि कछु अवरु न होइ ॥

नानक गुरमुखि नामु पावै जनु कोई ॥ ८ ॥ २ ॥

सलोकु ॥ बहु सासत्र बहु सिम्रिती पेखे सरब ढढोलि ॥ पूजसि नाही हरि हरे नानक नाम अमोल ॥ १ ॥

असटपदी ॥

जाप ताप गिआन सभि धिआन ॥
खट सासत्र सिम्रिति वखिआन ॥
जोग अभिआस करम ध्रम किरिआ ॥
सगल तिआगि बन मधे फिरिआ ॥
अनिक प्रकार कीए बहु जतना ॥
पुंन दान होमे बहु रतना ॥
सरीरु कटाइ होमै करि राती ॥

वरत नेम करै बहु भाती ॥ नही
तुलि राम नाम बीचार ॥ नानक
गुरमुखि नामु जपीऐइकबार॥१॥
नउखंड पृथवी फिरै चिरु जीवै ॥
महा उदासु तपीसरु थीवै ॥
अगनि माहि होमत परान ॥
कनिक अस्व हैवर भूमि दान ॥
निउली करम करै बहु आसन ॥
जैन मारग संजम अति साधन ॥
निमख निमख करि सरीरु कटावै॥
तउ भी हउमै मैलु न जावै ॥ हरि
के नाम समसरि कछु नाहि॥नानक
गुरमुखिनामुजपतगतिपाहि ॥२॥

मन कामना तीरथ देह छुटै॥ गरबु गुमानु न मन ते हुटै ॥ सोच करै दिनसु अरु राति॥ मन की मैलु न तन ते जाति ॥ इसु देही को बहु साधना करै॥ मन ते कबहु न बिखिआ टरै॥ जलि धोवै बहु देह अनीति॥ सुध कहा होइ काची भीति॥ मन हरि के नाम की महिमा ऊच ॥ नानक नामि उधरे पतित बहु मूच॥३॥ बहुतु सिआनप जम का भउ बिआपै॥ अनिक जतन करि तृसन न ध्रापै॥ भेख अनेक अगनि नही बुझै ॥ कोटि उपाव दरगह नही सिझै ॥

ता नदरी सतिगुरु पाइआ ॥
एहु जीउ बहुते जनम भरंमिआ
ता सतिगुरि सबदु सुणाइआ ॥
सतिगुर जेवडु दाता को नही
सभि सुणिअहु लोक सबाइआ ॥
सतिगुरि मिलिऐ सचु पाइआ ॥
जिन्ही विचहु आपु गवाइआ ॥
जिनि सचो सचु बुझाइआ ॥४॥

बिलावलु महला ५ ॥

मू लालन सिउ प्रीति बनी ॥ रहाउ ॥
तोरी न तूटै छोरी न छूटै ऐसी माधउ खिंच तनी ॥१॥ दिन सु रैणि मन माहि वसतु है तू करि किरपा प्रभ अपनी॥२॥ बलि बलि जाउ सिआम सुंदर

कउ अकथ कथा जाकी बात सुनी ॥३॥ जन नानक दासनि दासु कहीअत है मोहि करहु कृपा ठाकुर अपुनी ॥ ४ ॥

आसा महला ४ ॥

गुरमुखि ढूंढि ढूढेदिआ हरि सजणु लधा राम राजे॥कंचन काइआ कोट गड़ विचि हरि हरि सिधा ॥ हरि हरि हीरा रतनु है मेरा मनु तनु विधा ॥ धुरि भाग वडे हरि पाइआ नानक रसि गुधा ॥१॥

सलोकम०१॥घड़ीआसभेगोपीआ पहर कंन्ह गोपाल ॥ गहणे पउणु पाणी बैसंतरु चंदु सूरजु अवतार ॥ सगली धरती मालु धनु वरतणि सरब जंजाल ॥ नानक मुसै गिआन विहूणी खाइ

गइआ जमकालु ॥ १ ॥ म० १ ॥
वाइनि चेले नचनि गुर ॥
पैर हलाइनि फेरनि सिर ॥
उडि उडि रावा झाटै पाइ ॥
वेखै लोकु हसै घरि जाइ ॥
रोटीआ कारणि पूरहि ताल ॥
आपु पछाड़हि धरती नालि ॥
गावनि गोपीआ गावनि कान्ह ॥
गावनि सीता राजे राम ॥
निरभउ निरंकारु सचु नामु ॥
जा का कीआ सगल जहानु ॥
सेवक सेवहि करमि चड़ाउ ॥
भिंनी रैणि जिन्हा मनि चाउ ॥

सिखी सिखिआ गुर वीचारि ॥
नदरी करमि लघाए पारि ॥
कोलू चरखा चकी चकु ॥
थल वारोले बहुतु अनंतु ॥
लाटू माधाणीआ अनगाह ॥
पंखी भउदीआ लैणि न साह ॥
सूऐ चाड़ि भवाईअहि जंत ॥
नानक भउदिआ गणत न अंत ॥
बंधन बंधि भवाए सोइ ॥ पइऐ
किरति नचै सभु कोइ॥ नचि नचि
हसहि चलहि से रोइ ॥ उडि न
जाही सिध न होहि॥ नचणु कुदणु
मन का चाउ ॥ नानक जिन्ह मनि

भउ तिन्हा मनि भाउ॥२॥पउड़ी॥ नाउ तेरा निरंकारु है नाइ लइऐ नरकि न जाईऐ॥ जीउ पिंडु सभु तिसदा दे खाजै आखि गवाईऐ॥ जे लोड़हि चंगा आपणा करि पुंनहु नीचु सदाईऐ॥ जे जरवाणा परहरै जरु वेस करेदी आईऐ॥ को रहै न भरीऐ पाईऐ॥ ५॥

राग गउड़ी पूरबी महला ५॥

कवन गुन प्रान पति मिलउ मेरी माई॥ १॥ रहाउ॥ रूप हीन बुधि बल हीनी मोहि परदेसनि दूर ते आई॥१॥ नाहन दरबु न जोबनि माती मोहि

अनाथ की करहु समाई ॥ २ ॥ खोजत खोजत भई बैरागनि प्रभ दरसन कउ हउ फिरत तिसाई ॥ ३ ॥ दीन दइआल कृपाल प्रभ नानक साध संगि मेरी जलनि बुझाई ॥ ४ ॥ १ ॥

पंथु दसावा नित खड़ी मुंध जोबनि बाली राम राजे ॥ हरि हरि नामु चेताइ गुर हरि मारगि चाली ॥ मेरै मनि तनि नामु आधारु है हउमै बिखु जाली ॥ जन नानक सतिगुरु मेलि हरि हरि मिलिआ बनवाली ॥ २ ॥

सलोक म० १ ॥

मुसलमाना सिफति सरीअति पड़ि पड़ि करहि बीचारु ॥ बंदे से जि पवहि विचि बंदी वेखण कउ दीदारु ॥ हिंदू सालाही

सालाहनि दरसनि रूपि अपारु ॥ तीरथि नावहि अरचा पूजा अगर वासु बहकारु ॥ जोगी सुनि धिआवनि्ह जेते अलख नासु करतारु ॥ सूखम मूरति नासु निरंजन काइआ का आकारु ॥ सतीआ मनि संतोखु उपजै देणै कै वीचारि ॥ दे दे मंगहि सहसा गूणा सोभ करे संसारु ॥ चोरा जारा तै कूड़िआरा खाराबा वेकार ॥ इकि होदा खाइ चलहि ऐथाऊ तिना भि काई कार ॥ जलि थलि जीआ पुरीआ

लोआ आकारा आकार ॥ ओह जि आखहि सु तूं है जाणहि तिना भि तेरी सार ॥ नानक भगता सुख सालाहणु सचु नामु आधारु ॥ सदा अनंदि रहहि दिनु राती गुणवंतिआ पाछारु ॥ ॥१॥ म० १ ॥ मिटी मुसलमान की पेड़ै पई कुम्निआर ॥ घड़ि भांडे इटा कीआ जलदी करे पुकार ॥ जलि जलि रोवै बपुड़ी झड़िझड़ि पवहि अंगिआर ॥ नानक जिनि करतै कारणु कीआ सो जाणै करतारु ॥ २ ॥

पउड़ी ॥

बिनु सतिगुर किनै न पाइओ बिनु सतिगुर किनै न पाइआ ॥ सतिगुर विचि आपु रखिओनु करि परगटु आखि सुणाइआ ॥ सतिगुर मिलिऐ सदा मुकतु है जिनि विचहु मोहु चुकाइआ ॥ उतमु एहु बीचारु है जिनि सचे सिउ चितु लाइआ ॥ जग जीवनु दाता पाइआ ॥ ६ ॥

रागु सूही असटपदीआ महला ४ ॥

कोई आणि मिलावै मेरा प्रीतमु पिआरा हउ तिसु पहि आपु वेचाई॥१॥ दरसनु हरि देखण कै ताई॥ कृपा करहि

ता सतिगुरु मेलहि हरिहरि नामु धिआई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जे सुखु देहि त तुझहि अराधी दुखि भी तुझै धिआई ॥२॥ जे भुख देहि त इतही राजा दुख विचि सुख मनाई ॥ ३ ॥ तनु मनु काटि काटि सभु अरपी विचि अगनी आपु जलाई ॥ ४ ॥ पखा फेरी पाणी ढोवा जो देवहि सो खाई ॥ ५ ॥ नानकु गरीबु ढहि पइआ दुआरै हरि मेलि लैहु वडिआई ॥ ६ ॥

गुरमुखि पिआरे आइ मिलु मै चिरी विछुने राम राजे ॥ मेरा मनु तनु वहुतु बैरागिआ हरि नैण रसि भिने ॥ मै हरि प्रभु पिआरा दसि गुरु मिलि हरि मनु मने ॥ हउ मूरखु कारै लाइआ नानक हरि कंम ॥ ३ ॥

सलोक म० १॥ हउ विचि आइआ

हउ विचि गइआ ॥ हउ विचि जंमिआ हउ विचि मुआ ॥ हउ विचि दिता हउ विचि लइआ ॥ हउ विचि खटिआ हउ विचि गइआ ॥ हउ विचि सचिआरु कूड़िआरु ॥ हउ विचि पाप पुंन वीचारु ॥ हउ विचि नरकि सुरगि अवतारु ॥ हउ विचि हसै हउ विचि रोवै ॥ हउ विचि भरीऐ हउ विचि धोवै ॥ हउ विचि जाती जिनसी खोवै ॥ हउ विचि मूरखु हउ विचि सिआणा ॥ मोख मुकति

की सार न जाणा ॥ हउ विचि माइआ हउ विचि छाइआ ॥ हउमै करि करि जंत उपाइआ ॥ हउमै बूझै त दरु सूझै ॥ गिआन विहूणा कथिकथि लूझै ॥ नानक हुकमी लिखीऐ लेखु ॥ जेहा वेखहि तेहा वेखु ॥ १ ॥ महला २ ॥ हउमै एहा जाति है हउमै करम कमाहि ॥ हउमै एई बंधना फिरि फिरि जोनी पाहि ॥ हउमै किथहु ऊपजै कितु संजमि इह जाइ ॥ हउमै एहो हुकमु है पइऐ

किरति फिराहि ॥ हउमै दीरघ रोगु है दारू भी इसु माहि ॥ किरपा करे जे आपणी त गुरका सबदु कमाहि ॥ नानकु कहै सुणहु जनहु इतु संजमि दुख जाहि॥२॥ पउड़ी ॥ सेव कीती संतोखीई जिन्ही सचो सचु धिआइआ ॥ ओन्ही मंदै पैरु न रखिओ करि सुकृतु धरमु कमाइआ ॥ ओन्ही दुनीआ तोड़े बंधना अंनु पाणी थोड़ा खाइआ ॥ तूं बखसीसी अगला नित देवहि चड़हिसवाइआ ॥ वडिआई वडा पाइआ ॥ ७ ॥

गउड़ी की वार महला ५ ॥ पउड़ी ३ ॥

अमृतु नामु निधानु है मिलि पीवहु भाई ॥ जिसु सिमरत सुखु पाईऐ सभ तिखा बुझाई ॥ करि सेवा पारब्रहम गुर भुख रहै न काई ॥ सगल मनोरथ पुंनिआ अमरा पदु पाई ॥ तुधु जेवडु तू है पारब्रहम नानक सरणाई ॥ ३ ॥

गुर अंमृत भिनी देहुरी अमृतु बुरके राम राजे॥जिना गुरबाणी मनि भाईआ अमृति छकि छके ॥ गुर तुठै हरि पाइआ चूके धक धके ॥ हरि जनु हरि हरि होइआ नानकु हरि इके ॥ ४ ॥

सलोक म० १ ॥

पुरखां बिरखां तीरथां तटां मेघां खेतांह ॥ दीपां लोआं मंडलां खंडां वरभंडांह ॥ अंडज जेरज उतभुजां

खाणी सेतजांह ॥ सो मिति जाणै नानका सरां मेरां जंताह ॥ नानक जंत उपाइकै संमाले सभनाह ॥ जिनि करतै करणा कीआ चिंता भि करणी ताह॥ तो करता चिंता करे जिनि उपाइआ जगु ॥ तिसु जोहारी सुअसति तिसु तिसु दीबाणु अभगु ॥ नानक सचे नाम बिनु किआ टिका किआ तगु ॥ १ ॥ म० १ ॥ लख नेकीआ चंगिआईआ लखु पुंना परवाणु ॥ लख तप उपरि तीरथां सहज जोग बेबाण ॥

लख सूरतण संगराम रण महि छुटहि पराण ॥ लख सुरती लख गिआन धिआन पड़ीअहि पाठ पुरान ॥ जिनि करतै करणा कीआ लिखिआ आवण जाणु ॥ नानक मती मिथिआ करमु सचा नीसाणु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सचा साहिबु एकु तूं जिनि सचो सचु वरताइआ ॥ जिसु तूं देहि तिसु मिलै सचु ता तिन्ही सचु कमाइआ ॥ सतिगुरि मिलिऐ सचु पाइआ जिन्ह कै हिरदै सचु वसाइआ ॥ मूरख

सचु न जाणन्ही मन मुखी जनमु गवाइआ ॥ विचि दुनीआ काहे आइआ ॥ ८ ॥

रामकली की वार महला ५ ॥

सलोक महला ५ ॥

जैसा सतिगुर सुणीदा तैसो ही मै डीठु॥ विछुड़िआ मेले प्रभू हरि दरगह का बसीठु ॥ हरि नामो मंत्रु द्रिड़ाइदा कटे हउमै रोगु ॥ नानक सतिगुरु तिना मिलाइआ जिना धुरे पइआ संजोगु ॥

आसा महला ४ ॥

हरि अमृत भगति भंडार है गुर सतिगुर पासे राम राजे ॥ गुरु सतिगुरु सचा साहु है सिख देइ हरि रासे ॥ धनु धंनु वणजारा वणजु है गुरु साहु साबासे ॥ जनु नानकु गुरु तिन्ही पाइआ

जिन धुरि लिखतु लिलाटि लिखासे ॥१॥

सलोकु म० १ ॥

पड़ि पड़ि गडी लदीअहि पड़ि पड़ि भरीअहि साथ ॥ पड़ि पड़ि बेड़ी पाईऐ पड़ि पड़ि गडीअहि खात ॥ पड़ीअहि जेते बरस बरस पड़ीअहि जेते मास ॥ पड़ीऐ जेती आरजा पड़ीअहिजेते सास॥ नानक लेखै इक गल होरु हउमै झखणा झाख॥१॥ म० १॥लिखि लिखि पड़िआ तेता कड़िआ ॥ बहु तीरथ भविआ तेतो लविआ॥ बहु भेख कीआ देही दुखु दीआ ॥

सहु वे जीआ अपणा कीआ ॥
अंनु न खाइआ सादु गवाइआ ॥
बहु दुखु पाइआ दूजा भाइआ ॥
बसत्र न पहिरै अहिनिसि कहरै ॥
मोनि विगूता किउ जागै गुर
बिनु सूता ॥ पग उपेताणा
अपणा कीआ कमाणा ॥ अलु
मलु खाई सिरि छाई पाई ॥
मूरखि अंधै पति गवाई ॥
विणु नावै किछु थाइ न पाई ॥
रहै बेबाणी मड़ी मसाणी ॥
अंधु न जाणै फिरि पछुताणी ॥
सतिगुरु भेटे सो सुखु पाए ॥

हरि का नामु मनि वसाए ॥
नानक नदरि करे सो पाए ॥
आस अंदेसे ते निहकेवलु
हउमै सबदि जलाए ॥ २ ॥
पउड़ी ॥ भगत तेरै मनि भावदे
दरि सोहनि कीरति गावदे ॥
नानक करमा बाहरे दरि ढोअ
न लहन्ही धावदे ॥ इकि मूलु
न बुझन्हि आपणा अणहोदा
आपु गणाइदे ॥ हउ ढाढी का
नीच जाति होरि उतम जाति
सदाइदे ॥ तिन्ह मंगा जि तुझै
धिआइदे ॥ ६ ॥

धनासरी महला ५ ॥

तुम दाते ठाकुर प्रतिपालक नाइक खसम हमारे ॥ निमख निमख तुमही प्रतिपालहु हम बारिक तुमरे धारे ॥१॥ जिहवा एक कवन गुन कहीऐ ॥ बेसुमार बेअंत सुआमी तेरो अंतु न किनही लहीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोटि पराध हमारे खंडहु अनिक बिधी समझावहु ॥ हम अगिआन अलप मति थोरी तुम आपन बिरदु रखावहु ॥ २ ॥ तुमरी सरणि तुमारी आसा तुमही सजण सुहेले ॥ राखहु राखनहार दइआला नानक घर के गोले ॥ ३ ॥

सचु साहु हमारा तूं धणी सभु जगतु वणजारा राम राजे ॥ सभ भांडे तुधै साजिआ विचि वसतु हरि थारा ॥ जो पावहि भांडे विचि वसतु सा निकलै किआ कोई करे वेचारा॥जन नानक कउ

हरि बखसिआ हरि भगति भंडारा ॥२॥

सलोकु म० १ ॥

कूड़ु राजा कूड़ु परजा कूड़ु सभु संसारु॥ कूड़ु मंडप कूड़ु माड़ी कूड़ु बैसणहारु ॥ कूड़ु सुइना कूड़ु रुपा कूड़ु पैन्हणहारु ॥ कूड़ु काइआ कूड़ु कपड़ु कूड़ु रूपु अपारु ॥ कूड़ु मीआ कूड़ु बीबी खपि होए खारु॥ कूड़ि कूड़ै नेहु लगा विसरिआ करतारु ॥ किसु नालि कीचै दोसती सभु जगु चलणहारु ॥ कूड़ु मिठा कूड़ु माखिओ कूड़ु डोबे पूरु॥नानकु वखाणै बेनती तुधु बाझु कूड़ो कूड़ु॥

१॥ म० १॥ सचु ता परु जाणीऐ जा रिदै सचा होइ ॥ कूड़ की मलु उतरै तनु करे हछा धोइ ॥ सचु ता परु जाणीऐ जा सचि धरे पिआरु ॥ नाउ सुणि मनु रहसीऐ ता पाए मोख दुआरु॥सचु ता परु जाणीऐ जा जुगति जाणै जीउ ॥ धरति काइआ साधि कै विचि देइ करता बीउ ॥ सचु ता परु जाणीऐ जा सिख सची लेइ ॥ दइआ जाणै जीअ की किछु पुंनु दानु करेइ ॥ सचु ता परु जाणीऐ जा आतम तीरथि करे निवासु ॥

सतिगुरू नो पुछिकै बहि रहै करे निवासु॥सचु सभना होइ दारू पाप कढै धोइ ॥ नानकु वखाणै बेनती जिन सचु पलै होइ ॥२॥ पउड़ी॥ दानु महिंडा तली खाकु जे मिलै त मसतकि लाईऐ ॥ कूड़ा लालचु छडीऐ होइ इक मनि अलखु धिआईऐ ॥ फलु तेवेहो पाईऐ जेवेही कार कमाईऐ ॥ जे होवै पूरबि लिखिआता धूड़ितिना दी पाईऐ॥मति थोड़ी सेव गवाईऐ ॥ १० ॥

सूही महला ५ ॥

किआ गुण तेरे सारि सम्हाली मोहि

निरगुन के दातारे।। बै खरीदु किआ करे चतुराई इहु जीउ पिंडु सभु थारे ।।१।। लाल रगीले प्रीतम मन मोहन तेरे दरसन कउ हम बारे ।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु दाता मोहि दीनु भेखारी तुम्ह सदा सदा उपकारे ।। सो किछु नाही जि मै ते होवै मेरे ठाकुर अगम अपारे ।। २ ।। किआ सेव कमावउ किआकहि रीझावउ बिधि कितु पावउ दरसारे ।। मिति नही पाईऐ अंतु न लहीऐ मनु तरसै चरनारे ।। ३ ।। पावउ दानु ढीठु होइ मागउ मुखि लागै संत रेनारे ।। जन नानक कउ गुरि किरपा धारी प्रभि हाथ देइ निसतारे ।। ४ ।। ६ ।।

हम किआ गुण तेरे विथरह सुआमी तूं अपर अपारो राम राजे ।। हरि नामु सालाहह दिनु राति एहा आस आधारो।।

हम मूरख किछूअ न जाणहा किव पावह पारो ॥ जनु नानकु हरि का दासु है हरि दास पनिहारो ॥ ३ ॥

सलोकु म० १ ॥

सचि कालु कूड़ु वरतिआ कलि कालख बेताल ॥ बीउ बीजि पति लै गए अब किउ उगवै दालि ॥ जे इकु होइ त उगवै रुती हू रुति होइ ॥ नानक पाहै बाहरा कोरै रंगु न सोइ॥ भै विचि खुंबि चड़ाईऐ सरमु पाहु तनि होइ ॥ नानक भगती जे रपै कूड़ै सोइ न कोइ ॥ १ ॥ म० १ ॥ लबु पापु दुइ राजा महता कूड़ु होआ

सिकदारु ॥ कामु नेबु सदि पुछीऐ
बहिबहि करे बीचारु॥अंधी रयति
गिश्रान विहूणी भाहि भरे मुर-
दारु।गिश्रानी नचहि वाजे वावहि
रूप करेहि सीगारु ॥ ऊचे कूकहि
वादा गावहि जोधा का वीचारु ॥
मूरख पंडित हिकमति हुजति
संजै करहि पिश्रारु ॥ धरमी धरमु
करहि गावावहि मंगहिमोखदुश्रारु
॥जती सदावहि जुगति न जाणहि
छडिबहहि घर बारु॥ सभु को पूरा
श्रापे होवै घटि न कोई श्राखै॥पति
परवाणा पिछै पाईऐ ता नानक

तोलिआ जापै ॥ २ ॥ म० १ ॥
वदी सु वजगि नानका सचा वेखै
सोइ ॥ सभनी छाला मारीआ
करता करे सु होइ ॥ अगै जाति
न जोरु है अगै जीउ नवे ॥
जिनकी लेखै पति पवै चंगे सेई
केइ ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ धुरि करमु
जिना कउ तुधु पाइआ ता तिनी
खसमु धिआइआ ॥ एना जंता
कै वसि किछु नाही तुधु वेकी
जगतु उपाइआ ॥ इकना नो तूं
मेलि लैहि इकि आपहु तुधु
खुआइआ॥गुर किरपाते जाणिआ

जिथै तुधु आपु बुझाइआ॥ सहजे ही सचि समाइआ ॥ ११ ॥

कलिआण महला ४ ॥

प्रभ कीजै कृपा निधान हम हरि गुन गावहगे ॥ हउ तुमरी करउ नित आस प्रभ मोहि कब गल लावहिगे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हम बारिक मुगध इआन पिता समझावहिगे ॥ सुतु खिनु खिनु भूलि बिगारि जगत पित भावहिगे ॥१॥ जो हरि स्वामी तुम देहु सोई हम पावहगे ॥ मोहि दूजी नाही ठउर जिसु पहि हम जावहगे ॥ २ ॥ जो हरि भावहि भगत तिना हरि भावहिगे ॥ जोती जोति मिलाइ जोति रलि जावहगे ॥ ३ ॥ हरि आपे होइ कृपाल आपि लिव लावहिगे ॥ जनु नानक सरनि

आतमा ॥ आतमा बासुदेवस्यि जे को जाणै भेउ॥ नानकु ताका दासु है सोई निरंजन देउ ॥ ४ ॥ म० १ ॥ कुंभे बधा जलु रहै जलु बिनु कुंभु न होइ ॥ गिआन का बधा मनु रहै गुर बिनु गिआनु न होइ॥५॥ पउड़ी॥ पड़िआ होवै गुनहगारु ता ओमी साधु न मारीऐ॥ जेहा घाले घालणा तेवेहो नाउ पचारीऐ ॥ ऐसी कला न खेडीऐ जितु दरगह गइआ हारीऐ ॥ पड़िआ अते ओमीआ वीचारु अगै वीचारीऐ ॥ मुहि

चलै सु अगै मारीऐ ॥ १२ ॥

सूही महला ५ ॥

भागठड़े हरि संत तुमारे जिन घरि धनु हरि नामा ॥ परवाणु गणी सेई इह आए सफल तिना के कामा ॥ १ ॥ मेरे राम हरि जन कै हउ बलि जाई ॥ केसा का करि चवरु ढुलावा चरण धूड़ि मुखि लाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जनम मरण दुहहू महि नाही जन परउपकारी आए ॥ जीअ दानु दे भगती लाइनि हरि सिउ लैनि मिलाए ॥ २ ॥ सचा अमरु सची पातिसाही सचे सेती राते ॥ सचा सुखु सची वडिआई जिस के से तिनि जाते ॥३॥ पखा फेरी पाणी ढोवा हरि जन कै पीसणु पीसि कमावा ॥ नानक की प्रभ पासि बेनंती तेरे जन देखणु पावा ॥ ४ ॥ ७ ॥ ५४ ॥

आसा महला ४ ॥

जिन मसतकि धुरि हरि लिखिआ तिना सतिगुरु मिलिआ राम राजे ॥ अगिआनु अंधेरा कटिआ गुर गिआनु घटि बलिआ ॥ हरि लधा रतनु पदारथो फिरि बहुड़ि न चलिआ॥जन नानक नामु आराधिआ आराधि हरि मिलिआ ॥ १ ॥

सलोकु म० १ ॥

नानक मेरु सरीर का इकु रथु इकु रथवाहु ॥ जुगु जुगु फेरि वटाईअहि गिआनी बुझहि ताहि ॥ सतिजुगि रथु संतोख का धरमु अगै रथवाहु ॥ त्रेतै रथु जतै का जोरु अगै रथवाहु ॥ दुआपुरि

रथु तपै का सतु अगै रथवाहु ॥ कलजुगि रथु अगनि का कूड़ु अगै रथवाहु ॥१॥ म० १ ॥ साम कहैसेतंबरु सुआमी सच महि आछै साचिरहे॥सभुको सचिसमावै॥रिगु कहै रहिआ भरपूरि ॥ राम नामु देवा महि सूरु ॥ नाइ लइऐ पराछ्त जाहि॥नानक तउमोखंतरु पाहि॥जुज महि जोरि छली चंद्रा-वलि कान्ह कृसनु जादमु भइआ ॥ पारजातु गोपी लै आइआ बिंद्राबन महि रंगु कीआ ॥ कलि महि बेदु अथरबणु हूआ

नाउ खुदाई अलहु भइआ ॥
नील बसत्र ले कपड़े पहिरे
तुरक पठाणी अमलु कीआ ॥
चारे वेद होए सचिआर ॥
पड़हि गुणहि तिन्ह चार वीचार॥
भाउ भगति करि नीचु सदाए ॥
तउ नानक मोखंतरु पाए ॥ २ ॥
पउड़ी ॥ सतिगुरु विटहु वारिआ
जितु मिलिऐ खसमु समालिआ
॥ जिनि करि उपदेसु
गिआन अंजनु दीआ इन्ही
नेत्री जगतु निहालिआ ॥
खसमु छोडि दूजै लगे डुबे से

वणजारिआ॥ सतिगुरु है बोहिथा बिरलै किनै वीचारिआ ॥ करि किरपा पारि उतारिआ ॥ १३ ॥

तिलंग महला ९ काफी ॥

चेतना है तउ चेत लै निसि दिनि मै प्रानी ॥ छिनु छिनु अउध बिहातु है फूटै घट जिउ पानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरिगुन काहि न गावही मूरखअगिआना ॥ झूठै लालचि लागि कै नहि मरनु पछाना ॥१॥ अजहू कछू बिगरिओ नही जो प्रभ गुन गावै ॥ कहु नानक तिह भजन ते निरभै पदु पावै ॥ २ ॥ १ ॥

जिनी ऐसा हरि नामु न चेतिओ से काहे जगि आए राम राजे ॥ इहु माणस जनमु दुलंभु है नाम बिना बिरथा सभु जाए ॥ हुणि वत हरि नामु न बीजिओ

अगै भुखा किआ खाए ॥ मनमुखा नो फिरि जनमु है नानक हरि भाए ॥ २ ॥

सलोक म० १ ॥

सिंमल रुखु सराइरा अति दीरघ अति मुचु ॥ ओइ जि आवहि आस करि जाहि निरासे कितु ॥ फल फिके फुल बकबके कंमि न आवहि पत ॥ मिठतु नीवी नानका गुण चंगिआईआ ततु ॥ सभु को निवै आप कउ पर कउ निवै न कोइ ॥ धरि ताराजू तोलीऐ निवै सु गउरा होइ ॥ अपराधी दूणा निवै जो हंता

मिरगाहि॥ सीसि निवाइऐ किआ
थीऐ जा रिदै कुसुधे जाहि ॥१॥
म०१॥पड़ि पुसतकसंधिआ बादं॥
सिल पूजसि बगुल समाधं ॥ मुखि
झूठ बिभूखणसारं॥त्रैपाल तिहाल
बिचारं ॥ गलि माला तिलकु
लिलाटं॥दुइ धोती बसत्र कपाटं ॥
जे जाणसि ब्रहमं करमं ॥ सभि
फोकट निसचउ करमं ॥ कहु
नानक निहचउ धिआवै ॥ विणु
सतिगुर वाट न पावै॥२॥पउड़ी॥
कपड़ु रूपु सुहावणा छडि दुनीआ
अंदरि जावणा॥मंदा चंगा आपणा

आपेही कीता पावणा ॥ हुकम कीए मनि भावदे राहि भीड़ै अगै जावणा ॥ नंगा दोजकि चालिआ ता दिसै खरा डरावणा ॥ करि अउगण पछोतावणा ॥ १४ ॥

बिलावलु महला ५ ॥

पिंगुल परबत पारि परे खल चतुर बकीता ॥ अंधुले त्रिभवन सूझिआ गुर भेटि पुनीता ॥१॥ महिमा साधू संग की सुनहु मेरे मीता ॥ मैलु खोई कोटि अघ हरे निरमल भए चीता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऐसी भगति गोविंद की कीटि हसती जीता ॥ जो जो कीनो आपनो तिसु अभै दानु दीता ॥ २ ॥ सिंघु बिलाई होइ गइओ त्रिणु मेरु दिखीता ॥ स्रमु करते

दम आढ कउ ते गनी धनीता ॥ ३ ॥
कवन वडाई कहि सकउ बेअंत गुनीता ॥
करि किरपा मोहि नामु देहु नानक
दरसरीता ॥ ४ ॥ ७ ॥ ३७ ॥

तूं हरि तेरा सभु को सभि तुधु उपाए
राम राजे ॥ किछु हाथि किसै दे किछु
नाहीसभि चलहि चलाए ॥ जिन्ह तूं
मेलहि पिआरे से तुधु मिलहि जो हरि
मनि भाए ॥ जन नानक सतिगुरु भेटिआ
हरि नामि तराए ॥ ३ ॥

सलोकु म० १ ॥

**दइआ कपाह संतोखु सूतु जतु
गंढी सतु वटु ॥ इहु जनेऊ जीअ
का हई त पाडे घतु ॥ ना एहु
तुटै न मलु लगै ना एहु जलै न**

जाइ ॥ धंनु सु मारास नानका
जो गलि चले पाइ॥चउकड़ि मुलि
अणाइआ बहि चउकै पाइआ ॥
सिखा कंनि चड़ाईआ गुरु
ब्राहमणु थिआ ॥ ओहु मुआ ओहु
झड़ि पइआ वेतगा गइआ ॥१॥
म०१॥लख नेकीआ लख जारीआ
लख कूड़ीआ लख गालि ॥ लख
ठगीआ पहिनामीआ राति दिनसु
जीअ नालि॥ तगु कपाहहु कतीऐ
ब्राहमणु वटे आइ ॥ कुहि वकरा
रिन्हि खाइआ सभु को आखै पाइ
॥ होइ पुराणा सुटीऐ भी फिरि

पाईऐ होरु ॥ नानक तगु न
तुटई जेतगि होवै जोरु॥२॥म० १॥
नाइ मंनिऐ पति ऊपजै सालाही
सचु सूतु ॥ दरगह अंदरि पाईऐ
तगु न तूटसि पूत ॥३॥ म० १॥
तगु न इंद्री तगु न नारी ॥
भलके थुक पवै नित दाड़ी ॥
तगु न पैरी तगु न हथी ॥
तगु न जिहवा तगु न अखी ॥
वेतगा आपे वतै ॥ वटि धागे
अवरा घतै ॥ लै भाड़ि करे
वीआहु ॥ कढि कागलु दसे राहु ॥
सुणि वेखहु लोका एहु विडाणु ॥

मनि अंधा नाउ सुजाणु ॥ ४ ॥
पउड़ी ॥ साहिबु होइ दइआलु
किरपा करे ता साई कार कराइसी
॥ सो सेवकु सेवा करे जिसनो
हुकमु मनाइसी ॥ हुकमि मंनिऐ
होवै परवाणु ता खसमै का महलु
पाइसी ॥ खसमै भावै सो करे
मनहु चिंदिआ सो फलु पाइसी ॥
ता दरगह पैधा जाइसी ॥ १५ ॥

सारंग की वार महला ४ ॥

सलोक महला १ ॥

न भीजै रागी नादी बेदि ॥ न भीजै
सुरती गिआनी जोगि ॥ न भीजै सोगी
कीतै रोजि ॥ न भीजै रूपीं मालीं रंगि॥

न भीजै तीरथि भविऐ नंगि॥न भीजैदातीं कीतै पुंनि॥ न भीजै बाहरि बैठिआ सुंनि ॥ न भीजै भेडि मरहि भिड़ि सूर॥न भीजै केते होवहि धूड़ ॥ लेखा लिखीऐ मन कै भाइ ॥ नानक भीजै साचै नाइ ॥ २ ॥

कोई गावै रागी नादी बेदी बहु भाति करि नही हरि हरि भीजै राम राजे ॥ जिना अंतरि कपटु विकारु है तिना रोइ किआ कीजै ॥ हरि करता सभु किछु जाणदा सिरि रोग हथु दीजै ॥ जिना नानक गुरमुखि हिरदा सुधु है हरि भगति हरि लीजै ॥ ४ ॥

सलोक म० १ ॥

गऊ बिराहमण कउ करु लावहु गोबरि तरणु न जाई ॥ धोती टिका तै जप माली धानु

मलेछा खाई ॥ अंतरि पूजा पड़हि
कतेबा संजमु तुरका भाई ॥ छोडी
ले पाखंडा ॥ नामि लइऐ जाहि
तरंदा ॥१॥ म० १॥ माणस खाणे
करहि निवाज ॥ छुरी वगाइणि
तिन गलि ताग॥ तिन घरि ब्राहमण
पूरहि नाद॥ उन्हा भि आवहि ओई
साद॥ कूड़ी रासि कूड़ा वापारु॥ कूड़ु
बोलि करहि आहारु ॥ सरम धरम
का डेरा दूरि॥ नानक कूड़ु रहिआ
भरपूरि ॥ मथै टिका तेड़ि धोती
कखाई॥ हथि छुरी जगत कासाई॥
नील वसत्र पहिरि होवहि परवाणु॥

मलेछ धानु ले पूजहि पुराणु ॥ अभाखिआ का कुठा बकरा खाणा ॥ चउके उपरि किसै न जाणा ॥ देकै चउका कढी कार ॥ उपरि आइ बैठे कूड़िआर ॥ मतु भिटै वे मतु भिटै ॥ इहु अंनु असाडा फिटै ॥ तनि फिटै फेड़ करेनि ॥ मनि जूठै चुली भरेनि ॥ कहु नानक सचु धिआईऐ ॥ सुचि होवै ता सचु पाईऐ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ चितै अंदरि सभु को वेखि नदरी हेठि चलाइदा ॥ आपे दे वडिआईआ

बाहरहू भुलि चुकि बोलदे भी खरे हरि भाणे ॥ हरि संता नो होरु थाउ नाही हरि माणु निमाणे ॥ जन नानक नामु दीबाणु है हरि ताणु सताणे ॥ १ ॥

सलोकु म० १ ॥

जे मुहा का घरु मुहै घरु मुहि पितरी देइ ॥ अगै वसतु सिञाणीऐ पितरी चोर करेइ ॥ वढीअहि हथि दलाल के मुसफी एह करेइ ॥ नानक अगै सो मिलै जि खटे घाले देइ ॥ १ ॥ म० १ ॥ जिउ जोरू सिर नावणी आवै वारो वार ॥ जूठे जूठा मुखि वसै

नित नित होइ खुआरु ॥ सूचे एहि न आखीअहि बहनि जि पिंडा धोइ ॥ सूचे सेई नानका जिन मनि वसिआ सोइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तुरे पलाणे पउण वेग हर रंगी हरम सवारिआ ॥ कोठे मंडप माड़ीआ लाइ बैठे करि पासारिआ ॥ चीज करनि मनि भावदे हरि बुझनि नाही हारिआ ॥ करि फुरमाइसि खाइआ वेखि महलति मरणु विसारिआ ॥ जरु आई जोबनि हारिआ ॥ १७ ॥

सूही महला ५ ॥

अबिचल नगरु गोबिंद गुरू का नामु जपत सुखु पाइआ राम ॥ मन इछे सेई फल पाए करतै आपि वसाइआ राम ॥ करतै आपि वसाइआ सरब सुख पाइआ पुत भाई सिख बिगासे ॥ गुण गावहि पूरन परमेसुर कारजु आइआ रासे ॥ प्रभु आपि सुआमी आपे राखा आपि पिता आपि माइआ ॥ कहु नानक सतिगुर बलिहारी जिनि एहु थानु सुहाइआ ॥ १ ॥

जिथै जाइ बहै मेरा सतिगुरू सो थानु सुहावा राम राजे ॥ गुर सिखी सो थानु भालिआ लै धूरि मुखि लावा ॥ गुर सिखा की घाल थाइ पई जिन हरि नामु धिआवा ॥ जिन नानकु सतिगुरु पूजिआ तिन हरि पूज करावा ॥ २ ॥

सलोकु म० १ ॥

जेकरि सूतकु मंनीऐ सभतै सूतकु होइ ॥ गोहे अतै लकड़ी अंदरि कीड़ा होइ ॥ जेते दाणे अंन के जीआबाझु न कोइ॥पहिला पाणी जीउ है जितु हरिआ सभु कोइ ॥ सूतकु किउ करि रखीऐ सूतकु पवै रसोइ ॥ नानक सूतकु एव न उतर गिआनु उतारै धोइ ॥ १ ॥ म०१॥मनका सूतकुलोभु है जिहवा सूतकु कूड़ु ॥ अखी सूतकु वेखणा परतृअ परधन रूपु ॥ कंनी सूतकु कंनिपै लाइतबारी खाहि ॥

नानक हंसा आदमी बधे जमपुरि
जाहि॥२॥म० १॥सभोसूतकु भरमु
है दूजै लगै जाइ ॥ जंमणु मरणा
हुकमुहैभाणैआवैजाइ॥खाणापीणा
पवित्रु है दितोनु रिजकु संबाहि॥
नानक जिनी गुरमुखि बुझिआ
तिन्हासूतकुनाहि॥३॥पउड़ी॥सति
गुरु वडा करि सालाहीऐ जिसु
विचि वडीआ वडिआईआ ॥ सहि
मेले ता नदरी आईआ ॥ जा तिसु
भाणा ता मनि वसाईआ ॥ करि
हुकमु मसतकि हथु धरि विचहु
मारि कढीआ बुरिआईआ ॥ सहि

तुठै नउ निधि पाईआ ॥ १८ ॥

राग सूही असटपदीआ म० ४ विचों

झखड़ झांगी मीहु वरसै भी गुरु देखण जाई ॥ १३ ॥ समुंदु सागरु होवै बहु खारा गुर सिखु लघि गुर पहि जाई ॥ १५ ॥ जिउ प्राणी जल बिनु है मरता तिउ सिखु गुर बिनु मरि जाई ॥ १५ ॥ जिउ धरती सोभ करे जलु बरसै तिउ सिखु गुर मिलि बिगसाई ॥१६॥ सेवक का होइ सेवकु बरता करि करि बिनउ बुलाई ॥ १७ ॥ नानक की बेनती हरि पहि गुर मिलि गुरमुखु पाई ॥ १८ ॥

गुरसिखा मनि हरि प्रीति है हरि नाम हरि तेरी राम राजे ॥ करि सेवहि पूरा सतिगुरू भुख जाइ लहि मेरी॥गुरसिखा को भुख सभ गई तिन पिछै होर खाइ घनेरी ॥ जन नानक हरि पुंनु बीजिआ

फिरि तोटि न आवै हरि पुंन केरी ॥३॥

सलोकु महला १ ॥

पहिला सुचा आपि होइ सुचै बैठा आइ ॥ सुचे अगै रखिओनु कोइ न भिटिओ जाइ ॥ सुचा होइकै जेविआ लगा पड़णि सलोकु ॥ कुहथी जाई सटिआ किसु एहु लगा दोखु॥ अंनु देवता पाणी देवता बैसंतरु देवता लूणु पंजवा पाइआ घिरतु ॥ ता होआ पाकु पवितु ॥ पापी सिउ तनु गडिआ थुका पईआ तितु॥ जितु मुखि नामु न ऊचरहि

बिनु नावै रस खाहि ॥ नानक
ऐवैजाणीऐ तितु मुखि थुका पाहि
॥१॥ म० १ ॥ भंडि जंमीऐ भंडि
निंमीऐ भंडि मंगणु वीआहु ॥
भंडहुहोवै दोसती भंडहु चलैराहु॥
भंडु मुआ भंडु भालीऐ भंडि होवै
बंधानु ॥ सो किउ मंदा आखीऐ
जितु जंमहि राजान ॥ भंडहु ही
भंडुऊपजै भंडै बाझु न कोइ॥नानक
भंडै बाहरा एको सचा सोइ॥जितु
मुखि सदा सालाहीऐ भागा रती
चारि ॥ नानक ते मुख ऊजले तितु
सचै दरबारि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥

सभु को आखै आपणा जिसु नाही सो चुणि कढीऐ ॥ कीता आपो आपणा आपे ही लेखा संढीऐ ॥ जा रहणा नाही ऐतु जगि ता काइतु गारबि हंढीऐ ॥ मंदा किसै न आखीऐ पड़ि अखरु एहो बुझीऐ ॥ मूरखै नालि न लुझीऐ ॥ १६ ॥

गउड़ी महला ५ ॥

प्रभ मिलबे कउ प्रीति मनि लागी॥ पाइ लगउ मोहि करउ बेनती कोऊ संतु मिलै बडभागी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनु अरपउ धनु राखउ आगै मन की मति मोहि सगल तिआगी ॥ जो प्रभ की हरि

कथा सुनावै अनदिनु फिरउ तिसु पिछै विरागी ॥ १ ॥ पूरब करम अंकुर जब प्रगटे भेटिओ पुरखु रसिक वैरागी ॥ मिटिओ अंधेरु मिलत हरि नानक जनम जनम की सोई जागी ॥२॥२॥११९॥

गुरसिखा मनि वाधाईआ जिन मेरा सतिगुरू डिठा राम राजे॥कोई करि गल सुणावै हरि नाम की सो लगै गुरसिखा मनि मिठा ॥ हरि दरगह गुरसिख पैनाईअहि जिन्हा मेरा सतिगुरु तुठा ॥ जन नानकु हरि हरि होइआ हरि हरि मनि वुठा ॥ ४ ॥ सलोकु ॥

नानक फिकै बोलिऐ तनु मनु फिका होइ ॥ फिको फिका सदीऐ फिके फिकी सोइ ॥ फिका दरगह

सटीऐ मुहि थुका फिके पाइ ॥ फिका मूरखु आखीऐ पाणा लहै सजाइ ॥१॥म० १ ॥ अंदरहु झूठे पैज बाहरि दुनीआ अंदरि फैलु ॥ अठसठि तीरथ जे नावहि उतर नाही मैलु ॥ जिन्ह पटु अंदरि बाहरि गुदड़ ते भले संसारि ॥ तिन्ह नेहु लगा रब सेती देखन्हे वीचारि॥ रंगि हसहि रंगि रोवहि चुप भी करि जाहि ॥ परवाह नाही किसै केरी बाझु सचे नाह ॥ दरि वाट उपरि खरचु मंगा जवै देइ त खाहि ॥ दीवानु

एको कलम एको हमा तुम्हा मेलु ॥ दरि लए लेखा पीड़ि छुटै नानका जिउ तेलु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे ही करणा कीओ कल आपे ही तै धारीऐ ॥ देखहि कीता आपणा धरि कची पकी सारीऐ ॥ जो आइआ सो चलसी सभु कोई आई वारीऐ ॥ जिसके जीअ पराण हहि किउ साहिबु मनहु विसारीऐ ॥ आपण हथी आपणा आपे ही काजु सवारीऐ ॥ २० ॥

सोरठि महला ५ ॥

कोटि ब्रहमंड को ठाकुरु सुआमी सरब जीआ का दातारे ॥ प्रतिपालै नित सारि

समालै इकु गुनु नही मूरखि जाता रे ॥ १ ॥ हरि आराधि न जाना रे ॥ हरि हरि गुरु गुरु करता रे ॥ हरि जीउ नामु परिओ रामदासु ॥ रहाउ ॥ दीन दइआल क्रिपाल सुखु सागर सरब घटा भरपूरी रे ॥ पेखत सुनत सदा है संगे मै मूरख जानिओ दूरी रे ॥ २ ॥ हरि बिअतु हउ मिति करि वरनउ किआ जाना होइ कैसो रे ॥ करउ बेनती सतिगुर अपुने मै मूरख देहु उपदेसो रे ॥ ३ ॥ मै मूरख की केतक बात है कोटि पराधी तरिआ रे ॥ गुरु नानकु जिन सुणिआ पेखिआ से फिरि गरभासि न परिआ रे ॥ ४ ॥ १ ॥ १३ ॥

आसा महला ४ ॥

जिन्हा भेटिआ मेरा पूरा सतिगुरू तिन हरिनामु दृडावै राम राजे ॥

तिसकी तृसना भुख सभ उतरै जो हरि नामु धिआवै ॥ जो हरि हरि नामु धिआइदे तिन्ह जमु नेड़ि न आवै ॥ जन नानक कउ हरि कृपा करि नित जपै हरि नामु हरि नामि तरावै ॥ १ ॥

सलोकु म० २ ॥

एह किनेही आसकी दूजै लगै जाइ ॥ नानक आसकु कांढीऐ सदही रहै समाइ ॥ चंगै चंगा करि मंने मंदै मंदा होइ ॥ आसकु एहु न आखीऐ जि लेखै वरतै सोइ ॥ १ ॥ महला २ ॥ सलामु जबाबु दोवै करे मुंढहु घुथा जाइ ॥ नानक दोवै कूड़ीआ

थाइ न काई पाइ ॥ २ ॥
पउड़ी ॥ जितु सेविऐ सुखु पाईऐ
सो साहिबु सदा समालीऐ ॥
जितु कीता पाईऐ आपणा सा
घाल बुरी किउ घालीऐ ॥ मंदा
मूलि न कीचई दे लंमी नदरि
निहालीऐ ॥ जिउ साहिब नालि
न हारीऐ तेवेहा पासा ढालीऐ ॥
किछु लाहे उपरि घालीऐ ॥२१॥

आसा महला ५ ॥

अपुने सेवक की आपे राखै आपे
नामु जपावै॥जह जह काज किरति सेवक
की तहा तहा उठि धावै ॥१॥ सेवक कउ
निकटी होइ दिखावै॥ जो जो कहै ठाकुर

पहि सेवकु ततकाल होइ आवै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तिसु सेवक कै हउ बलिहारी जो अपने प्रभ भावै ॥ तिस की सोइ सुणी मनु हरिआ तिसु नानक परसणि आवै ॥ २ ॥ ७ ॥ १२९ ॥

जिनी गुरमुखि नामु धिआइआ तिना फिर बिघनु न होई राम राजे ॥ जिनी सतिगुरु पुरखु मनाइआ तिन पूजे सभु कोई ॥ जिन्ही सतिगुरु पिआरा सेविआ तिना सुखु सद होई ॥ जिना नानकु सतिगुरु भेटिआ तिना मिलिआ हरि सोई ॥ २ ॥

सलोकु महला २ ॥

चाकरु लगै चाकरी नाले गारबु वादु ॥ गला करे घनेरीआ खसम न पाए सादु ॥ आपु गवाए सेवा

करे ता किछु पाए मानु ॥ नानक
जिसनो लगा तिसु मिलै लगा सो
परवानु ॥१॥महला १ ॥ जो जीइ
होइ सु उगवै मुह का कहिआ वाउ
॥ बीजे बिखु मंगै अंमृत वेखहु
एहु निआउ ॥ २ ॥ महला २ ॥
नाल इआणे दोसती कदे न आवै
रासि॥जेहा जाणै तेहो वरतै वेखहु
को निरजासि॥ वसतू अंदरि वसतु
समावै दूजी होवै पासि ॥ साहिब
सेती हुकमु न चलै कही बणै
अरदासि ॥ कूड़ि कमाणै कूड़ो
होवै नानक सिफति विगासि ॥३॥

महला २ ॥ नालि इश्राणे दोसती वडारू सिउ नेहु ॥ पाणी अंदरि लीक जिउ तिसदा थाउ न थेहु ॥ ४ ॥ महला २ ॥ होइ इआना करे कंमु आणि न सकै रासि ॥ जे इक अध चंगी करे दूजी भी वेरासि ॥ ५॥ पउड़ी ॥ चाकरु लगै चाकरी जे चलै खसमै भाइ ॥ हुरमति तिसनो अगली ओहु वजहु भि दूणा खाइ ॥ खसमै करे बराबरी फिरि गैरति अंदरि पाइ ॥ वजहु गवाए अगला मुहे मुहि पाणा खाइ ॥ जिसदा दिता खावणा तिसु

कहीऐ साबासि ॥ नानक हुकमु न चलई नालि खसम चलै अरदासि ॥ २२ ॥

गउडी कबीर जी ॥

निंदउ निंदउ मोकउ लोगु निंदउ ॥ निंदा जन कउ खरी पिआरी ॥ निंदा बापु निंदा महतारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निंदा होइ ता बैकुंठि जाईऐ ॥ नामु पदारथु मनहि वसाईऐ ॥ रिद सुध जउ निंदा होइ ॥ हमरे कपरे निंदकु धोइ ॥ १ ॥ निंदा करै सु हमरा मीतु ॥ निंदक माहि हमारा चीतु ॥ निंदकु सो जो निंदा होरै ॥ हमरी जीवन निंदकु लोरै ॥ २ ॥ निंदा हमरी प्रेम पिआरु ॥ निंदा हमरा करै उधारु ॥ जन कबीर कउ निंदा सारु ॥ निंदकु डूबा हम उतरे पारि ॥ ३ ॥

जिना अंतरि गुरमुखि प्रीति है तिन

हरि रखणहारा राम राजे ॥ तिन की निदा कोई किआ करे जिन हरि नामु पिआरा ॥ जिन हरि सेती मनु मानिआ सभ दुसट झख मारा ॥ जन नानक नामु धिआइआ हर रखणहारा ॥ ३ ॥

सलोकु म० २ ॥

एह किनेही दाति आपस ते जो पाईऐ ॥ नानक सा करमाति साहिब तुठै जो मिलै ॥ १ ॥ महला २ ॥ एह किनेही चाकरी जितु भउ खसम न जाइ ॥ नानक सेवकु काढीऐ जि सेती खसम समाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ नानक अंत न जापन्ही हरि ताके पारावार ॥

आपि कराए साखती फिरि आपि कराए मार ॥ इकन्हा गली जंजीरीआ इकि तुरी चड़हि बिसीआर॥आपि कराए करे आपि हउ कै सिउ करी पुकार ॥ नानक करणा जिनि कीआ फिरि तिस ही करणी सार ॥ २३ ॥

रागु सूही महला ३ घरु ३ ॥

भगत जना की हरि जीउ राखै हरि जुगि जुगि रखदा आइआ राम ॥ सो भगतु जो गुरमुखि होवै हउमै सबदि जलाइआ राम ॥ हउमै सबदि जलाइआ मेरे हरि भाइआ जिसदी साची बाणी ॥ सची भगति करहि दिनु राती गुरमुखि आखि वखाणी ॥ भगता की चाल सची अति निरमल नामु सची मनि

भाइआ ॥ नानक भगत सोहहि दरि साचै जिना सचो सचु कमाइआ ॥ १ ॥

हरि जुगु जुगु भगत उपाइआ पैज रखदा आइआ राम राजे ॥ हरणाखसु दुसटु हरि मारिआ प्रहलादु तराइआ ॥ अहंकारीआ निंदका पिठि देइ नामदेउ मुखि लाइआ ॥ जन नानक ऐसा हरि सेविआ अंति लए छडाइआ ॥ ४ ॥

सलोकु म० १ ॥

आपे भांडे साजिअनु आपे पूरणु देइ ॥ इकन्ही दुधु समाईऐ इकि चुल्है रहन्हि चड़े ॥ इकि निहाली पै सवन्हि इकि उपरि रहनि खड़े ॥ तिना सवारे नानका जिनकउ नदरि करे ॥१॥

महला २ ॥ आपे साजे करे आपि जाई भि रखै आपि ॥ तिसु विचि जंत उपाइकै देखै थापि उथापि ॥ किसनो कहीऐ नानका सभु किछु आपे आपि॥२॥पउड़ी॥ वडे कीआ वडिआईआ किछु कहणा कहणु न जाइ ॥ सो करता कादर करीमु दे जीआ रिजकु संबाहि ॥ साई कार कमावणी धुरि छोडी तिनै पाइ ॥ नानक एकी बाहरी होर दूजी नाही जाइ ॥ सो करे जि तिसै रजाइ ॥२४॥१॥ सुधु ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

❀ आरती ❀

धनासरी महला १ ॥

गगन मै थालु रवि चंदु दीपक बने तारिका मंडल जनक मोती॥ धूपुमल आनलो पवणु चवरो करे सगल बनराइ फूलंत जोती ॥१॥ कैसी आरती होइ भवखंडना तेरी आरती ॥ अनहता सबद वाजंत भेरी ॥१॥ रहाउ ॥ सहस तव नैन नन नैन है तोहि कउ सहस मूरति नना एक तोही॥ सहस पद

बिमल नन एक पद गंध बिनु सहस तव गंध इव चलत मोही ॥ २ ॥ सभ महि जोति जोति है सोइ ॥ तिसकै चानणि सभ महि चानणु होइ ॥ गुरसाखी जोति परगटु होइ ॥ जो तिसु भावै सु आरती होइ ॥ ३ ॥ हरि चरण कमल मकरंद लोभित मनो अनदिनो मोहि आही पिआसा ॥ कृपा जलु देहि नानक सारिंग कउ होइ जाते तेरे नामि वासा ॥ ४ ॥ १ ॥ ७ ॥ ६ ॥

धनासरी रविदास जी ॥

नामु तेरो आरती मजनु मुरारे ॥ हरि के नाम बिनु झूठे सगल पासारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाम तेरो आसनो नामु तेरो उरसा नामु तेरा केसरो ले छिटकारे ॥ नामु तेरा अंभुला नामु तेरो चंदनो घसि जपे नामु ले तुझहि कउ चारे ॥ १ ॥ नामु तेरा दीवा नामु तेरो बाती नामु तेरो तेल ले माहि पसारे ॥ नाम तेरे की जोति लगाई भइओ उजिआरो भवन सगलारे ॥ २ ॥ नामु तेरो तागा नामु फूल माला भार अठा-

रह सगल जूठारे ॥ तेरो कीआ तुझहि किआ अरपउ नामु तेरा तुही चवर ढोलारे ॥३॥ दस अठा अठसठे चारे खाणी इहै वरतणि है सगल संसारे ॥ कहै रविदासु नामु तेरो आरती सतिनामु है हरि भोग तुहारे ॥ ४ ॥ ३ ॥

धनासरी श्री सैणु जी ॥

धूप दीप घृत साजि आरती ॥ वारने जाउ कमलापती ॥ १ ॥ मंगला हरि मंगला ॥ नित मंगलु राजा राम राइ को ॥१॥ रहाउ ॥ ऊतम दीअरा निरमल बाती ॥

तुहंी निरंजनु कमला पाती ॥२॥
रामा भगति रामानंदु जानै ॥
पूरन परमानंदु बखानै ॥ ३ ॥
मदन मूरति भै तारि गोबिंदे ॥
सैनु भणै भजु परमानंदे ॥४॥१॥

प्रभाती श्री कबीर जी

सुंन संधिआ तेरी देव देवा कर
अधपति आदि समाई ॥ सिध
समाधि अंतु नही पाइआ लागि
रहे सरनाई ॥ १ ॥ लेहु आरती
हो पुरख निरंजनु सतिगुर पूजहु
भाई ॥ ठाढा ब्रहमा निगम बीचारै
अलखु न लखिआ जाई ॥१॥रहाउ

॥ततु तेलु नामु कीआ बाती दीपकु देह उज्यारो॥ जोति लाइ जगदीस जगाइआ बूझै बूझनहारा ॥ २ ॥ पंचे सबद अनाहद बाजे संगे सारिंग पानी ॥ कबीर दास तेरी आरती कीनी निरंकार निरबानी ॥३॥५॥ स्वैया ॥ याते प्रसंन भए है महामुनि देवन के तप मै सुखु पावै ॥ यग करै इक बेद ररै भव ताप हरै मिल धिआन लगावै ॥ झालर ताल मृदंग उपंग रबाब लीए सुर साज मिलावै ॥ किंनर गंध्रब गान करै गण जछ अपछर

निरत दिखावै॥२॥संखन की धुनि घंटन की कर फूलन की बरखा बरखावै॥ आरती कोट करै सुर सुंदर पेख पुरंदर के बलि जावै॥ दानति दच्छन दै क प्रदच्छन भाल मै कुंकम अच्छत लावै॥ होत कुलाहल देव पुरी मिल देवन के कुल मंगल गावै ॥३॥हेरवि हे ससि हे करुणानिधि मेरी अबै बिनती सुन लीजै॥ और न मांगत हउ तुम ते कछु चाहत हों चित मै सोई कीजै॥शसत्रनसों अतिही रण भीतर जूझ मरों तउ

साच पतीजै ॥ संत सहाइ जग माइ कृपा कर स्याम इहै बर दीजै ॥ ४ ॥ पांइ गहे जब ते तुमरे तब ते कोऊ आंख तरे नहीं आन्यो ॥ राम रहीम पुरान कुरान अनेक कहैं मत एक न मान्यो ॥ सिमृत सासत्र बेद सबै बहु भेद कहैं हम एक न जान्यो॥ श्री असिपान कृपा तुमरी करिम न कह्यो सबतोहिबखान्यो ॥दोहरा ॥ सगल दुआर कउ छाडि कै गहिओ तुहारो दुआर ॥ बांहि गहे की लाज अस गोबिंद दास

तुहार ॥ ऐसे चंड प्रताप ते देवन बडिओ प्रताप ॥ तीन लोक जै जै करै ररै नाम सति जाप ॥

चतर चक्रवरती चतरचक्र भुगते ॥ सुयंभव सुभं सरबदा सरब जुगते ॥ दुकालं प्रणासी दइआलं सरूपे ॥ सदा अंग संगे अभंगं बिभूते ॥ १६६ ॥

सहंसर नामा

मारू महला ५ ॥

अचुत पारब्रहम प्रमेसुर अंतर-जामी॥मधुसूदनदामोदर सुआमी॥ रिखी केस गोवरधनधारी मुरली मनोहर हरि रंगा ॥ १ ॥ मोहन माधव क्रिस्न मुरारे ॥ जगदीसुर हरि जीउ असुर संघारे ॥ जग जीवन अबिनासी ठाकुर घट घट वासी है संगा ॥२॥ धरणी धरईस नरसिंह नाराइण ॥ दाड़ा अग्रे प्रिथमि धराइण ॥ बावन रूप कीआ तुधु करते सभ ही

सेती है चंगा ॥ ३ ॥ श्री रामचंद्र जिसु रूपु न रेखिया ॥ बनवाली चक्रपाणि दरसि अनूपिया ॥ सहंस नेत्र मूरति है सहंसा इकु दाता सभ है मंगा ॥ ४ ॥ भगति वछलु अनाथह नाथे ॥ गोपीनाथु सगल है साथे ॥ बासुदेव निरंजन दाते बरनि न साकउ गुण अंगा ॥५॥ मुकंद मनोहर लखमी नाराइण ॥ द्रोपती लजा निवारि उधारण ॥ कमला कंत करहि कंतूहल अनद बिनोदी निहसंगा ॥ ६ ॥ अमोघ दरसन आजूनी संभउ ॥ अकाल

मूरति जिसु कदे नाही खउ ॥
अबिनासी अबिगत अगोचर
सभु किछु तुझही है लगा ॥७॥
श्री रंग बैकुंठ के वासी ॥ मछु
कछु कुरमु आगिआ अउतरासी ॥
केसव चलत करहि निराले कीता
लोड़हि सो होइगा ॥ ८ ॥ निरा-
हारी निरवैरु समाइआ ॥ धारि
खेलु चतुर भुजु कहाइआ ॥
सावल सुंदर रूप बणावहि बेणु
सुनत सभ मोहैगा ॥ ६ ॥ बन-
माला बिभूखन कमलनैन ॥
सुंदर कुंडल मुकट बैन ॥

संख चक्र गदा है धारी महासारथी सतसंगा ॥ १० ॥ पीत पीतंबर तृभवण धणी ॥ जगंनाथु गोपालु मुखि भणी ॥ सारिंगधर भगवान बीठुला मै गणत न आवै सरबंगा ॥ ११ ॥ निहकंटकु निहकेवलु कहीए ॥ धनंजै जलि थलि है महीऐ ॥ मिरत लोक पइआल समीपत असथिरु थानु जिसु है अभगा ॥१२॥ पतित पावन दुख भै भंजनु ॥ अहंकार निवारणु है भव खंडन ॥ भगती तोखित दीन क्रिपाला गुणे न कितही है भिगा

॥१३॥ निरंकारु अछल अडोलो॥
जोति सरूपीसभुजगु मउलो ॥ सो
मिलै जिसु आपि मिलाए आपहु
कोइ न पावैगा॥१४॥ आपे गोपी
आपे काना ॥ आपे गऊ चरावै
बाना ॥ आपि उपावहि आपि
खपावहि तुधु लेपु नही इकु तिलु
रंगा ॥१५॥एक जीह गुण कवन
वखानै ॥ सहस फनी सेख अंतु
न जानै ॥ नवतन नाम जपै दिनु
राती इकु गुण नाही प्रभ कहि
संगा ॥ १६ ॥ ओट गही जगत
पित सरणाइआ ॥ भै भइआनक

जमदूत दुतर है माइया ॥ होहु
क्रिपाल इछा करि राखहु साध
संत कै संगि संगा ॥ १७ ॥
द्रिसटि मान है सगल मिथेना ॥
इकु मागउ दानु गोबिंद संत रेना
॥ मसतकि लाइ परमपदु पावउ
जिसु प्रापति सो पावैगा ॥ १८ ॥
जिन कउ क्रिपा करी सुख दाते ॥
तिन साधू चरण लै रिदै पराते ॥
सगल नाम निधानु तिन पाइआ ॥
अनहद सबद मनि वाजंगा
॥ १९ ॥ किरतम नाम कथे तेरे
जिहवा ॥ सतिनामु तेरा परा

पूरबला ॥ कहु नानक भगत
पए सरणाई देहु दरसु मनि रंगु
लगा ॥ २० ॥ तेरी गति मिति
तूहै जाणहि ॥ तू आपे कथहि
तै आपि वखाणहि ॥ नानक दासु
दासन को करीअहु हरि भावै
दासा राखु संगा ॥२१॥२॥११॥

बसंत की वार महलु ५ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

हरि का नामु धिआइकै होहु हरिआ भाई ॥ करमि लिखंतै पाईऐ इह रुति सुहाई ॥ वणु तृणु तृभवणु मउलिआ अंमृत फलु पाई ॥ मिलि साधू सुखु ऊपजै लथी सभ छाई ॥ नानकु सिमरै एकु नामु फिरि बहुड़ि न धाई ॥ १ ॥ पंजे बधे महाबली करि सचा ढोआ ॥ आपणे चरण जपाइअनु विचि दयु खड़ोआ ॥ रोग सोग सभि मिटि गए नित

नवा निरोआ ॥ दिनु रैणि नामु धिआइदा फिरि पाइ न मोआ ॥ जिसते उपजिआ नानका सोई फिरि होआ ॥ २ ॥ किथहु उपजै कह रहै कह माहि समावै ॥ जीअ जंत सभि खसम के कउणु कीमति पावै ॥ कहनि धिआइनि सुणनि नित से भगत सुहावै ॥ अगमु अगोचरु साहिबो दूसरु लवै न लावै ॥ सचु पूरै गुरि उपदेसिआ नानकु सुणावै ॥ ३ ॥ १ ॥

❀ शबद वेनती ❀

रागु गउड़ी पूरबी महला ५ ॥

क्वन गुन प्रानपति मिलउ मेरी माई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रूप हीन बुधि बल हीनी मोहि परदेसनि दूर ते आई ॥ १ ॥ नाहिन दरबु न जोबन माती मोहि अनाथकी करहु समाई ॥२॥ खोजत खोजत भई बैरागनि प्रभ दरसन कउ हउ फिरत तिसाई ॥ ३ ॥ दीन दइआल क्रिपाल प्रभ नानक साध संगि मेरी जलनि बुझाई ॥ ४ ॥

❀ सलोक महला ९ ❀

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

गुन गोबिंद गाइओ नही जनमु अकारथ कीन ॥ कहु नानक हरि भजु मना जिह बिधि जल कौ मीन ॥ १ ॥ बिखिअन सिउ काहे रचिओ निमख न होहि उदास ॥ कहु नानक भजु हरि मना परै न जम की फास ॥ २ ॥ तरनापो इउ ही गइओ लीओ जरा तनु जीति ॥ कहु नानक भज हरि मना अउध जात है बीति ॥३॥

बिरध भइओ सूझै नही कालु पहूचिओ आन ॥ कहु नानक नर बावरे किउ न भजै भगवान ॥४॥ धनु दारा संपति सगल जिनि अपुनी करि मानि ॥ इन मै कछु संगी नही नानक साची जानि ॥ ५ ॥ पतित उधारन भै हरन हरि अनाथ के नाथ ॥ कहु नानक तिह जानीऐ सदा बसतु तुम साथ ॥ ६ ॥ तनु धनु जिह तो कउ दीओ ता सिउ नेहु न कीन ॥ कहु नानक नर बावरे अब

किउ डोलत दीन ॥ ७ ॥ तनु धन संपै सुख दीओ अरुजिह नीके धाम ॥ कहु नानक सुनु रे मना सिमरत काहि न राम ॥ ८ ॥ सभ सुख दाता रामु है दूसर नाहि न कोइ ॥ कहु नानक सुनि रे मना तिह सिमरत गति होइ ॥ ९ ॥ जिह सिमरत गति पाईऐ तिहि भजु रे तै मीत ॥ कहु नानक सुन रे मना अउध घटत है नीत ॥ १० ॥ पांच तत को तनु रचिओ जानहु चतुर सुजान ॥ जिह ते उपजिओ

नानक लीन ताहि मै मान ॥११॥
घटि घटि मै हरि जू बसै
संतन कहिओ पुकारि ॥ कहु
नानक तिह भजु मना भउनिधि
उतरहि पारि ॥ १२ ॥ सुखु दुखु
जिह परसै नही लोभ मोह अभि
मानु ॥ कहु नानक सुन रे मना
सो मूरति भगवान ॥ १३ ॥ उस
तति निंदिआ नाहि जिहि कंचन
लोह समानि ॥ कहु नानक सुन
रे मना मुकति ताहि ते जानि ॥
१४ ॥ हरख सोग जाकै नही
बैरी मीत समान ॥ कहु नानक

सुनि रे मना मुकति ताहि तै
जान ॥ १५ ॥ मै काहू कउ देत
नहि नहि मै मानत आनि ॥ कहु
नानक सुनि रे मना गिआनी
ताहि बखानि ॥ १६ ॥ जिहि
बिखिआ सगली तजी लीओ भेख
बैराग ॥ कहु नानक सुन रे
मना तिह नर माथै भाग ॥१७॥
जिहि माइआ ममता तजी सभते
भइओ उदास ॥ कहु नानक सुन
रे मना तिह घटि ब्रहम निवासु
॥ १८ ॥ जिहि प्रानी हउमै तजी
करता राम पछान ॥ कहु नानक

वहु मुकति नरु इह मन साची मान ॥ १६ ॥ भै नासन दुरमति हरन कलि मै हरि को नाम ॥ निसदिन जो नानक भजै सफल होहि तिह काम ॥ २० ॥ जिहवा गुन गोबिंद भजहु करन सुनहु हरि नाम ॥ कहु नानक सुन रे मना परहि न जमके धाम ॥२१॥ जो प्रानी ममता तजै लोभ मोह अहंकार ॥ कहु नानक आपन तरै अउरन लेत उधार ॥ २२ ॥ जिउ सुपना अरु पेखना ऐसे जग कउ जानि ॥ इन मै कछु

छूटसि नाही ऊभ पइआलि ॥
मोहि बिआपहि माइआ जालि ॥
अवर करतूति सगली जमु डानै ॥
गोविंद भजन बिनु तिलु नही
मानै ॥ हरि का नामु जपत दुखु
जाइ ॥ नानक बोलै सहजि
सुभाइ ॥४॥ चारि पदारथ जे को
मागै॥ साध जना की सेवा लागै ॥
जे को आपुना दुखु मिटावै ॥
हरि हरि नामु रिदै सद गावै ॥
जे को अपुनी सोभा लोरै ॥
साध संगि इह हउमै छोरै ॥
जे को जनम मरण ते डरै ॥

साध जना की सरनी परै ॥
जिसु जन कउ प्रभ दरस पिआसा॥
नानक ताकै बलिबलि जासा॥५॥
सगल पुरख महि पुरखु प्रधानु ॥
साधसंगि जाका मिटै अभिमानु ॥
आपस कउ जो जाणै नीचा ॥
सोऊ गनीऐ सभ ते ऊचा ॥
जाका मनु होइ सगल की रीना॥
हरि हरि नामु तिनि घटि घटि
चीना॥मनअपुने ते बुरा मिटाना॥
पेखै सगल स्रिसटि साजना ॥
सूख दूख जन सम द्रिसटेता ॥
नानक पाप पुंन नही लेपा ॥६॥

निरधन कउ धनु तेरो नाउ ॥
निथावे कउ नाउ तेरा थाउ ॥
निमाने कउ प्रभ तेरो मानु ॥
सगल घटा कउ देवहु दानु ॥
करन करावन हार सुआमी ॥
सगल घटा के अंतरजामी ॥
अपनी गति मिति जानहु आपे ॥
आपन संगि आपि प्रभ राते ॥
तुम्हरी उसतति तुम ते होइ ॥
नानक अवरु न जानसि कोइ॥७॥
सरब धरम महि स्रेसट धरमु ॥
हरिको नामु जपि निरमल करमु॥
सगल क्रिया महि ऊतम किरिआ॥

साध संगि दुरमति मलु हिरिआ ॥
सगल उदम महि उदमु भला ॥
हरिका नामु जपहु जीअ सदा ॥
सगल बानी महि अंमृत बानी ॥
हरिको जसु सुनि रसन बखानी ॥
सगल थान ते ओहु ऊतम
थानु ॥ नानक जिह घटि वसै
हरि नामु ॥ ८ ॥ ३ ॥

सलोकु ॥

निरगुनीआर इआनिआ सो
प्रभु सदा समालि ॥ जिनि कीआ
तिसु चीति रखु नानक निबही
नालि ॥ १ ॥

असटपदी ॥

रमईआ के गुन चेति परानी ॥
कवन मूल ते कवन द्रिसटानी ॥
जिनि तूं साजि सवारि सीगारिआ
॥ गरभ अगनि महि जिनहि
उबारिआ ॥ बार बिवसथा तुझहि
पिआरै दूध ॥ भरि जोबन भोजन
सुख सूध ॥ बिरधि भइआ ऊपरि
साक सैन ॥ मुखि अपिआउ बैठ
कउ दैन ॥ इहु निरगुनु गुनु कछू
न बूझै ॥ बखसि लेहु तउ नानक
सीझै॥१॥ जिह प्रसादि धर ऊपरि
सुखि बसहि ॥ सुत भ्रात मीत

बनिता संगि हसहि॥ जिह प्रसादि पीवहि सीतल जला ॥ सुखदाई पवनु पावकु अमुला॥ जिह प्रसादि भोगहि सभि रसा ॥ सगल समग्री संगि साथि बसा ॥ दीने हसत पाव करन नेत्र रसना ॥ तिसहि तिआगि अवर संगि रचना ॥ ऐसे दोख मूड़ अंध बिआपे ॥ नानक काढि लेहु प्रभ आपे ॥२॥ आदि अंति जो राखनहारु ॥ तिस सिउ प्रीति न करै गवारु ॥ जाकी सेवा नउ निधि पावै॥ता सिउ मूड़ा मनु नही लावै ॥ जो ठाकुरु सद सदा

हजूरे॥ ता कउ अंधा जानत दूरे ॥
जाकी टहल पावै दरगह मानु ॥
तिसहि बिसारै मुगधु अजानु ॥
सदा सदा इहु भूलनहारु ॥ नानक
राखनहारु अपारु ॥ ३ ॥ रतनु
तिआगि कउडी संगि रचै॥ साचु
छोडि झूठ संगि मचै ॥ जो छडना
सु असथिरु करि मानै॥ जो होवनु
सो दूरि परानै ॥ छोडि जाइ तिस
का स्रमु करै ॥ संगि सहाई तिसु
परहरै ॥ चंदन लेपु उतारै धोइ॥
गरधब प्रीति भसम संगि होइ ॥
अंध कूप महि पतित बिकराल ॥

कहा बुझारति बूझै डोरा ॥ निसि कहीऐ तउ समझै भोरा ॥ कहा बिसन पद गावै गुंग॥ जतन करै तउ भी सुर भंग ॥ कह पिंगल परबत पर भवन ॥ नही होत ऊहा उसु गवन ॥ करतार करुणा मै दीनु बेनती करै ॥ नानक तुमरी किरपा तरै ॥६॥ संगि सहाई सु आवै न चीति॥जो बैराई ता सिउ प्रीति ॥ बलूआ के गृह भीतरि बसै ॥ अनद केल माइआ रंगि रसै ॥ दृड़ु करि मानै मनहि प्रतीति ॥ कालु न आवै मूड़े

नानक दास सदा कुरबानी ॥
८ ॥ ४ ॥

सलोकु ॥

देनहारु प्रभ छोडि कै लागहि
आन सुआइ ॥ नानक कहू न
सीझई बिनु नावै पति जाइ ॥१॥

असटपदी ॥

दस बसतू ले पाछै पावै ॥ एक
बसतु कारनि बिखोटि गवावै ॥
एक भी न देइ दस भी हिरि
लेइ ॥ तउ मूड़ा कहु कहा करेइ ॥
जिसु ठाकुर सिउ नाही चारा ॥
ता कउ कीजै सद नमसकारा ॥

जा कै मनि लागा प्रभु मीठा ॥
सरब सूख ताहू मनि वूठा ॥
जिसु जन अपना हुकमु मनाइआ ॥
सरब थोक नानक तिनि पाइआ ॥१॥
अगनत साहु अपनी दे रासि ॥
खात पीत बरतै अनद उलासि ॥
अपुनी अमान कछु बहुरि साहु
लेइ ॥ अगिआनी मनि रोसु करेइ ॥
अपनी परतीति आप ही खोवै ॥
बहुरि उसका बिस्वासु न होवै ॥
जिस की बसतु तिसु आगै राखै ॥
प्रभ की आगिआ मानै माथै ॥
उस ते चउगुन करै निहालु ॥

नानक साहिबु सदा दइआलु ॥२॥
अनिक भाति माइआ के हेत ॥
सरपर होवत जानु अनेत ॥
बिरख की छाइआ सिउ रंगु लावै॥
ओहु बिनसै उहु मनि पछुतावै ॥
जो दीसै सो चालनहारु ॥ लपटि
रहिओ तह अंध अंधारु ॥ बटाऊ
सिउ जो लावै नेह॥ ता कउ हाथि
न आवै केह ॥ मन हरि के नाम
की प्रीति सुखदाई ॥ करि किरपा
नानक आपि लए लाई ॥ ३ ॥
मिथिआ तनु धनु कुटंबु सबाइआ
॥ मिथिआ हउमै ममता माइआ ॥

मिथिआ राज जोबन धन माल ॥ मिथिआ काम क्रोध बिकराल ॥ मिथिआ रथ हसती अस्व बसत्रा॥ मिथिआ रंग संगि माइआ पेखि हसता ॥ मिथिआ ध्रोह मोह अभिमानु॥ मिथिआ आपस ऊपरि करत गुमानु ॥ असथिरु भगति साधकी सरन ॥ नानक जपि जपि जीवै हरिके चरण ॥४॥ मिथिआ स्रवन पर निंदा सुनहि॥ मिथिआ हसत पर दरब कउ हिरहि ॥ मिथिआनेत्र पेखतपरत्रिअ रूपाद॥ मिथिआ रसना भोजन अनस्वाद॥

मिथिआ चरन पर बिकार कउ धावहि ॥ मिथिआ मन पर लोभ लुभावहि ॥ मिथिआ तन नही परउपकारा ॥ मिथिआ बासु लेत बिकारा ॥ बिनु बूझे मिथिआ सभ भए ॥ सफल देह नानक हरि हरि नाम लए॥५॥ बिरथी साकत की आरजा ॥ साच बिना कह होवत सूचा ॥ बिरथा नाम बिना तनु अंध ॥ मुखि आवत ताकै दुरगंध ॥ बिनु सिमरन दिनु रैनि बृथा बिहाइ ॥ मेघ बिना जिउ खेती जाइ ॥ गोबिद भजन बिनु

बृथे सभ काम ॥ जिउ किरपन के निरारथ दाम॥ धंनि धंनि ते जन जिह घटि बसिस्रो हरि नाउ ॥ नानक ताकै बलि बलि जाउ॥८॥ रहत अवर कछु अवर कमावत ॥ मनि नही प्रीति मुखहु गंढ लावत॥ जाननहार प्रभू परबीन॥ बाहरि भेख न काहू भीन ॥ अवर उपदेसै आपि न करै ॥ आवत जावत जनमै मरै ॥ जिस कै अंतरि बसै निरंकारु॥ तिस की सीख तरै संसारु॥ जो तुम भाने तिन प्रभु जाता ॥

नानक उन जन चरन पराता॥७॥
करउ बेनती पारब्रहमु सभु जानै॥
अपना कीआ आपहि मानै ॥
आपहि आप आपि करत निबेरा॥
किसै दूरि जनावत किसै बुझावत
नेरा ॥ उपाव सिआनप सगल ते
रहत ॥ सभु कछु जानै आतम
की रहत ॥ जिसु भावै तिसु लए
लड़ि लाइ॥ थान थनंतरि रहिआ
समाइ ॥ सो सेवकु जिसु किरपा
करी॥ निमख निमख जपि नानक
हरी ॥ ८ ॥ ५ ॥

सलोकु ॥

काम क्रोध अरु लोभ मोह
बिनसि जाइ अहंमेव ॥
नानक प्रभ सरणागती ॥
करि प्रसादु गुरदेव ॥ १ ॥

असटपदी ॥

जिह प्रसादि छतीहअंमृत खाहि ॥
तिसु ठाकुर कउ रखु मन माहि ॥
जिहप्रसादि सुगंधत तनिलावहि॥
तिसकउ सिमरत परमगतिपावहि॥
जिह प्रसादि बसहि सुख मंदरि ॥
तिसहि धिआइ सदा मन अंदरि॥
जिहप्रसादि गृहसंगि सुखबसना ॥

आठ पहर सिमरहु तिसु रसना ॥ जिह प्रसादि रंग रस भोग ॥ नानक सदा धिआईऐ धिआवन जोग ॥ १ ॥ जिह प्रसादि पाट पटंबर हढावहि॥ तिसहि तिआगि कतअवर लुभावहि ॥ जिह प्रसादि सुखि सेज सोईजै॥ मन आठ पहर ता का जसु गावीजै॥ जिहप्रसादि तुझुसभु कोऊ मानै॥ मुखि ता को जसु रसन बखानै ॥ जिह प्रसादि तेरो रहता धरमु ॥ मन सदा धिआइ केवल पारब्रहमु ॥ प्रभ जी जपत दरगह मानुपावहि ॥ नानक

पति सेती घरि जावहि ॥ २ ॥
जिह प्रसादि आरोग कंचन देही ॥
लिव लावहु तिसु राम सनेही ॥
जिह प्रसादि तेरा ओला रहत ॥
मनसुखुपावहि हरिहरिजसुकहत॥
जिह प्रसादि तेरेसगल छिद्र ढाकै॥
मन सरनी परु ठाकुर प्रभ ताकै ॥
जिह प्रसादि तुझु को न पहूचै ॥
मन सासि सासि सिमरहु प्रभऊचे॥
जिह प्रसादि पाई द्रुलभ देह ॥
नानक ताकी भगति करेह ॥३॥
जिह प्रसादि आभूखन पहिरीजै ॥
मन तिसु सिमरत किउ आलसु

कीजै ॥ जिह प्रसादि अस्व हसति
असवारी ॥ मन तिसु प्रभु कउ
कबहू न बिसारी ॥ जिह प्रसादि
बाग मिलख धना ॥ राखु परोइ
प्रभु अपुने मना ॥ जिनि तेरी मन
बनत बनाई ॥ ऊठत बैठत सद
तिसहि धिआई ॥ तिसहि धिआइ
जो एक अलखै ॥ ईहा ऊहा नानक
तेरी रखै ॥ ४ ॥ जिह प्रसादि
करहि पुंन बहु दान ॥ मन आठ
पहर करि तिसका धिआन ॥
जिहप्रसादि तू आचार बिउहारी ॥
तिसुप्रभकउ सासिसासि चितारी॥

जिह प्रसादि तेरा सुंदर रूपु ॥
सो प्रभु सिमरहु सदा अनूपु ॥
जिह प्रसादि तेरी नीकी जाति ॥
सो प्रभु सिमरि सदा दिन राति ॥
जिह प्रसादि तेरी पति रहै ॥
गुरप्रसादि नानक जसु कहै ॥५॥
जिह प्रसादि सुनहि करन नाद ॥
जिह प्रसादि पेखहि बिसमाद ॥
जिहप्रसादि बोलहि अंमृत रसना॥
जिह प्रसादि सुखि सहजे बसना ॥
जिह प्रसादि हसत कर चलहि ॥
जिह प्रसादि संपूरन फलहि ॥
जिह प्रसादि परम गति पावहि ॥

जिहप्रसादि सुखिसहजिसमावहि॥ ऐसा प्रभु तिआगि अवर कत लागहु ॥ गुर प्रसादि नानक मनि जागहु ॥ ६ ॥ जिह प्रसादि तूं प्रगटु संसारि ॥ तिसु प्रभु कउ मूलि न मनहु बिसारि ॥ जिह प्रसादि तेरा परतापु ॥ रे मन मूड़ तू ता कउ जापु ॥ जिह प्रसादि तेरे कारज पूरे ॥ तिसहि जानु मनु सदा हजूरे ॥ जिह प्रसादि तूं पावहि साचु ॥ रे मन मेरे तूं ता सिउ राचु ॥ जिह प्रसादि सभ की गति होइ ॥ नानक जापु जपै

जपु सोइ ॥ ७ ॥ आपि जपाए जपै सो नाउ ॥ आपि गावाए सु हरि गुन गाउ ॥ प्रभ किरपा ते होइ प्रगासु ॥ प्रभू दइआ ते कमल बिगासु ॥ प्रभ सुप्रसंन बसै मनि सोइ ॥ प्रभ दइआ ते मति ऊतम होइ ॥ सरब निधान प्रभ तेरी मइआ ॥ आपहु कछू न किनहू लइआ ॥ जितु जितु लावहु तितु लगहि हरि नाथ ॥ नानक इनकै कछू न हाथ ॥८॥६॥

सलोकु ॥

अगम अगाधि पारब्रहमु सोइ ॥

जो जो कहै सु मुकता होइ ॥
सुनि मीता नानकु बिनवंता ॥
साध जना की अचरज कथा॥१॥

असटपदी ॥

साध कै संगि मुख ऊजल होत ॥
साध संगि मलु सगली खोत ॥
साध कै संगि मिटै अभिमानु ॥
साध कै संगि प्रगटै सु गिआनु ॥
साध कै संगि बुझै प्रभु नेरा ॥
साध संगि सभु होत निबेरा ॥
साध कै संगि पाए नाम रतनु ॥
साध कै संगि एक ऊपरि जतनु ॥
साधकी महिमाबरनै कउनु प्रानी॥

नानक साध की सोभा प्रभ माहि
समानी॥१॥साध कै संगि अगोचरु
मिलै॥साध कै संगि सदा परफुलै॥
साधकै संगि आवहि बसि पंचा ॥
साध संगि अंमृत रसु भुंचा ॥
साध संगि होइ सभ की रेन ॥
साध कै संगि मनोहर बैन ॥
साध कै संगि न कतहूं धावै ॥
साध संगि असथिति मनु पावै ॥
साध कै संगि माइआ ते भिंन ॥
साधसंगि नानक प्रभ सुप्रसंन॥२॥
साध संगि दुसमन सभि मीत ॥
साधू कै संगि महा पुनीत ॥

साध संगि किस सिउ नही बैरु ॥
साध कै संगि न बीगा पैरु ॥
साध कै संगि नाही को मंदा ॥
साध संगि जाने परमानंदा ॥
साध कै संगि नाही हउ तापु ॥
साध कै संगि तजै सभु आपु ॥
आपे जानै साध बडाई ॥ नानक
साध प्रभू बनि आई ॥ ३ ॥
साध कै संगि न कबहू धावै ॥
साध कै संगि सदा सुखु पावै ॥
साध संगि बसतु अगोचर लहै ॥
साधू कै संगि अजरु सहै ॥
साध कै संगि बसै थानि ऊचै ॥

साधू कै संगि महलि पहूचै ॥
साध कै संगि दृड़ै सभि धरम ॥
साध कै संगि केवल पारब्रहम ॥
साधकै संगि पाए नाम निधान ॥
नानक साधू कै कुरबान ॥ ४ ॥
साध कै संगि सभ कुल उधारै ॥
साध संगि साजन मीत कुटंब
निसतारै ॥ साधू कै संगि सो धनु
पावै ॥जिसु धनतेसभुको वरसावै॥
साध संगि धरमराइ करे सेवा ॥
साध कै संगि सोभा सुर देवा ॥
साधू कै संगि पाप पलाइन ॥
साध संगि अंमृत गुन गाइन ॥

साध कै संगि स्रब थान गंमि ॥
नानक साध कै संगि सफल जनम
॥५॥साधकै संगि नही कछुघाल॥
दरसनु भेटत होत निहाल ॥
साध कै संगि कलूखत हरै ॥
साध कै संगि नरक परहरै ॥
साध कै संगि ईहा ऊहा सुहेला ॥
साध संगि बिछुरत हरि मेला ॥
जो इछै सोई फलु पावै ॥
साध कै संगि न बिरथा जावै ॥
पारब्रहमु साध रिद बसै ॥ नानक
उधरै साध सुनि रसै ॥ ६ ॥
साध कै संगि सुनत हरि नाउ ॥

साध संगि हरि कै गुन गाउ ॥
साध कै संगि न मन ते बिसरै ॥
साध संगि सरपर निसतरै ॥
साध कै संगि लगै प्रभु मीठा ॥
साधू कै संगि घटि घटि डीठा ॥
साध संगि भए आगिआकारी ॥
साध संगि गति भई हमारी ॥
साध कै संगि मिटे सभि रोग ॥
नानक साध भेटे संजोग ॥ ७ ॥
साध की महिमा बेद न जानहि ॥
जेता सुनहि तेता बखिआनहि ॥
साध की उपमा तिहु गुण ते दूरि॥
साध की उपमा रही भरपूरि ॥

साध की सोभा का नाही अंत ॥
साध की सोभा सदा बेअंत ॥
साध की सोभा ऊच ते ऊची ॥
साध की सोभा मूच ते मूची ॥
साध की सोभा साध बनिआई ॥
नानक साध प्रभ भेदु न भाई ॥
८ ॥ ७ ॥

सलोकु ॥

मनि साचा मुखि साचा सोइ ॥
अवरु न पेखै एकसु बिनु कोइ ॥
नानक इह लछण-
ब्रहम गिआनी होइ ॥ १ ॥

असटपदी ॥

ब्रहम गिआनी सदा निरलेप ॥ जैसे जल महि कमल अलेप ॥ ब्रहम गिआनी सदा निरदोख ॥ जैसे सूरु सरब कउ सोख ॥ ब्रहम गिआनी कै द्रिसटि समानि॥ जैसे राज रंक कउ लागै तुलि पवान ॥ ब्रहम गिआनी कै धीरजु एक ॥ जिउ बसुधा कोऊ खोदै कोऊ चंदन लेप ॥ ब्रहम गिआनी का इहै गुनाउ ॥ नानक जिउ पावक का सहज सुभाउ ॥ १ ॥ ब्रहम गिआनी निरमलु ते निरमला ॥

जैसे मैलु ना लागै जला ॥ ब्रहम
गिआनी कै मनि होइ प्रगासु ॥
जैसे धर ऊपरि आकासु ॥ ब्रहम
गिआनी कै मित्र सत्रु समानि ॥
ब्रहमगिआनी कै नाही अभिमान॥
ब्रहम गिआनी ऊच ते ऊचा ॥
मनि अपनै है सभ ते नीचा ॥
ब्रहम गिआनी से जन भए ॥
नानक जिन प्रभु आपि करेइ ॥२॥
ब्रहम गिआनी सगल की रीना ॥
आतम रसु ब्रहमगिआनी चीना ॥
ब्रहम गिआनी की सभ ऊपरि
मइआ ॥ ब्रहम गिआनी ते कछु

बुरा न भइया ॥ ब्रहम गिआनी सदा समदरसी ॥ ब्रहम गिआनी की द्रिसटि अंम्रितु बरसी ॥ ब्रहम गिआनी बंधन ते मुकता ॥ ब्रहम गिआनी की निरमल जुगता ॥ ब्रहमगिआनीका भोजनु गिआन॥ नानक ब्रहम गिआनी का ब्रहम धिआनु ॥ ३ ॥ ब्रहम गिआनी एक ऊपरि आस ॥ ब्रहमगिआनी का नही बिनास ॥ ब्रहमगिआनी कै गरीबी समाहा ॥ ब्रहमगिआनी परउपकार उमाहा ॥ ब्रहमगिआनी कै नाही धंधा ॥ ब्रहम गिआनी

ले धावतु बंधा ॥ ब्रहम गिआनी
कै होइ सु भला ॥ ब्रहम गिआनी
सुफल फला ॥ ब्रहम गिआनी
संगि सगल उधारु ॥ नानक ब्रहम
गिआनी जपै सगल संसारु ॥४॥
ब्रहम गिआनी कै एकै रंग ॥
ब्रहमगिआनी कै बसै प्रभु संग ॥
ब्रहमगिआनी कै नामु आधारु ॥
ब्रहमगिआनी कै नामु परवारु ॥
ब्रहमगिआनी सदा सद जागत ॥
ब्रहमगिआनी अहंबुधि तिआगत॥
ब्रहमगिआनी कै मनि परमानंद ॥
ब्रहमगिआनी कै घरि सदा अनंद ॥

ब्रहमगिआनी सुख सहज निवास॥ नानक ब्रहम गिआनी का नही बिनास ॥५॥ ब्रहमगिआनी ब्रहम का बेता॥ब्रहम गिआनी एक संगि हेता॥ब्रहमगिआनीकै होइ अचिंत॥ ब्रहम गिआनी का निरमल मंत ॥ ब्रहमगिआनी जिसु करै प्रभु आपि॥ ब्रहमगिआनी का वड प्रताप॥ब्रहम गिआनी का दरसु बडभागी पाईऐ॥ ब्रहमगिआनी कउ बलि बलि जाईऐ॥ ब्रहमगिआनी कउ खोजहि महेसुर॥ नानक ब्रहमगिआनी आपि परमेसुर ॥६॥ ब्रहम गिआनी की कीमति

नाहि ॥ ब्रहम गिआनी कै सगल मन माहि ॥ ब्रहम गिआनी का कउन जानै भेदु ॥ ब्रहम गिआनी कउ सदा अदेसु ॥ ब्रहम गिआनी का कथिआ न जाइ अधाख्यर ॥ ब्रहमगिआनी सरब का ठाकुरु ॥ ब्रहमगिआनी की मिति कउनु बखानै ॥ ब्रहमगिआनी की गति ब्रहम गिआनी जानै ॥ ब्रहम गिआनी का अंतु न पारु॥ नानक ब्रहमगिआनी कउ सदा नमसकारु ॥७॥ ब्रहम गिआनी सभ सृसटि का करता ॥ ब्रहम गिआनी सद

जीवै नही मरता ॥ ब्रहमगिम्रानी
मुकति जुगति जीम्र का दाता ॥
ब्रहमगिम्रानीपूरनपुरखु बिधाता॥
ब्रहमगिम्रानी म्रनाथ का नाथु ॥
ब्रहमगिम्रानी कासभ ऊपरि हाथु॥
ब्रहमगिम्रानी का सगल म्रकारु ॥
ब्रहमगिम्रानी म्रापि निरंकारु ॥
ब्रहमगिम्रानी की सोभा ब्रहम
गिम्रानी बनी ॥ नानक ब्रहम
गिम्रानी सरब का धनी ॥८॥८॥

सलोकु ॥

उरिधारै जो म्रंतरि नामु ॥
सरब मै पेखै भगवानु ॥

निमख निमख ठाकुर नमसकारै ॥
नानक ओहु अपरसु
सगल निसतारै ॥ १ ॥

असटपदी ॥

मिथिआ नाही रसना परस ॥
मन महि प्रीति निरंजन दरस ॥
पर त्रिअ रूपु न पेखै नेत्र ॥
साध की टहल संत संगि हेत ॥
करन न सुनै काहू की निंदा ॥
सभ ते जानै आपस कउ मंदा ॥
गुर प्रसादि बिखिआ परहरै ॥
मन की बासना मन ते टरै ॥

इंद्री जित पंच दोख ते रहत ॥ नानक कोटि मधे को ऐसा अपरस ॥ १ ॥ बैसनो सो जिसु ऊपरि सुप्रसंन ॥ बिसन की माइआ ते होइ भिंन ॥ करम करत होवै निहकरम॥तिसु बैसनोका निरमल धरम ॥ काहू फल की इच्छा नही बाछै॥ केवल भगति कीरतन संगि राचै ॥ मन तन अंतरि सिमरन गोपाल॥सबऊपरिहोवतकिरपाल॥ आपि द्रिड़ै अवरह नामु जपावै ॥ नानक ओहु बैसनो परमगति पावै ॥२॥ भगउती भगवंत भगति का

रंगु॥सगलतिआगै दुसटका संगु॥
मन ते बिनसै सगला भरमु ॥
करि पूजै सगल पारब्रहमु ॥
साध संगि पापा मलु खोवै ॥
तिसु भगउती की मतिऊतमहोवै॥
भगवंत की टहल करै नितनीति॥
मनु तनु अरपै बिसन परीति ॥
हरिके चरन हिरदै बसावै॥ नानक
ऐसाभगउती भगवंत कउपावै॥३॥
सो पंडितु जो मनु परबोधै ॥
राम नामु आतम महि सोधै ॥
राम नाम सारु रसु पीवै ॥ उसु
पंडित कै उपदेसि जगु जीवै ॥

हरि की कथा हिरदै बसावै ॥
सो पंडितु फिरि जोनि न आवै ॥
बेद पुरान सिम्रिति बूझै मूल ॥
सूखम महि जानै असथूलु ॥
चहु वरना कउ दे उपदेसु ॥ नानक
उस पंडित कउ सदा अदेसु ॥४॥
बीज मंत्र सरब को गिआनु ॥
चहु वरना महि जपै कोऊ नामु ॥
जो जो जपै तिसकी गति होइ ॥
साध संगि पावै जनु कोइ ॥
करि किरपा अंतरि उरधारै ॥
पसु प्रेत मुघद पाथर कउ तारै ॥
सरब रोग का अउखदु नामु ॥

कलिआण रूप मंगल गुणगाम ॥ काहू जुगति कितै न पाईऐ धरमि॥ नानक तिसु मिलै जिसु लिखिआ धुरि करमि ॥ ५ ॥ जिस कै मनि पारब्रहम का निवासु ॥ तिस का नामु सति रामदासु ॥ आतमरामु तिसु नदरी आइआ॥ दास दसंतन भाइ तिनि पाइआ ॥ सदा निकटि निकटि हरि जानु॥सो दासु दरगह परवानु ॥ अपुने दास कउ आपि किरपा करै ॥ तिसु दास कउ सभ सोझी परै ॥ सगल संगि आतम उदासु ॥ ऐसी जुगति नानक

रामदासु ॥६॥ प्रभ की आगिआ आतम हितावै ॥ जीवन मुकति सोऊ कहावै ॥ तैसा हरखु तैसा उसु सोगु ॥ सदा अनंदु तह नही विओगु ॥ तैसा सुवरनु तैसी उसु माटी ॥ तैसा अंमृतु तैसी बिखु खाटी॥तैसामानु तैसा अभिमानु॥ तैसा रंकु तैसा राजानु॥जोवरताए साई जुगति ॥ नानक ओहु पुरखु कहीऐ जीवन मुकति ॥७॥ पारब्रहम के सगले ठाउ ॥ जितु जितु घरि राखै तैसा तिन नाउ ॥ आपे करन करावन जोगु ॥ प्रभ

भावै सोई फुनि होगु ॥ पसरिओ
आपि होइ अनत तरंग ॥ लखे
न जाहि पारब्रहम के रंग ॥
जैसी मति देइ तैसा परगास ॥
पारब्रहमु करता अबिनास ॥
सदा सदा सदा दइआल ॥
सिमरि सिमरि नानक भए
निहाल ॥ ८ ॥ ६ ॥

संलोकु ॥

उसतति करहि अनेक जन
अंतु न पारावार ॥
नानक रचना प्रभि रची
बहु बिधि अनिक प्रकार ॥ १ ॥

असटपदी ॥

कई कोटि होए पूजारी ॥ कई कोटि आचार बिउहारी ॥ कई कोटि भए तीरथ वासी ॥ कई कोटि बन भ्रमहि उदासी ॥ कई कोटि बेद के स्रोते ॥ कई कोटि तपीसुर होते ॥ कई कोटि आतम धिआनु धारहि ॥ कई कोटि कबि काबि बीचारहि॥कईकोटि नवतन नाम धिआवहि ॥ नानक करते का अंतु न पावहि ॥ १ ॥ कई कोटि भए अभिमानी॥कई कोटि अंध अगिआनी ॥ कई कोटि

किरपन कठोर ॥ कई कोटि अभिग आतम निकोर ॥ कई कोटि पर दरब कउ हिरहि ॥ कई कोटि पर दूखना करहि ॥ कई कोटि माइआ स्रम माहि ॥ कई कोटि परदेस भ्रमाहि॥ जितु जितु लावहु तितु तितु लगना ॥ नानक करते की जानै करता रचना॥२॥

कई कोटि सिध जती जोगी ॥
कई कोटि राजे रस भोगी ॥
कई कोटि पंखी सरप उपाए ॥
कई कोटि पाथर बिरख निपजाए॥
कई कोटि पवण पाणी बैसंतर ॥

कई कोटि देस भू मंडल ॥ कई कोटि ससीअर सूर नख्यत्र ॥ कई कोटि देव दानव इंद्र सिरि छत्र ॥ सगल समग्री अपनै सूति धारै ॥ नानक जिसु जिसु भावै तिसु तिसु निसतारै ॥३॥ कई कोटि राजस तामस सातक ॥ कई कोटि बेद पुरान सिमृति अरु सासत ॥ कई कोटि कीए रतन समुद ॥ कई कोटि नाना प्रकार जंत ॥ कई कोटि कीए चिर जीवे ॥ कई कोटि गिरी मेर सुवरन थीवे॥ कई कोटि जख्य किंनर पिसाच ॥

कई कोटि भूत प्रेत सूकर मृगाच ॥
सभते नेरै सभहू ते दूरि ॥ नानक
आपि अलिपतु रहिआ भरपूरि ॥४॥
कई कोटि पाताल के वासी ॥
कई कोटि नरक सुरग निवासी ॥
कईकोटि जनमहि जीवहि मरहि॥
कई कोटि बहु जोनी फिरहि ॥
कई कोटि बैठत ही खाहि ॥
कई कोटि घालहि थकि पाहि ॥
कई कोटि कीए धनवंत ॥
कई कोटि माइआ महि चिंत ॥
जह जह भाणा तह तह राखे ॥
नानक सभु किछु प्रभ कै हाथे ॥५॥

कई कोटि भए बैरागी ॥ राम
नाम संगि तिनि लिवलागी ॥
कई कोटि प्रभ कउ खोजंते ॥
आतम महि पारब्रहमु लहंते ॥
कई कोटि दरसन प्रभ पिआस ॥
तिनकउ मिलिओ प्रभु अबिनास॥
कई कोटि मागहि सतसंगु ॥
पारब्रहम तिन लागा रंगु ॥
जिन कउ होए आपि सुप्रसंन ॥
नानकते जन सदा धंनि धंनि॥६॥
कई कोटि खाणी अरु खंड ॥ कई
कोटि अकास ब्रहमंड ॥ कई कोटि
होए अवतार ॥ कई जुगति कीनो

बिसथार ॥ कई बार पसरिओ
पासार ॥ सदा सदा इकु एकंकार ॥
कई कोटि कीने बहु भाति ॥
प्रभ ते होए प्रभ माहि समाति ॥
ता का अंतु न जानै कोइ ॥ आपे
आपि नानक प्रभु सोइ ॥ ७ ॥
कई कोटि पारब्रहम के दास ॥
तिन होवत आतम परगास ॥
कई कोटि तत के बेते ॥ सदा
निहारहि एको नेत्रे ॥ कई कोटि
नाम रसु पीवहि ॥ अमर भए
सद सद ही जीवहि ॥ कई कोटि
नाम गुन गावहि ॥ आतम रसि

सुखि सहजि समावहि ॥ अपुने जन कउ सासि सासि समारे ॥ नानक ओइ परमेसुर के पिआरे ॥ ८ ॥ १० ॥

सलोकु ॥

करण कारण प्रभु एकु है दूसर नाही कोइ ॥ नानक तिसु बलिहारणै जलि थलि महीअलि सोइ ॥१॥

असटपदी ॥

करन करावन करनै जोगु ॥ जो तिसु भावै सोई होगु ॥ खिन महि थापि उथापनहारा ॥

अंतु नही किछु पारावारा ॥
हुकमे धारि अधर रहावै ॥
हुकमे उपजै हुकमि समावै ॥
हुकमे ऊच नीच बिउहार ॥
हुकमे अनिक रंग परकार ॥
करि करि देखै अपनी वडिआई ॥
नानक सभ महि रहिआ समाई ॥
१ ॥ प्रभ भावै मानुख गति पावै
॥ प्रभ भावै ता पाथर तरावै ॥
प्रभ भावै बिनु सास ते राखै ॥
प्रभ भावै ता हरिगुण गावै ॥
प्रभ भावै ता पतित उधारै ॥
आपि करै आपन बीचारै ॥

दुहा सिरिश्रा का श्रापि सुश्रामी ॥
खेलै बिगसै श्रंतरजामी ॥ जो
भावै सो कार करावै ॥ नानक
द्रसटी अवरु न आवै ॥ २ ॥
कहु मानुख ते किश्रा होइ श्रावै ॥
जो तिसु भावै सोई करावै ॥ इस
कै हाथि होइ ता सभु किछु लेइ ॥
जो तिसु भावै सोई करेइ ॥
अनजानत बिखिआ महि रचै ॥
जे जानत आपन आप बचै ॥
भरमे भूला दहदिसि धावै॥ निमख
माहि चारि कुंट फिरि आवै ॥
करि किरपा जिसु अपनी भगति

देइ ॥ नानक ते जन नामि मिलेइ ॥ ३ ॥ खिन महि नीच कीट कउ राज ॥ पारब्रहम गरीब निवाज ॥ जा का द्रसटि कछू न आवै ॥ तिसु ततकाल दहदिस प्रगटावै ॥ जा कउ अपुनी करै बखसीस ॥ ता का लेखा न गनै जगदीस ॥ जीउ पिंडु सभ तिसकी रासि ॥ घटि घटि पूरन ब्रहम प्रगास ॥ अपनी बणत आपि बनाई ॥ नानक जीवै देखि बडाई ॥ ४ ॥ इस का बलु नाही इसु हाथ ॥ करन करावन सरब को नाथ ॥

आगिआकारी बपुरा जीउ ॥
जौ तिसु भावै सोई फुनि थीउ ॥
कबहू ऊच नीच महि बसै ॥
कबहू सोग हरख रंगि हसै ॥
कबहू निंद चिंद बिउहार ॥
कबहू ऊभ अकास पइआल ॥
कबहू बेता ब्रहम बीचार ॥
नानक आपि मिलावणहार ॥५॥
कबहू निरति करै बहु भाति ॥
कबहू सोइ रहै दिनु राति ॥
कबहू महा क्रोध बिकराल ॥
कबहू सरब की होत रवाल ॥
कबहू होइ बहै बड राजा ॥

कबहू भेखारी नीच का साजा ॥
कबहू अपकीरति महि आवै ॥
कबहू भला भला कहावै ॥ जिउ
प्रभु राखै तिव ही रहै ॥ गुर
प्रसादि नानक सचु कहै ॥ ६ ॥
कबहू होइ पंडितु करे बख्यानु ॥
कबहू मोनि धारी लाव धिआनु ॥
कबहू तट तीरथ इसनान ॥
कबहू सिधसाधिक मुखि गिआन॥
कबहू कीटहसतिपतंगहोइ जीआ॥
अनिक जोनि भरमै भरमीआ ॥
नाना रूप जिउ स्वागी दिखावै ॥
जिउ प्रभ भावै तिवै नचावै ॥

जो तिसु भावै सोई होइ ॥ नानक
दूजा अवरु न कोइ॥७॥कबहू साध
संगति इहु पावै॥ इसु असथान ते
बहुरि न आवै॥ अंतरि होइगिआन
परगासु ॥ उसु असथान का नही
बिनासु॥मनतननामिरतेइकरंगि॥
सदा बसहि पारब्रहम कै संगि ॥
जिउ जल महि जलुआइ खटाना॥
तिउ जोती संगि जोति समाना॥
मिट गए गवन पाए बिस्राम ॥
नानकप्रभकै सदकुरबान॥८॥११॥

सलोकु ॥

सुखी बसै मसकीनीआ

आपु निवारि तले ॥
बडे बडे अहंकारीआ
नानक गरबि गले ॥ १ ॥

असटपदी ॥

जिसकै अंतरि राज अभिमानु ॥
सो नरक पाती होवत सुआनु ॥
जो जानै मै जोबन वंतु ॥ सो
होवत बिसटा का जंतु ॥
आपस कउ करमवंतु कहावै ॥
जनमि मरै बहु जोनि भ्रमावै ॥
धन भूमि का जो करै गुमानु ॥
सो मूरखु अंधा अगिआनु ॥
करि किरपा जिसकै हिरदै गरीबी

बसावै ॥ नानक ईहा मुकतु आगै
सुखु पावै ॥ १ ॥ धनवंता होइ
करि गरबावै ॥ तृण समानि कछु
संगि न जावै ॥ बहु लसकर
मानुख ऊपरि करे आस ॥ पल
भीतरि ता का होइ बिनास ॥
सभ ते आप जानै बलवंतु ॥
खिन महि होइ जाइ भसमंतु ॥
किसै न बदै आपि अहंकारी ॥
धरमराइ तिसु करे खुआरी ॥
गुरप्रसादि जाका मिटै अभिमानु॥
सोजनु नानक दरगह परवानु॥२॥
कोटि करम करै हउ धारे ॥

स्रमु पावै सगले बिरथारे ॥
अनिक तपसिआ करे अहंकार ॥
नरक सुरग फिरि फिरि अवतार॥
अनिकजतन करि आतमनहीद्रवै॥
हरि दरगह कहु कसे गवै ॥
आपस कउ जो भला कहावै ॥
तिसहि भलाई निकटि न आवै ॥
सरब की रेन जाका मनु होइ ॥
कहुनानक ताकी निरमलसोइ॥३॥
जब लगु जानै मुझ ते कछु
होइ ॥ तब इस कउ सुखु नाही
कोइ ॥ जब इह जानै मै किछु
करता ॥ तब लगु गरभ जोनिमहि

फिरता ॥ जब धारै कोऊ बैरी मीतु ॥ तब लगु निहचलु नाही चीतु॥ जब लगु मोह मगनु संगि माइ ॥ तब लगु धरमराइ देइ सजाइ॥प्रभ किरपा ते बंधन तूटै॥ गुर प्रसादि नानक हउ छूटै ॥४॥

सहस खटे लख कउ उठि धावै ॥ तृपति न आवै माइआ पाछै पावै॥ अनिक भोग बिखिआ के करै ॥ नह तृपतावै खपि खपि मरै ॥ बिना संतोख नही कोऊ राजै ॥ सुपन मनोरथ बृथे सभ काज ॥ नाम रंगि सरब सुखु होइ ॥

बडभागी किसै परापति होइ ॥
करन करावन आपे आपि ॥ सदा
सदा नानक हरि जापि ॥ ५ ॥
करन करावन करनैहारु ॥ इस कै
हाथि कहा बीचारु ॥ जैसी द्रसटि
करे तैसा होइ॥ आपे आपि आपि
प्रभु सोइ ॥ जो किछु कीनो सु
अपनै रंगि ॥ सभ ते दूरि सभहू
कै संगि ॥ बूझै देखै करै बिबेक ॥
आपहि एक आपहि अनेक ॥
मरै न बिनसै आवै न जाइ ॥
नानक सदही रहिआ समाइ ॥६॥
आपि उपदेसै समझै आपि ॥

आपे रचिआ सभ कै साथि ॥
आपि कीनो आपन बिसथारु ॥
सभु कछु उसका ओहु करनैहारु ॥
उसते भिंन कहहु किछु होइ ॥
थान थनंतरि एकै सोइ ॥
अपुने चलित आपि करणैहार ॥
कउतक करै रंग अपार ॥ मन
महि आपि मन अपुने माहि ॥
नानक कीमति कहनु न जाइ॥७॥
सति सति सति प्रभु सुआमी ॥
गुर प्रसादि किनै वखिआनी ॥
सचु सचु सचु सभु कीना ॥
कोटि मधे किनै बिरलै चीना ॥

भला भला भला तेरा रूप ॥ अति सुंदर अपार अनूप ॥ निरमल निरमल निरमल तेरी बाणी ॥ घटि घटि सुनी स्रवन बख्याणी ॥ पवित्र पवित्र पवित्र पुनीत ॥ नामु जपै नानक मनि प्रीति ॥ ८ ॥ १२ ॥

सलोकु ॥

संत सरनि जो जनु परे
सो जनु उधरनहार ॥
संत की निंदा नानका
बहुरि बहुरि अवतार ॥ १ ॥

असटपदी ॥

संत कै दूखनि आरजा घटै ॥
संत कै दूखनि जम ते नही छुटै ॥
संत कै दूखनि सुखु सभु जाइ ॥
संत कै दूखनि नरक महि पाइ ॥
संत कै दूखनि मति होइ मलीन॥
संत कै दूखनि सोभा ते हीन ॥
संत कै हते कउ रखै न कोइ ॥
संत कै दूखनि थान भ्रसटु होइ ॥
संत क्रिपाल क्रिपा जे करै ॥ नानक
संत संगि निंदकु भी तरै ॥ १ ॥
संत के दूखन ते मुखु भवै ॥
संतन कै दूखनि काग जिउ लवै ॥

संतन कै दूखनि सरप जोनि पाइ ॥
संतकै दूखनि तृगदजोनिकिरमाइ॥
संतनकै दूखनि तृसना महि जलै ॥
संत कै दूखनि सभु को छलै ॥
संत कै दूखनि तेजु सभु जाइ ॥
संत कै दूखनि नीचु नीचाइ ॥
संत दोखी का थाउ को नाहि ॥
नानक संत भावै ता ओइ भी
गति पाहि ॥२॥ संत का निंदकु
महा अतताई ॥ संत का निंदकु
खिनु टिकनु न पाई ॥ संत का
निंदकु महा हतियारा ॥ संत का
निंदकु परमेसुरि मारा ॥ संत का

निंदकु राज ते हीनु ॥ संत का निंदकु दुखीआ अरु दीनु ॥ संत के निंदक कउ सरब रोग ॥ संत के निंदक कउ सदा बिजोग ॥ संत की निंदा दोख महि दोखु ॥ नानक संत भावै ता उसका भी होइ मोखु ॥ ३ ॥ संत का दोखी सदा अपवितु ॥ संत का दोखी किसै का नही मितु ॥ संत के दोखी कउ डानु लागै ॥ संत के दोखी कउ सभ तिआगै ॥ संत का दोखी महा अहंकारी ॥ संत का दोखी सदा बिकारी ॥ संत

का दोखी जनमै मरै ॥ संत की दूखना सुख ते टरै ॥ संत के दोखी कउ नाही ठाउ ॥ नानक संत भावै ता लए मिलाइ ॥ ४ ॥ संत का दोखी अध बीच ते टूटै ॥ संत का दोखी कितै काजि न पहूचै॥ संत के दोखी कउ उदिआन भ्रमाईऐ ॥ संत का दोखी उझड़ि पाईऐ ॥ संत का दोखी अंतर ते थोथा ॥ जिउ सास बिना मिरतक की लोथा॥ संत के दोखी की जड़ किछु नाहि॥आपन बीजि आपे ही खाहि ॥ संत के दोखी कउ अवरु

न राखनहारु ॥ नानक संत भावै ता लए उबारि ॥ ५ ॥ संत का दोखी इउ बिललाइ ॥ जिउ जल बिहून मछुली तड़फड़ाइ ॥ संत का दोखी भूखा नही राजै ॥ जिउ पावकु ईधनि नही ध्रापै ॥ संत का दोखी छुटै इकेला ॥ जिउ बूआड़ु तिलु खेत माहि दुहेला ॥ संत का दोखी धरम ते रहत ॥ संतका दोखीसद मिथिआ कहत॥ किरतु निंदकका धुरि ही पइआ॥ नानक जो तिसु भावै सोई थिआ ॥ ६ ॥ संतका दोखी बिगड़ रूपु

होइ जाइ ॥ संत के दोखी कउ दरगह मिलै सजाइ ॥ संत का दोखी सदा सहकाईऐ ॥ संत का दोखी न मरै न जीवाईऐ॥ संतके दोखी की पुजै न आसा ॥ संत का दोखी उठि चलै निरासा ॥ संत कै दोखि न तृसटै कोइ ॥ जैसा भावै तैसा कोई होइ ॥ पइआ किरतु न मेटै कोइ ॥ नानक जानै सचा सोइ ॥ ७ ॥ सभ घट तिस के ओहु करनैहारु ॥ सदा सदा तिस कउ नमसकारु ॥ प्रभकी उसतति करहु दिनु राति॥

तिसहि धिआवहु सासि गिरासि ॥
सभु कछु वरतै तिसका कीआ ॥
जैसा करे तैसा को थीआ ॥
अपना खेलु आपि करनै हारु ॥
दूसर कउनु कहै बीचारु ॥
जिसनो क्रिपा करै तिसु आपन नामु देइ ॥ वडभागी नानक जन सेइ ॥ ८ ॥ १३ ॥

सलोकु ॥

तजहु सिआनप सुरि जनहु सिमरहु हरि हरि राइ ॥
एक आस हरि मनि रखहु नानक दूखु भरमु भउ जाइ ॥१॥

असटपदी ॥

मानुस की टेक बृथी सभ जानु ॥ देवन कउ एकै भगवानु ॥ जिस कै दीऐ रहै अघाइ ॥ बहुरि न तृसना लागै आइ ॥ मारै राखै एको आपि ॥ मानुख कै किछु नाही हाथि ॥ तिस का हुकमु बूझि सुखु होइ ॥ तिस का नामु रखु कंठि पराइ ॥ सिमरि सिमरि सिमरि प्रभु सोइ॥ नानक बिघनु न लागै कोइ ॥ १ ॥ उसतति मनमहि करि निरंकार ॥ करि मन मेरे सति बिउहार ॥

निरमल रसना अंमृतु पीउ ॥
सदा सुहेला करि लेहि जीउ ॥
नैनहु पेखु ठाकुर का रंगु ॥
साध संगि बिनसै सभ संगु ॥
चरन चलउ मारगि गोबिंद ॥
मिटहि पाप जपीऐ हरि बिंद ॥
करिहरि करम स्रवनि हरि कथा॥
हरि दरगह नानक ऊजल मथा ॥
२॥ वडभागी ते जन जग माहि ॥
सदा सदा हरि के गुन गाहि ॥
राम नाम जो करहि बीचार ॥
से धनवंत गनी संसार ॥ मनि
तनि मुखि बोलहि हरि मुखी ॥

सदा सदा जानहु ते सुखी ॥
एको एकु एकु पछानै ॥ इत उत
को ओहु सोझी जानै॥ नाम संगि
जिस का मनु मानिआ ॥ नानक
तिनहि निरंजनु जानिआ ॥ ३ ॥
गुर प्रसादि आपन आपु सुझै ॥
तिस की जानहु तृसना बुझै ॥
साध संगि हरि हरि जसु कहत ॥
सरबरोग ते ओहु हरि जनु रहत॥
अनदिनु कीरतनु केवल बख्यानु॥
गृहसत महि सोई निरबानु ॥
एक ऊपरि जिसु जनकी आसा ॥
तिस की कटीऐ जम की फासा ॥

पारब्रहम की जिसु मनि भूख ॥
नानक तिसहि न लागहि दूख ॥४॥
जिस कउ हरि प्रभु मनि चिति
आवै ॥ सो संतु सुहेला नही डुलावै ॥
जिसु प्रभु अपुना किरपा करै ॥
सो सेवकु कहु किस ते डरै ॥
जैसा सा तैसा द्रिसटाइआ ॥
अपुने कारज महि आपि समाइआ ॥
सोधत सोधत सोधत सीझिआ ॥
गुर प्रसादि ततु सभु बूझिआ ॥
जब देखउ तब सभु किछु मूलु ॥
नानक सो सूखमु सोई असथूलु ॥
५ ॥ नह किछु जनमै नह किछु

मरै॥आपन चलितु आप ही करै॥
आवनु जावनु द्रसटि अनद्रसटि॥
आगिआकारी धारी सभ स्रसटि॥
आपे आपि सगल महि आपि॥
अनिक जुगति रचि थापि उथापि॥
अबिनासी नाही किछु खंड॥
धारण धारि रहिओ ब्रहमंड॥
अलख अभेव पुरख परताप॥
आपि जपाए त नानक जाप॥६॥
जिन प्रभु जाता सु सोभावंत॥
सगल संसारु उधरै तिन मंत॥
प्रभ के सेवक सगल उधारन॥
प्रभ के सेवक दूख बिसारन॥

आपे मेलि लए किरपाल ॥ गुर का सबदु जपि भए निहाल ॥ उनकी सेवा सोई लागै ॥ जिस नो क्रिपा करहि वडभागै ॥ नामु जपत पावै बिस्रामु॥ नानक तिन पुरख कउ ऊतम करि मानु ॥७॥ जो किछु करै सु प्रभ कै रंगि ॥ सदा सदा बसै हरि संगि ॥ सहज सुभाइ होवै सो होइ ॥ करणैहारु पछाणै सोइ ॥ प्रभ का कीआ जन मीठ लगाना ॥ जैसा सा तैसा द्रिसटाना ॥ जिस ते उपजे तिसु माहि समाए ॥ ओइ

सुख निधान उनहू बनि आए ॥
आपस कउ आपि दीनो मानु ॥
नानक प्रभ जनु एको जानु ॥
८ ॥ १४ ॥

सलोकु ॥

सरब कला भरपूर प्रभ
बिरथा जाननहार ॥
जा कै सिमरनि उधरीऐ
नानक तिसु बलिहार ॥१॥

असटपदी ॥

टूटी गाढनहार गुोपाल ॥ सरब
जीआ आपे प्रतिपाल ॥ सगल की
चिंता जिसु मन माहि ॥ तिस ते

बिरथा कोई नाहि ॥ रे मन मेरे सदा हरि जापि ॥ अबिनासी प्रभु आपे आपि ॥ आपन कीआ कछू न होइ॥जे सउ प्रानी लोचै कोइ॥ तिसु बिनु नाही तेर किछु काम॥ गति नानक जपि एक हरिनाम ॥ १ ॥ रूपवंतु होइ नाही मोहै ॥ प्रभ की जोति सगल घट सोहै ॥ धनवंता होइ किआ को गरब ॥ जा सभु किछु तिसका दीआदरबै॥ अति सूरा जे कोऊ कहावै ॥ प्रभ की कला बिना कह धावै ॥ जे को होइ बहै दातारु ॥ तिसु

देनहारु जानै गावारु ॥ जिसु गुर प्रसादि तूटै हउ रोगु ॥ नानक सो जनु सदा अरोगु ॥ २ ॥ जिउ मंदर कउ थामै थंमनु ॥ तिउ गुर का सबदु मनहि असथंमनु ॥ जिउ पाखाणु नाव चड़ि तरै ॥ प्राणी गुरचरण लगतु निसतरै ॥ जिउ अंधकार दीपक परगासु ॥ गुरदरसनु देखि मनि होइ बिगासु ॥ जिउ महा उदिआन महि मारगु पावै ॥ तिउ साधू संगि मिलि जोति प्रगटावै ॥ तिन संतन की बाछउ धूरि ॥ नानक की हरि लोचा पूरि

॥३॥मन मूरख काहे बिललाईऐ ॥ पुरब लिखे का लिखिआ पाईऐ ॥ दूख सूख प्रभ देवनहारु ॥ अवर तिआगि तू तिसहि चितारु ॥ जो कछु करै सोई सुखु मानु ॥ भूला काहे फिरहि अजान ॥ कउन बसतु आई तेरै संग ॥ लपटि रहिओ रसि लोभी पतंग ॥ रामनाम जपि हिरदे माहि ॥ नानक पति सेती घरि जाहि ॥४॥ जिसु वखर कउ लैनि तू आइआ ॥ राम नामु संतन घरि पाइआ ॥ तजि अभिमानु लेहु मन मोलि ॥ राम नामु हिरदे

महि तोलि ॥ लादि खेप संतह संगि चालु ॥ अवर तिआगि बिखिआ जंजाल ॥ धंनि धंनि कहै सभु कोइ ॥ मुख ऊजल हरि दरगह सोइ ॥ इहु वापारु विरला वापारै॥नानक ताकै सद बलिहारै ॥ ५ ॥ चरन साध के धोइ धोइ पीउ ॥ अरपि साध कउ अपना जीउ ॥ साध की धूरि करहु इस नानु॥साधऊपरि जाईऐ कुरबानु॥ साध सेवा वडभागी पाईऐ ॥ साध संगि हरि कीरतनु गाईऐ ॥ अनिक बिघन ते साधू राखै ॥

हरि गुनगाइ ग्रंमृत रसु चाखै ॥ ग्रोट गही संतह दरि ग्राइग्रा ॥ सरब सूख नानक तिह पाइग्रा ॥ ६॥ मिरतक कउ जीवालन हार ॥ भूखे कउ देवत ग्रधार ॥ सरब निधान जा की द्रसटी माहि ॥ पुरबलिखे का लहणा पाहि ॥ सभु किछु तिस का ग्रोहु करनै जोगु॥ तिसु बिनु दूसर होग्रा न होगु ॥ जपि जन सदा सदा दिनु रैणी ॥ सभ ते ऊच निरमल इह करणी ॥ करि किरपा जिसकउ नामु दीग्रा॥ नानक सोजनु निरमलु थीग्रा॥७॥

जा कै मनि गुर की परतीति ॥
तिसु जन आवै हरिप्रभु चीति ॥
भगतु भगतु सुनीऐ तिहु लोइ ॥
जा कै हिरदै एको होइ ॥ सचु
करणी सचु ता की रहत ॥ सचु
हिरदै सति मुखि कहत ॥ साची
द्रसटि साचा आकारु ॥ सचु वरतै
साचा पासारु ॥ पारब्रहमु जिनि
सचु करि जाता ॥ नानक सो जनु
सचि समाता ॥ ८ ॥ १५ ॥

सलोकु ॥

रूपु न रेख न रंग किछु
त्रिहु गुण ते प्रभ भिंन ॥

तिसहि बुझाए नानका
जिसु होवै सु प्रसंन ॥ १ ॥

असटपदी ॥

अबिनासी प्रभु मन महि राखु ॥
मानुख की तू प्रीति तिआगु ॥
तिस ते परै नाही किछु कोइ ॥
सरब निरंतरि एको सोइ ॥ आपे
बीना आपे दाना ॥ गहिर गंभीरु
गहीरुसुजाना ॥ पारब्रहम परमेसुर
गोबिंद ॥ क्रिपा निधान दइआल
बखसंद ॥ साध तेरे की चरनी
पाउ॥ नानक कै मनि इहु अनराउ
॥१॥ मनसा पूरन सरना जोग ॥

जो करि पाइआ सोई होगु ॥ हरन भरन जा का नेत्र फोरु ॥ तिस का मंत्रु न जानै होरु ॥ अनद रूप मंगल सद जा कै ॥ सरब थोक सुनीअहि घरि ताकै ॥ राज महि राजु जोग महि जोगी ॥ तप महि तपीसरु गृहसत महि भोगी ॥ धिआइ धिआइ भगतह सुखु पाइआ ॥ नानक तिसु पुरख का किनै अंतु न पाइआ ॥ २ ॥ जा की लीला की मिति नाहि ॥ सगल देव हारे अवगाहि ॥ पिता का जनमु कि जानै पूतु ॥ सगल

परोई अपुनै सूति ॥ सुमति गिआनु धिआनु जिन देइ ॥ जन दास नामु धिआवहि सेइ ॥ तिहु गुण महि जा कउ भरमाए ॥ जनमि मरै फिरि आवै जाए ॥ ऊच नीच तिस के असथान ॥ जैसा जनावै तैसा नानक जान ॥३॥ नाना रूप नाना जा के रंग ॥ नाना भेख करहि इक रंग ॥ नाना बिधि कीनो बिसथारु ॥ प्रभु अबिनासी एकंकारु ॥ नाना चलित करे खिन माहि ॥ पूरि रहिओ पूरनु सभ ठाइ ॥ नाना

विधि करि बनत बनाई ॥ अपनी कीमति आपे पाई ॥ सभ घट तिस के सभ तिस के ठाउ ॥ जपि जपि जीवै नानक हरि नाउ ॥४॥ नाम के धारे सगले जंत ॥ नाम के धारे खंड ब्रहमंड ॥ नाम के धारे सिमृति बेद पुरान ॥ नाम के धारे सुनन गिआन धिआन ॥ नाम के धारे आगास पाताल ॥ नाम के धारे सगल आकार ॥ नाम के धारे पुरीआ सभ भवन ॥ नाम कै संगि उधरे सुनि स्रवन ॥ करि किरपा जिसु आपनै नामि

लाए ॥ नानक चउथे पद महि सो जनु गति पाए ॥ ५ ॥ रूपु सति जा का सति असथानु ॥ पुरखु सति केवल परधानु ॥ करतूति सतिसति जाकी बाणी॥ सति पुरख सभ माहि समाणी ॥ सति करमु जा की रचना सति ॥ मूलु सति सति उतपति ॥ सति करणी निरमल निरमली॥जिसहि बुझाए तिसहि सभ भली ॥ सति नामु प्रभका सुखदाई ॥ बिसवासु सति नानक गुर ते पाई ॥ ६ ॥ सति बचन साधू उपदेस ॥ सति

ते जन जा कै रिदै प्रवेस ॥ सति निरति बूझै जे कोइ॥ नामु जपत ता की गति होइ ॥ आपि सति कीआ सभु सति ॥ आपे जानै अपनी मिति गति ॥ जिस की स्रसटि सु करनै हारु ॥ अवर न बूझि करत बीचारु ॥ करते की मिति न जानै कीआ ॥ नानक जो तिसु भावै सो वरतीआ ॥७॥ बिसमन बिसम भए बिसमाद ॥ जिनि बूझिआ तिसु आइआ स्वाद ॥ प्रभ कै रंगि राचि जन रहे ॥ गुरकै बचनि पदारथ लहे ॥

ओइ दाते दुख काटनहार॥ जा कै संगि तरै संसार ॥ जन का सेवकु सो वडभागी ॥ जन कै संगि एक लिवलागी॥ गुन गोबिद कीरतनु जनु गावै ॥ गुर प्रसादि नानक फलु पावै ॥ ८ ॥ १६ ॥

सलोकु ॥

आदि सचु जुगादि सचु ॥ है भि सचु नानक होसी भि सचु ॥ १ ॥

असटपदी ॥

चरन सति सति परसनहार ॥ पूजा सति सति सेवदार ॥ दरसनु सति सति पेखनहार ॥

नामु सति सति धिआवनहार ॥
आपि सति सति सभ धारी ॥
आपे गुण आपे गुणकारी ॥
सबदु सति सति प्रभु बकता ॥
सुरति सति सति जसु सुनता ॥
बुझनहार कउ सति सभ होइ ॥
नानक सति सति प्रभु सोइ ॥१॥
सति सरूपु रिदै जिनि मानिआ॥
करन करावन तिनि मूलु पछा-
निआ ॥ जाकै रिदै बिस्वासु प्रभु
आइआ॥ ततु गिआनु तिसु मनि
प्रगटाइआ ॥ भै ते निरभउ होइ
बसाना ॥ जिस ते उपजिआ तिसु

जिस का सासु न काढत आपि ॥
ता कउ राखत दे करि हाथ ॥
मानस जतन करत बहु भाति ॥
तिस के करतब बिरथे जाति ॥
मारै न राखै अवरु न कोइ ॥
सरब जीआ का राखा सोइ ॥
काहे सोच करहि रे प्राणी ॥ जपि
नानक प्रभ अलख विडाणी ॥५॥
बारंबार बार प्रभु जपीऐ ॥ पी
अंमृतु इहु मनु तनु ध्रपीऐ ॥
नामरतनु जिनि गुरमुखि पाइआ॥
तिसुकिछु अवरुनाही द्रिसटाइआ॥
नामु धनु नामो रूपु रंगु ॥

नामो सुखु हरिनाम का संगु ॥
नाम रसि जो जन तृपताने ॥
मन तन नामहि नामि समाने ॥
ऊठत बैठत सोवत नाम ॥ कहु
नानक जन कै सद काम ॥ ६ ॥
बोलहु जसु जिहबा दिनु राति ॥
प्रभि अपनै जन कीनी दाति ॥
करहि भगति आतम कै चाइ ॥
प्रभ अपने सिउ रहहि समाइ ॥
जो होआ होवत सो जानै ॥ प्रभ
अपने का हुकमु पछानै॥ तिस की
महिमा कउन बखानउ ॥ तिस का
गुनु कहि एक न जानउ ॥ आठ

पहर प्रभ बसहि हजूरे॥ कहु नानक सेई जन पूरे ॥७॥ मन मेरे तिनकी ओट लेहि ॥ मनु तनु अपना तिन जन देहि॥ जिनि जनि अपना प्रभू पछाता ॥ सो जनु सरब थोक का दाता ॥ तिसकी सरनि सरब सुख पावहि ॥ तिस कै दरसि सभि पाप मिटावहि॥ अवर सिआनप सगली छाडु॥तिसु जनकी तूं सेवा लागु॥ आवनु जानु न होवी तेरा॥नानक तिसुजनकेपूजहु सदपैरा॥८॥१७॥

सलोकु ॥

सति पुरखु जिनि जानिआ

सतिगुरु तिस का नाउ ॥
तिस कै संगि सिखु उधरै
नानक हरि गुन गाउ ॥ १ ॥

असटपदी ॥

सतिगुरु सिख की करै प्रतिपाल॥
सेवक कउ गुरु सदा दइआल ॥
सिख की गुरु दुरमति मलु हिरै॥
गुरबचनी हरिनामु उचरै ॥ सति-
गुरु सिखके बंधन काटै ॥ गुर का
सिखु बिकार ते हाटै ॥ सतिगुरु
सिख कउ नाम धनु देइ ॥ गुर
का सिखु वडभागी हे ॥ सतिगुरु
सिख का हलतु पलतु सवारै ॥

नानक सतिगुरु सिख कउ जीअ नालि समारै ॥ १ ॥ गुर कै गृहि सेवकु जो रहै ॥ गुर की आगिआ मन महि सहै ॥ आपस कउ करि कछु न जनावै ॥ हरि हरि नामु रिदै सद धिआवै ॥ मनु बेचै सतिगुर कै पासि ॥ तिसु सेवक के कारज रासि ॥ सेवा करत होइ निहकामी ॥ तिस कउ होत परापति सुआमी ॥ अपनी कृपा जिसु आपि करेइ ॥ नानक सो सेवकु गुर की मति लेइ ॥ २ ॥ बीस बिसवे गुर का मनु मानै॥सो सेवकु

परमेसरु की गति जानै ॥ सो
सतिगुरु जिसु रिदै हरि नाउ ॥
अनिक बार गुर कउ बलि जाउ॥
सरब निधान जीअ का दाता ॥
आठ पहर पारब्रहम रंगि राता ॥
ब्रहम महि जनु जन महि पार-
ब्रहमु ॥ एकहि आपि नही कछु
भरमु ॥ सहस सिआनप लइआ
न जाईऐ ॥ नानक ऐसा गुरु
वडभागी पाईऐ ॥ ३ ॥ सफल
दरसनु पेखत पुनीत ॥ परसत
चरन गति निरमल रीति ॥ भेटत
संगि राम गुन रवे ॥ पारब्रहम की

दरगह गवे ॥ सुनि करि बचन करन आघाने ॥ मनि संतोखु आतम पतीआने॥पूरा गुरु अख्यओ जा का मंत्र ॥ अंमृत द्रसटि पेखे होइ संत ॥ गुण बिअंत कीमति नही पाइ॥नानक जिसु भावै तिसु लए मिलाइ ॥ ४ ॥ जिहवा एक उसतति अनेक ॥ सतिपुरख पूरन बिबेक ॥ काहू बोल न पहुचत प्रानी ॥ अगम अगोचर प्रभ निर बानी॥निराहार निरवैर सुखदाई॥ ता की कीमति किनै न पाई ॥ अनिक भगत बंधन नित करहि ॥

चरन कमल हिरदै सिमरहि ॥ सद बलिहारी सतिगुर अपने ॥ नानक जिसु प्रसादि ऐसा प्रभु जपने ॥ ५ ॥ इहु हरि रसु पावै जनु कोइ ॥ अंमृतु पीवै अमरु सो होइ॥ उसु पुरख का नाही कदे बिनास ॥ जा कै मनि प्रगटे गुन-तास ॥ आठ पहर हरि का नामु लेइ ॥ सचु उपदेसु सेवक कउ देइ ॥ मोह माइआ कै संगि न लेपु ॥ मन महि राखै हरि हरि एकु ॥ अंधकार दीपक परगासे ॥ नानक भरम मोह दुख तह ते

नासे ॥ ६ ॥ तपति माहि ठाढि वरताई ॥ अनदु भइआ दुख नाठे भाई ॥ जनम मरन के मिटे अंदेसे ॥ साधू के पूरन उपदेसे ॥ भउ चूका निरभउ होइ बसे ॥ सगल बिआधि मनते खै नसे ॥ जिसका सा तिनि किरपा धारी ॥ साध संगि जपि नामु मुरारी ॥ थिति पाई चूके भ्रम गवन ॥ सुनि नानक हरि हरि जसु स्रवन ॥७॥ निरगुनु आपि सरगुनु भी ओही॥ कलाधारि जिनि सगली मोही ॥ अपने चरित प्रभि आपि बनाए ॥

अपुनी कीमति आपे पाए ॥ हरि बिनु दूजा नाही कोइ ॥ सरब निरंतरि एको सोइ॥ ओति पोति रविआ रूप रंग ॥ भए प्रगास साध कै संग ॥ रचि रचना अपनी कलधारी ॥ अनिक बार नानक बलिहारी ॥ ८ ॥ १८ ॥

सलोकु ॥

साथि न चालै बिनु भजन
बिखिआ सगली छारु ॥
हरि हरि नामु कमावना
नानक इहु धनु सारु ॥ १ ॥

असटपदी ॥

संत जना मिलि करहु बीचारु ॥ एकु सिमरि नाम आधारु ॥ अवरि उपाव सभि मीत बिसारहु ॥ चरन कमल रिद महि उरिधारहु ॥ करन कारन सो प्रभु समरथु ॥ दृड़ु करि गहहु नामु हरि वथु ॥ इहु धनु संचहु होवहु भगवंत ॥ संत जना का निरमल मंत ॥ एक आस राखहु मन माहि ॥ सरब रोग नानक मिटि जाहि ॥ १ ॥ जिसु धन कउ चारि कुंट उठि धावहि ॥ सो धनु हरि सेवा ते पावहि ॥

जिसु सुखु कउ नित बाछहि मीत॥
सो सुखु साधू संगि प्रीति ॥
जिसु सोभा कउ करहि भलीकरनी
॥ सा सोभा भजु हरि की सरनी॥
अनिक उपावी रोगु न जाइ ॥
रोगु मिटै हरि अवखधु लाइ ॥
सरब निधानु महि हरि नामु
निधानु ॥ जपि नानक दरगहि
परवानु ॥ २ ॥ मनु परबोधहु हरि
कै नाइ ॥ दहदिसि धावत आवै
ठाइ ॥ ता कउ बिघनु न लागै
कोइ॥जा कै रिदै बसै हरि सोइ ॥
कलि ताती ठांढा हरि नाउ ॥

सिमरि सिमरि सदा सुख पाउ ॥
भउ बिनसै पूरन होइ आस ॥
भगति भाइ आतम परगास ॥
तितु घरि जाइ बसै अबिनासी ॥
कहु नानक काटी जम फासी ॥३॥
ततु बीचारु कहै जनु साचा ॥
जनमि मरै सो काचो काचा ॥
आवागवनु मिटै प्रभ सेव ॥
आपु तिआगि सरनि गुरदेव ॥
इउ रतन जनम का होइ उधारु ॥
हरि हरि सिमरि प्रान आधारु ॥
अनिक उपाव न छूटन हारे ॥
सिम्रिति सासत बेद बीचारे ॥

हरि की भगति करहु मनु लाइ ॥
मनि बंछत नानक फल पाइ ॥४॥
संगि न चालसि तेरै धना ॥
तूं किआ लपटावहि मूरख मना ॥
सुत मीत कुटंब अरु बनिता ॥
इन ते कहहु तुम कवन सनाथा ॥
राज रंग माइआ बिसथार ॥
इन ते कहहु कवन छुटकार ॥
असु हसती रथ असवारी ॥
झूठा डंफु झूठु पासारी ॥ जिनि
दीए तिसु बुझै न बिगाना ॥ नामु
बिसारि नानक पछुताना ॥ ५ ॥
गुर की मति तूं लेहि इआने ॥

भगति बिना बहु डूबे सिआने ॥
हरि की भगति करहु मनमीत ॥
निरमल होइ तुमारो चीत ॥
चरन कमल राखहु मन माहि ॥
जनम जनम के किलबिख जाहि ॥
आपि जपहु अवरा नामु जपावहु ॥
सुनत कहत रहत गति पावहु ॥
सार भूत सति हरि को नाउ ॥
सहजि सुभाइ नानक गुनगाउ ॥६॥
गुन गावत तेरी उतरसि मैलु ॥
बिनसि जाइ हउमै बिखु फैलु ॥
होहि अचिंतु बसै सुख नालि ॥
सासि ग्रासि हरि नामु समालि ॥

छाडि सिआनप सगली मना ॥
साध संगि पावहि सचु धना ॥
हरि पूंजी संचि करहु बिउहारु ॥
ईहा सुखु दरगह जैकारु ॥ सरब
निरंतरि एको देखु ॥ कहु नानक
जा कै मसतकि लेखु ॥ ७ ॥
एको जपि एको सालाहि ॥
एकु सिमरि एको मन आहि ॥
एकस के गुन गाउ अनंत ॥
मनि तनि जापि एक भगवंत ॥
एको एकु एकु हरि आपि ॥
पूरन पूरि रहिओ प्रभु बिआपि॥
अनिक बिसथार एक ते भए ॥

एकु अराधि पराछत गए ॥
मन तन अंतरि एकु प्रभु राता ॥
गुर प्रसादि नानक इकु जाता ॥
८ ॥ १६ ॥

सलोकु ॥

फिरत फिरत प्रभ आइआ
परिआ तउ सरनाइ ॥
नानक की प्रभ बेनती
अपनी भगती लाइ ॥ १ ॥

असटपदी ॥

जाचक जनु जाचै प्रभ दानु ॥
करि किरपा देवहु हरिनामु ॥
साध जना की मागउ धूरि ॥

पारब्रहम मेरी सरधा पूरि ॥
सदा सदा प्रभ के गुन गावउ ॥
सासि सासि प्रभतुमहि धिआवउ ॥
चरन कमल सिउ लागै प्रीति ॥
भगति करउ प्रभ की नित नीति॥
एक ओट एको आधारु ॥ नानकु
मागै नामु प्रभ सारु ॥ १ ॥ प्रभ
की द्रसटि महा सुखु होइ ॥ हरि
रसु पावै बिरला कोइ ॥ जिन
चाखिआ से जन तृपताने ॥ पूरन
पुरख नही डोलाने ॥ सुभर भरे
प्रेम रस रंगि ॥ उपजै चाउ साध
कै संगि ॥ परे सरनि आन सभ

तिआगि ॥ अंतरि प्रगास अनदिनु
लिव लागि ॥ वडभागी जपिआ
प्रभु सोइ ॥ नानक नामि रते सुखु
होइ ॥ २ ॥ सेवक की मनसा
पूरी भई ॥ सतिगुर ते निरमल
मति लई ॥ जन कउ प्रभु होइओ
दइआलु ॥ सेवकु कीनो सदा
निहालु ॥ बंधन काटि मुकति
जनु भइआ ॥ जनम मरन दूखु
भ्रमु गइआ ॥ इछ पुनी सरधा
सभ पूरी ॥ रवि रहिआ सद संगि
हजूरी ॥ जिस का सा तिनि लीआ
मिलाइ ॥ नानक भगती नामि

समाइ ॥३॥ सो किउ बिसरै जि
घाल न भानै॥सो किउ बिसरै जि
कीआ जानै॥सोकिउ बिसरै जिनि
सभु किछु दीआ॥सो किउ बिसरै
जि जीवन जीआ॥सो किउ बिसरै
जि अगनि महि राखै॥ गुरप्रसादि
को बिरला लाखै॥सो किउ बिसरै
जि बिखु ते काढै ॥ जनम जनम
का टूटा गाढै ॥ गुरि पूरै ततु
इहै बुझाइआ ॥ प्रभु अपना
नानक जन धिआइआ ॥ ४ ॥
साजन संत करहु इहु कामु ॥
आन तिआगि जपहु हरि नामु ॥

सिमरिसिमरि सिमरि सुख पावहु॥
आपि जपहु अवरह नामु जपावहु॥
भगति भाइ तरीऐ संसारु ॥
बिनु भगती तनु होसी छारु ॥
सरब कलिआण सूखनिधि नामु ॥
बूडत जात पाए बिस्रामु ॥ सगल
दूख का होवत नासु ॥ नानक
नामु जपहु गुन तासु ॥ ५ ॥
उपजी प्रीति प्रेम रसु चाउ ॥
मन तन अंतरि इही सुआउ ॥
नेत्रहु पेखि परसु सुखु होइ ॥
मनु बिगसै साध चरन धोइ ॥
भगत जना कै मनि तनि रंगु ॥

बिरला कोऊ पाव संगु ॥ एक वसतु दीजै करि मइत्रा ॥ गुर प्रसादि नामु जपि लइत्रा ॥ ताकी उपमा कही न जाइ ॥ नानक रहित्रा सरब समाइ ॥ ६ ॥ प्रभ बखसंद दीन दइत्राल ॥ भगति वछल सदा किरपाल॥ अनाथ नाथ गोबिंद गुपाल ॥ सरब घटा करत प्रतिपाल॥आदि पुरख कारण कर-तार॥भगत जना के प्रान अधार ॥ जो जो जपै सु होइ पुनीत॥भगति भाइ लावै मन हीत ॥ हम निर-गुनीआर नीच अजान ॥ नानक

तुमरी सरनि पुरख भगवान ॥७॥
सरब बैकुंठ मुकति मोख पाए ॥
एक निमख हरि के गुन गाए ॥
अनिक राजभोग बडिआई॥हरिके
नाम की कथा मनि भाई ॥ बहु
भोजनकापर संगीत॥रसना जपती
हरि हरि नीत ॥ भली सु करनी
सोभा धनवंत॥हिरदै बसे पूरनगुर
मंत॥साध संगि प्रभु देहु निवास ॥
सरबसूखनानक परगास॥८॥२०॥

सलोकु ॥

सरगुन निरगुन निरंकार सुंन
समाधी आपि ॥ आपन कीआ

नानका आपे ही फिरि जापि ॥१॥

असटपदी ॥

जब अकारु इहु कछु न द्रिसटेता ॥
पाप पुंन तब कह ते होता ॥ जब
धारी आपन सुंन समाधि ॥ तब
बैर बिरोध किसु संगि कमाति ॥
जबइसका बरनु चिहनु न जापत॥
तबहरख सोग कहु किसहि बिआ-
पत ॥ जब आपन आप आपि पार-
ब्रहम ॥ तब मोह कहा किसु होवत
भरम॥आपन खेलु आपिवरतीजा॥
नानक करनैहारु न दूजा ॥ १ ॥
जब होवत प्रभ केवल धनी ॥ तब

बंध मुकति कहु किस कउ गनी ॥
जब एकहि हरि अगम अपार ॥
तबनरक सुरगकहु कउन अउतार॥
जब निरगुन प्रभ सहज सुभाए ॥
तब सिव सकति कहहु कितु ठाइ॥
जबआपहि आपिअपनीजोतिधरै॥
तब कवन निडरु कवन कत डरै ॥
आपन चलित आपि करनैहार ॥
नानक ठाकुर अगम अपार ॥२॥
अबिनासी सुख आपन आसन ॥
तहजनम मरन कहुकहा बिनासन॥
जब पूरन करता प्रभु सोइ ॥ तब
जम की त्रास कहहु किसु होइ ॥

जब अबिगत अगोचर प्रभ एका ॥
तबचित्र गुपत किसु पूछत लेखा॥
जबनाथनिरंजन अगोचर अगाधे॥
तब कउन छुटे कउन बंधन बाधे ॥
आपन आप आप ही अचरजा ॥
नानकआपनरूप आपही उपरजा॥
३॥ जह निरमल पुरखु पुरख पति
होता॥ तह बिनु मैलु कहहु किआ
धोता ॥ जह निरंजन निरंकार
निरबान॥तह कउन कउ मानकउन
अभिमान ॥ जह सरूप केवल जग
दीस ॥ तह छल छिद्र लगत कहु
कीस ॥ जह जोति सरूपी जोति

संगि समावै ॥ तह किसहि भूख कवनु तृपतावै ॥ करन करावन करनैहारु ॥ नानक करते का नाहि सुमारु ॥ ४ ॥ जब अपनी सोभा आपन संगि बनाई ॥ तब कवन माइ बाप मित्र सुत भाई ॥ जह सरब कला आपहि परबीन ॥ तह बेद कतेब कहा कोऊ चीन ॥ जब आपन आपु आपि उरिधारै ॥ तउसगन अपसगन कहा बीचारै ॥ जह आपन ऊच आपन आपि नेरा ॥ तह कउन ठाकुरु कउनु कहीऐ चेरा॥बिसमनबिसम रहेबिसमाद॥

नानक अपनी गति जानहु आपि ॥ ५ ॥ जह अछल अछेद अभेद समाइआ॥ ऊहा किसहि बिआपत माइआ ॥ आपस कउ आपहि आदेसु॥तिहु गुण का नाहीपरवेसु॥ जह एकहि एक एक भगवंता ॥ तह कउनु अचिंतु किसु लागै चिंता ॥ जह आपन आपु आपि पतीआरा ॥ तह कउनु कथै कउनु सुननैहारा ॥ बहु बेअंत ऊच ते ऊचा ॥ नानक आपस कउ आपहि पहूचा ॥ ६ ॥ जह आपि रचिओ परपंचु अकारु ॥ तिहु गुण महि

कीनो बिसथारु ॥ पापु पुंनु तह भई कहावत ॥ कोऊ नरक कोऊ सुरग बंछावत॥ आल जाल माइआ जंजाल ॥ हउमै मोह भरम भै भार ॥ दूख सूख मान अपमान ॥ अनिक प्रकार कीओ बख्यान ॥ आपन खेलु आपि करि देखै ॥ खेलु संकोचै तउ नानक एकै॥७॥ जह अबिगतु भगतु तह आपि ॥ जह पसरै पासारु संत परतापि ॥ दुहू पाख का आपहि धनी ॥ उन की सोभा उनहू बनी ॥ आपहि कउतक करै अनद चोज॥

आपहि रस भोगन निरजोग ॥
जिसु भावै तिसु आपन नाइलावै॥
जिसु भावै तिसु खेल खिलावै ॥
बेसुमार अथाह अगनत अतोल ॥
जिउ बुलावहु तिउ नानक दास बोलै ॥ ८ ॥ २१ ॥

सलोकु ॥ जीअ जंत के ठाकुरा आपे वरतणहार ॥
नानक एको पसरिआ दूजा कह द्रिसटार ॥ १ ॥

असटपदी ॥

आपि कथै आपि सुननैहारु ॥
आपहि एकु आपि बिसथारु ॥

जा तिसु भावै ता सृसटि उपाए ॥ आपनै भाणै लए समाए ॥ तुम ते भिंन नही किछु होइ॥आपन सूति सभु जगतु परोइ ॥ जा कउ प्रभ जीउ आपि बुझाए ॥ सचु नामु सोई जनु पाए ॥ सो समदरसी तत का बेता ॥ नानक सगल सृसटि का जेता ॥ १ ॥ जीअ जंत्र सभ ताकै हाथ ॥ दीन दइआल अनाथ को नाथु ॥ जिसु राखै तिसु कोइ न मारै ॥ सो मूआ जिसु मनहु बिसारै ॥ तिसु तजि अवर कहा को जाइ ॥ सभ

सिरि एकु निरंजनराइ ॥ जीअ
की जुगति जा कै सभ हाथि ॥
अंतरि बाहरि जानहु साथि ॥
गुन निधान बेअंत अपार ॥ नानक
दास सदा बलिहार ॥ २ ॥ पूरन
पूरि रहे दइआल ॥ सभ ऊपरि
होवत किरपाल ॥ अपने करतब
जाने आपि ॥ अंतरजामी रहिओ
बिआपि ॥ प्रतिपालै जीअन बहु
भाति॥ जो जो रचिओ सु तिसहि
धिआति ॥ जिसु भावै तिसु लए
मिलाई ॥ भगति करहि हरि के
गुण गाइ ॥ मन अंतरि बिसवासु

करि मानिआ ॥ करनहारु नानक इकु जानिआ ॥ ३ ॥ जनु लागा हरि एकै नाइ ॥ तिसकी आस न बिरथी जाइ ॥ सेवक कउ सेवा बनि आई ॥ हुकमु बूझि परमपदु पाई ॥ इसते ऊपरि नही बीचारु ॥ जा कै मनि बसिआ निरंकारु ॥ बंधन तोरि भए निर-वैर॥ अनदिनु पूजहि गुर के पैर॥ इह लोक सुखीए परलोक सुहेले॥ नानक हरि प्रभि आपहि मेले॥४॥ साध संगि मिलि करहु अनंद ॥ गुन गावहु प्रभ परमानंद ॥ राम

नाम ततु करहु बीचारु ॥ दुलभ
देह का करहु उधारु ॥ अंमृत
बचन हरि के गुन गाउ ॥ प्रान
तरन का इहै सुआउ ॥ आठ पहर
प्रभ पेखहु नेरा ॥ मिटै अगिआनु
बिनसै अंधेरा ॥ सुनि उपदेसु
हिरदै बसावहु ॥ मन इछे नानक
फल पावहु ॥ ५ ॥ हलतु पलतु
दुइ लेहु सवारि ॥ राम नामु
अंतरि उरिधारि ॥ पूरे गुरकी पूरी
दीखिआ ॥ जिसु मनि बसै तिसु
साचु परीखिआ ॥ मनि तनि नामु
जपहु लिव लाइ ॥ दूखु दरदु

मन ते भउ जाइ ॥ सचु वापारु करहु वापारी ॥ दरगह निबहै खेप तुमारी ॥ एका टेक रखहु मन माहि ॥ नानक बहुरि न आवहि जाहि॥६॥ तिस ते दूरि कहा को जाइ ॥ उबरै राखनहारु धिआइ ॥ निरभउ जपै सगल भउ मिटै ॥ प्रभ किरपा ते प्राणी छुटै ॥ जिसु प्रभु राखै तिसु नाही दूख ॥ नामु जपत मनि होवत सूख ॥ चिंता जाइ मिटै अहंकारु ॥ तिसु जन कउ कोइ न पहुचनहारु ॥ सिर ऊपरि ठाढा गुरु सूरा ॥ नानक

ताके कारज पूरा ॥ ७ ॥ मति पूरी अंमृतु जा की द्रसटि ॥ दरसनु पेखत उधरत स्रसटि ॥ चरन कमल जा के अनूप ॥ सफल दरसनु सुंदर हरि रूप ॥ धंनु सेवा सेवकु परवानु ॥ अंतर जामी पुरखु प्रधानु ॥ जिसु मनि बसै सु होत निहालु॥ताकै निकटि न आवत कालु ॥ अमर भए अमरापदु पाइआ ॥ साध संगि नानक हरि धिआइआ ॥८॥२२॥

सलोकु ॥

गिआन अंजनु गुरि दीआ

अगिआन अंधेर बिनासु ॥
हरि किरपा ते संत भेटिआ
नानक मनि परगासु ॥ १ ॥

असटपदी ॥

संत संगि अंतरि प्रभु डीठा ॥
नामु प्रभु का लागा मीठा ॥
सगल समिग्री एकसु घट माहि ॥
अनिक रंग नाना द्रिसटाहि ॥
नउ निधि अंमृतु प्रभ का नामु ॥
देही महि इस का बिस्रामु ॥
सुंन समाधि अनहत तह नाद ॥
कहनु न जाई अचरज बिसमाद ॥

तिनि देखिआ जिसु आपि दिखाए ॥ नानक तिसु जन सोझी पाए ॥ १ ॥ सो अंतरि सो बाहरि अनंत॥घटि घटि बिआपि रहिआ भगवंत ॥ धरनि माहि आकास पइआल ॥ सरब लोक पूरन प्रतिपाल ॥ बनि तिनि परबति है पारब्रहमु ॥ जैसी आगिआ तैसा करमु ॥ पउण पाणी बैसंतर माहि ॥ चारि कुंट दहदिसे समाहि ॥ तिस ते भिन नही को ठाउ ॥ गुर प्रसादि नानकसुखु पाउ ॥ २ ॥ बेद पुरान सिम्रित

महि देखु ॥ ससीअर सूर नख्यत्र महि एकु ॥ बाणी प्रभ की सभु को बोलै॥आपिअडोलु न कबहूडोलै॥ सरब कला करि खेलै खेल॥ मोलि न पाईऐ गुणह अमोल ॥ सरब जोति महि जा की जोति ॥ धारि रहिओ सुआमी ओति पोति॥ गुर परसादि भरम का नासु ॥ नानक तिन महि एहु बिसासु ॥ ३ ॥
संत जना का पेखनु सभु ब्रहम ॥
संत जना कै हिरदै सभि धरम ॥
संत जना सुनहि सुभ बचन ॥
सरब बिआपी राम संगि रचन ॥

जिनि जाता तिस की इह रहत ॥
सति बचन साधू सभि कहत ॥
जो जो होइ सोई सुखु मानै ॥
करन करावनहारु प्रभु जानै ॥
अंतरि बसे बाहरि भी ओही ॥
नानक दरसनु देखि सभ मोही॥४॥
आपि सति कीआ सभु सति ॥
तिसु प्रभ ते सगली उतपति ॥
तिसु भावै ता करे बिसथारु ॥
तिसु भावै ता एकंकारु ॥ अनिक
कला लखी नह जाइ ॥ जिसु भावै
तिसु लए मिलाइ ॥ कवन निकटि
कवन कहीए दूरि ॥ आपे आपि

आप भरपूरि ॥ अंतरि गति जिसु आपि जनाए ॥ नानक तिसु जन आपि बुझाए ॥ ५ ॥ सरब भूत आपि वरतारा ॥ सरब नैन आपि पेखनहारा ॥ सगल समग्री जाका तना॥आपन जसु आपही सुना ॥ आवन जानु इकु खेलु बनाइआ ॥ आगिआकारी कीनी माइआ ॥ सभ कै मधि अलिपतो रहै ॥ जो किछु कहणा सु आपे कहै ॥ आगिआ आवै आगिआ जाइ ॥ नानक जा भावै ता लए समाइ ॥ ६ ॥ इस ते होइ सु नाही बुरा ॥

ओरै कहहु किनै कछु करा ॥ आपि भला करतूति अतिनीकी॥ आपे जानै अपने जी की ॥ आपि साचु धारी सभ साचु॥ओति पोति आपन संगि राचु ॥ ता की गति मिति कही न जाइ ॥ दूसर होइ त सोझीपाइ॥तिसका कीआ सभु परवानु ॥ गुर प्रसादि नानक इहु जानु॥७॥जो जानै तिसु सदा सुखु होइ ॥ आपि मिलाइ लए प्रभु सोइ ॥ ओहु धनवंतु कुलवंतु पतिवंतु ॥ जीवन मुकति जिसु रिदै भगवंतु ॥ धंनु धंनु धंनु जनु

आइआ ॥ जिसु प्रसादि सभु जगतु तराइआ ॥ जन आवन का इहै सुआउ ॥ जन कै संगि चिति आवै नाउ ॥ आपि मुकतु मुकतु करै संसारु ॥ नानक तिसु जनकउ सदा नमसकारु ॥८॥२३॥

सलोकु ॥

पूरा प्रभु आराधिआ
पूरा जा का नाउ ॥
नानक पूरा पाइआ
पूरे के गुन गाउ ॥ १ ॥

असटपदी ॥

पूरे गुर का सुनि उपदेसु ॥

पारब्रहमु निकटि करि पेखु ॥ सासि सासि सिमरहु गोबिंद ॥ मन अंतर की उतरै चिंद ॥ आस अनित तिआगहु तरंग ॥ संत जना की धूरि मन मंग ॥ आपु छोडि बेनती करहु ॥ साध संगि अगनि सागरु तरहु ॥ हरि धन के भरि लेहु भंडार ॥ नानक गुर पूरे नमसकार ॥ १ ॥ खेम कुसल सहज आनंद ॥ साध संगि भजु परमानंद ॥ नरक निवारि उधारहु जीउ ॥ गुन गोबिंद अंमृत रसु पीउ ॥ चिति चितवहु नाराइण

एक॥एक रूप जा के रंग अनेक ॥ गोपाल दामोदर दीन दइआल ॥ दुख भंजन पूरन किरपाल॥सिमरि सिमरि नामु बारंबार ॥ नानक जीअ का इहै अधार ॥३॥ उतम सलोक साध के बचन ॥ अमुलीक लाल एहि रतन ॥ सुनत कमावत होत उधार ॥ आपि तरै लोकह निसतार ॥ सफल जीवनु सफलु ता का संगु ॥ जा कै मनि लागा हरि रंगु ॥ जै जै सबदु अनाहदु वाजै ॥ सुनि सुनि अनद करे प्रभु गाजै ॥ प्रगटे गुपाल महांत कै

माथे ॥ नानक उधरे तिन कै साथे ॥ ३ ॥ सरमि जोगु सुनि सरनी आए ॥ करि किरपा प्रभ आप मिलाए॥ मिटि गए बैर भए सभ रेन ॥ अंमृत नामु साध संगि लैन ॥ सुप्रसंन भए गुरदेव ॥ पूरन होई सेवक की सेव ॥ आल जंजाल बिकार ते रहते ॥ राम नाम सुनि रसना कहते ॥ करि प्रसादु दइआ प्रभि धारी॥ नानक निबही खेप हमारी ॥ ४ ॥ प्रभ की उसतति करहु संत मीत ॥ सावधान एकागर चीत॥ सुखमनी

सहज गोबिंद गुन नाम ॥ जिसु
मनि बसै सु होत निधान ॥ सरब
इछा ताकी पूरन होइ॥प्रधान पुरखु
प्रगटु सभ लोइ ॥ सभ ते ऊच
पाए असथानु ॥ बहुरि न होवै
आवन जानु ॥ हरि धनु खाटि
चलै जनु सोइ ॥ नानक जिसहि
परापति होइ ॥ ५ ॥ खेम सांति
रिधि नव निधि ॥ बुधि गिआनु
सरब तह सिधि ॥ बिदिआ तपु
जोगु प्रभ धिआनु॥गिआनु स्रेसट
ऊतम इसनानु ॥ चारि पदारथ
कमल प्रगास ॥ सभ कै मधि

सगल ते उदास ॥ सुंदर चतुर
तत का बेता ॥ समदरसी एक
द्रसटेता ॥ इह फल तिसु जन कै
मुखि भने ॥ गुर नानक नाम
बचन मनि सुने ॥८॥ इहु निधानु
जपै मनि कोइ ॥ सभ जुग महि
ता की गति होइ ॥ गुन गोबिंद
नाम धुनि बाणी ॥ सिमृति सासत्र
बेद बखाणी ॥ सगल मतांत
केवल हरि नाम ॥ गोबिंद भगत
कै मनि बिस्राम ॥ कोटि अपराध
साध संगि मिटै ॥ संत कृपा ते
जम ते छुटै ॥ जाकै मसतकि करम

प्रभि पाए ॥ साध सरणि नानक ते आए ॥७॥ जिसु मनि वसै सुनै लाइ प्रीति ॥ तिसु जन आवै हरि प्रभु चीति ॥ जनम मरन ताका दुखु निवारै ॥ दुलभ देह ततकाल उधारै ॥ निरमल सोभा अंमृत ताकी बानी ॥ एकु नामु मन माहि समानी ॥ दूख रोग बिनसे भै भरम ॥ साध नाम निरमल ताके करम ॥ सभ ते ऊच ताकी सोभा बनी ॥ नानक इह गुणि नामु सुखमनी ॥ ८ ॥ २४ ॥

सहंसर नामा

मारू महला ५ ॥

अचुत पारब्रहम प्रमेसुर अंतर-जामी॥मधुसूदनदामोदर सुआमी॥ रिखी केस गोवरधनधारी मुरली मनोहर हरि रंगा ॥ १ ॥ मोहन माधव क्रिस्न मुरारे ॥ जगदीसुर हरि जीउ असुर संघारे ॥ जग जीवन अबिनासी ठाकुर घट घट वासी है संगा ॥२॥ धरणी धरईस नरसिंह नाराइण ॥ दाड़ा अग्रे प्रिथमि धराइण ॥ बावन रूप कीआ तुधु करते सभ ही

सेती है चंगा ॥ ३ ॥ श्री रामचंद
जिसु रूपु न रेखिश्रा ॥ बनवाली
चक्रपाणि दरसि अनूपिश्रा॥ सहस
नेत्र मूरति है सहसा इकु दाता
सभ है मंगा ॥ ४ ॥ भगति वछलु
अनाथह नाथे ॥ गोपीनाथु सगल
है साथे ॥ बासुदेव निरंजन दाते
बरनि न साकउ गुण अंगा ॥५॥
मुकंद मनोहर लखमी नाराइण ॥
द्रोपती लजा निवारि उधारण ॥
कमला कंत करहि कंतूहल अनद
बिनोद निहसंगा ॥ ६ ॥ अमोघ
दरसन आजूनी संभउ ॥ अकाल

मूरति जिसु कदे नाही खउ ॥
अबिनासी अबिगत अगोचर
सभु किछु तुझही है लगा ॥७॥
स्री रंग बैकुंठ के वासी ॥ मछु
कछु कुरमु आगिआ अउतरासी ॥
केसव चलत करहि निराले कीता
लोड़हि सो होइगा ॥ ८ ॥ निरा-
हारी निरवैरु समाइआ ॥ धारि
खेलु चतुर भुजु कहाइआ ॥
सावल सुंदर रूप बणावहि बेणु
सुनत सभ मोहैगा ॥ ९ ॥ बन-
माला बिभूखन कमलनैन ॥
सुंदर कुंडल मुकट बैन ॥

संख चक्र गदा है धारी महासारथी सतसंगा ॥ १० ॥ पीत पीतंबर तृभवण धणी ॥ जगंनाथु गोपालु मुखि भणी ॥ सारिंगधर भगवान बीठुला मै गणत न आवै सरबंगा ॥ ११ ॥ निहकंटकु निहकेवलु कहीए ॥ धनंजै जलि थलि है महीए ॥ मिरत लोक पइआल समीपत असथिरु थानु जिसु है अभगा ॥१२॥ पतित पावन दुख भै भंजनु ॥ अहंकार निवारणु है भव खंडन ॥ भगती तोखित दीन क्रिपाला गुणे न कितही है भिगा

॥१३॥ निरंकारु अछल अडोलो॥ जोति सरूपीसभुजगु मउलो ॥ सो मिलै जिसु आपि मिलाए आपहु कोइ न पावैगा॥१४॥ आपे गोपी आपे काना ॥ आपे गऊ चरावै बाना ॥ आपि उपावहि आपि खपावहि तुधु लेपु नही इकु तिलु रंगा ॥१५॥एक जीह गुण कवन वखानै ॥ सहस फनी सेख अंतु न जानै ॥ नवतन नाम जपै दिनु राती इकु गुण नाही प्रभ कहि संगा ॥ १६ ॥ ओट गही जगत पित सरणाइआ ॥ भै भइआनक

जमदूत दुतर है माइआ ॥ होहु क्रिपाल इछा करि राखहु साध संत कै संगि संगा ॥ १७ ॥ द्रिसटि मान है सगल मिथेना ॥ इकु मागउ दानु गोबिंद संत रेना ॥ मसतकि लाइ परमपदु पावउ जिसु प्रापति सो पावैगा ॥ १८ ॥ जिन कउ क्रिपा करी सुखदाते ॥ तिन साधू चरण लै रिदै पराते ॥ सगल नाम निधानु तिन पाइआ ॥ अनहद सबद मनि वाजंगा ॥ १९ ॥ किरतम नाम कथे तेरे जिहबा ॥ सतिनामु तेरा परा

पूरबला ॥ कहु नानक भगत पए सरणाई देहु दरसु मनि रंगु लगा ॥ २० ॥ तेरी गति मिति तूहै जाणहि ॥ तू आपे कथहि तै आपि वखाणहि ॥ नानक दासु दासन को करीअहु हरि भावै दासा राखु संगा ॥२१॥२॥११॥

बसंत की वार महलु ५ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

हरि का नामु धिआइकै होहु हरिआ भाई ॥ करमि लिखंतै पाईऐ इह रुति सुहाई ॥ वणु तृणु तृभवणु मउलिआ अंमृत फलु पाई ॥ मिलि साधू सुखु ऊपजै लथी सभ छाई ॥ नानकु सिमरै एकु नामु फिरि बहुड़ि न धाई ॥ १ ॥ पंजे बधे महाबली करि सचा ढोआ ॥ आपणे चरण जपाइअनु विचि दयु खड़ोआ ॥ रोग सोग सभि मिटि गए नित

नवा निरोआ ॥ दिनु रैणि नामु धिआइदा फिरि पाइ न मोआ ॥ जिसते उपजिआ नानका सोई फिरि होआ ॥ २ ॥ किथहु उपजै कह रहै कह माहि समावै ॥ जीअ जंत सभि खसम के कउणु कीमति पावै ॥ कहनि धिआइनि सुणनि नित से भगत सुहावै ॥ अगमु अगोचरु साहिबो दूसरु लवै न लावै ॥ सचु पूरै गुरि उपदेसिआ नानकु सुणावै ॥ ३ ॥ १ ॥

❀ शबद वेनती ❀

रागु गउड़ी पूरबी महला ५ ॥

कवन गुन प्रानपति मिलउ मेरी माई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रूप हीन बुधि बल हीनी मोहि परदेसनि दूर ते आई ॥ १ ॥ नाहिन दरबु न जोबन माती मोहि अनाथकी करहु समाई ॥२॥ खोजत खोजत भई बैरागनि प्रभ दरसन कउ हउ फिरत तिसाई ॥ ३ ॥ दीन दइआल क्रिपाल प्रभ नानक साध संगि मेरी जलनि बुझाई ॥ ४ ॥

❀ सलोक महला ६ ❀

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

गुन गोबिंद गाइओ नही जनमु अकारथ कीन ॥ कहु नानक हरि भजु मना जिह बिधि जल कौ मीन ॥ १ ॥ बिखिअन सिउ काहे रचिओ निमख न होहि उदास ॥ कहु नानक भजु हरि मना परै न जम की फास ॥ २ ॥ तरनापो इउ ही गइओ लीओ जरा तनु जीति ॥ कहु नानक भज हरि मना अउध जात है बीति ॥३॥

बिरध भइओ सूझै नही कालु पहूचिओ आन ॥ कहु नानक नर बावरे किउ न भजै भगवान ॥४॥ धनु दारा संपति सगल जिनि अपुनी करि मानि ॥ इन मै कछु संगी नही नानक साची जानि ॥ ५ ॥ पतित उधारन भै हरन हरि अनाथ के नाथ ॥ कहु नानक तिह जानीऐ सदा बसतु तुम साथ ॥ ६ ॥ तनु धनु जिह तो कउ दीओ ता सिउ नेहु न कीन ॥ कहु नानक नर बावरे अब

किउ डोलत दीन ॥ ७ ॥ तनु धन संपै सुख दीओ अरु जिह नीके धाम ॥ कहु नानक सुनु रे मना सिमरत काहि न राम ॥ ८ ॥ सभ सुख दाता रामु है दूसर नाहि न कोइ ॥ कहु नानक सुनि रे मना तिह सिमरत गति होइ ॥ ९ ॥ जिह सिमरत गति पाईऐ तिहि भजु रे तैं मीत ॥ कहु नानक सुन रे मना अउध घटत है नीत ॥ १० ॥ पांच तत को तनु रचिओ जानहु चतुर सुजान ॥ जिह ते उपजिओ

नानक लीन ताहि मै मान ॥११॥ घटि घटि मै हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि ॥ कहु नानक तिह भजु मना भउनिधि उतरहि पारि ॥ १२ ॥ सुखु दुखु जिह परसै नही लोभ मोह अभि मानु ॥ कहु नानक सुन रे मना सो मूरति भगवान ॥ १३ ॥ उसतति निंदिआ नाहि जिहि कंचन लोह समानि ॥ कहु नानक सुन रे मना मुकति ताहि ते जानि ॥ १४ ॥ हरख सोग जाकै नही बैरी मीत समान ॥ कहु नानक

सुनि रे मना मुकति ताहि तै जान ॥ १५ ॥ भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आनि ॥ कहु नानक सुनि रे मना गिआनी ताहि बखानि ॥ १६ ॥ जिहि बिखिआ सगली तजी लीओ भेख बैराग ॥ कहु नानक सुन रे मना तिह नर माथै भाग ॥१७॥ जिहि माइआ ममता तजी सभते भइओ उदास ॥ कहु नानक सुन रे मना तिह घटि ब्रहम निवासु ॥ १८ ॥ जिहि प्रानी हउमै तजी करता राम पछान ॥ कहु नानक

वहु मुकति नरु इह मन साची मान ॥ १६ ॥ भै नासन दुरमति हरन कलि मै हरि को नाम ॥ निसदिन जो नानक भजै सफल होहि तिह काम ॥ २० ॥ जिहवा गुन गोबिंद भजहु करन सुनहु हरि नाम ॥ कहु नानक सुन रे मना परहि न जमके धाम ॥२१॥ जो प्रानी ममता तजै लोभ मोह अहंकार ॥ कहु नानक आपन तरै अउरन लेत उधार ॥ २२ ॥ जिउ सुपना अरु पेखना ऐसे जग कउ जानि ॥ इन मै कछु

साचो नही नानक बिनु भगवान ॥ २३ ॥ निसि दिनि माइआ कारने प्रानी डोलत नीत ॥ कोटन मै नानक कोऊ नाराइन जिह चीति ॥ २४ ॥ जैसे जल ते बुदबुदा उपजै बिनसै नीत ॥ जग रचना तैसे रची कहु नानक सुन मीत ॥ २५ ॥ प्रानी कछू न चेतई मद माइआ कै अंध ॥ कहु नानक बिनु हरि भजन परत ताहि जम फंध ॥ २६ ॥ जउ सुख कउ चाहै सदा सरनि राम की लेह ॥ कहु नानक सुन रे मना

दुरलभ मानुख देह ॥ २७ ॥ माइआ कारनि धावही मूरख लोग अजान ॥ कहु नानक बिनु हरि भजनि बिरथा जनमु सिरान ॥२८॥ जो प्रानी निसिदिनि भजे रूप राम तिह जानु ॥ हरि जन हरि अंतरु नही नानक साचीमानु ॥ २९ ॥ मनु माइआ मै फधि रहिओ बिसरिओ गोबिंद नाम ॥ कहु नानक बिनु हरि भजन जीवन कउने काम ॥ ३० ॥ प्रानी राम न चेतई मदि माइआ कै अंध ॥ कहु नानक हरि भजन

बिनु परत ताहि जम फंध ॥३१॥ सुख मै बहु संगी भए दुख मै संगि न कोइ ॥ कहु नानक हरि भजु मना अंति सहाई होइ ॥ ३२ ॥ जनम जनम भरमत फिरिओ मिटिओ न जमको त्रासु ॥कहु नानक हरि भजु मना निरभै पावहि बासु ॥ ३३ ॥ जतन बहुतु मै करि रहिओ मिटिओ न मन को मानु ॥ दुरमति सिउ नानक फधिओ राखिलेहु भगवानि ॥३४॥ बाल जुआनी अरु बिरध फुनि तीनि अवस्था जानि ॥ कहु

नानक हरि भजन बिनु बिरथा सभ ही मान ॥३५॥ करणो हुतो सु ना कीओ परिओ लोभकै फंद॥ नानक समिओ रमि गइओ अब किउ रोवत अंध ॥ ३६ ॥ मनु माइआ मै रमि रहिओ निकसत नाहिनि मीत ॥ नानक मूरति चित्र जिउ छाडित नाहनि भीत ॥३७॥ नर चाहत कछू अउर अउरै की अउरै भई ॥ चितवत रहिओ ठगउर नानक फासी गलि परी ॥ ३८ ॥ जतन बहुत सुख के कीए दुख को कीओ न कोइ॥कहु

नानक सुन रे मना हरि भावै सो होइ ॥ ३९ ॥ जगतु भिखारी फिरतु है सब को दाता राम ॥ कहु नानक मन सिमरु तिह पूरन होवहि काम ॥ ४० ॥ झूठै मानु कहा करै जगु सुपने जिउ जान ॥ इन मै कछु तेरो नही नानक कहिओ बखान ॥ ४१ ॥ गरबु करतु है देह को बिनसै छिन मै मीति ॥ जिहि प्रानी हरि जसु कहिओ नानक तिहि जगु जीति ॥ ४२ ॥ जिह घटि सिमरनु राम को सो नरु मुकता

जातु ॥ तिहिनर हरि अंतरु नही नानक साची मानु ॥ ४३ ॥ एक भगति भगवान जिह प्रानी कै नाहि मन ॥ जैसे सूकरु सुआन नानक मानो ताहि तन ॥ ४४ ॥ सुआमी को गृहु जिउ सदा सुआन तजत नही नित ॥ नानक इह बिधि हरि भजउ इक मन हुइ इकि चित ॥ ४५ ॥ तीरथ बरत अरु दान करि मन मै धरै गुमानु ॥ नानक निहफल जात तिह जिउ कुंचर इसनानु ॥४६॥ सिरु कंपिओ पग डगमगे

नैन जोतिते हीन ॥ कहु नानक
इह बिधि भई तऊ न हरि रस
लीन ॥४७॥ निज करि देखिओ
जगतु मै को काहू को नाहि ॥
नानक थिरु हरि भगति है तिह
राखो मन माहि ॥ ४८ ॥ जग
रचना सभ झूठ है जानि लेहु
रे मीत ॥ कहि नानक थिरु ना
रहै जिउ बालू की भीत ॥ ४९ ॥
राम गइओ रावनु गइओ जाकउ
बहु परवार ॥ कहु नानक थिरु
कछु नही सुपने जिउ संसारि ॥
५० ॥ चिंता ताकी कीजीऐ जो

अनहोनी होइ ॥ इह मारगु संसार को नानक थिरु नही कोइ ॥५१॥ जो उपजिओ सो बिनसि है परो आजु के काल ॥ नानक हरि गुण गाइ ले छाडि सगल जंजाल ॥ ५२ ॥ दोहरा ॥ बलु छुटकिओ बंधन परे कछू न होत उपाइ ॥ कहु नानक अब ओट हरि गज जिउ होहु सहाइ॥५३॥ बलु होआ बंधन छुटे सभ किछु होत उपाइ ॥ नानक सभ किछु तुमरै हाथ मै तुम ही होत सहाइ ॥५४॥ संग सखा सभ तजि गए

कोऊ न निबहिओ साथ ॥ कहु नानक इह बिपत मै टेक एक रघनाथ ॥ ५५ ॥ नामु रहिओ साधू रहिओ रहिओ गुरगोबिंद॥ कहु नानक इह जगत मै किन जपिओ गुरमंतु ॥५६॥ रामनामु उरि मै गहिओ जाकै सम नही कोइ ॥ जिह सिमरत संकट मिट दरसु तुहारोहोइ ॥ ५७ ॥ १ ॥

❀ मंगला चरन ते प्रारथना ❀

सलोक

धरि जीअरे इक टेक तूं लाहि बिडानी आस ॥ नानक नामु धिआईऐ कारजु आवै रासि ॥१॥

पउड़ी ॥

कीता लोड़ीऐ कंमु सु हरि पहि आखीऐ ॥ कारजु देइ सवारि सतिगुरु सचु साखीऐ ॥ संता संगि निधानु अंमृतु चाखीऐ ॥ भै भंजन मिहरवान दास की राखीऐ ॥ नानक हरि गुण

गाइ अलखु प्रभु लाखीऐ ॥

बिलावल छंत महला ५ ॥

ऊच अपार बेअंत सुआमी कउण जाणै गुण तेरे ॥ गावत उधरहि सुणते उधरहि बिनसहि पाप घनेरे ॥ पसू परेत मुगध कउ तारे पाहन पारि उतारे ॥ नानक दास तेरी सरनाई सदा सदा बलिहारे ॥

गरभवती दे पाठ करन योग्य शबद

जपुजी साहिब दे वधीक तों वधीक जितने पाठ हो सकन नितनेम नाल करने ॥

सलोक महला ५ ॥

सिर मस्तक रख्या पारब्रहम हसत काया रख्या परमेस्वरह ॥ आतम रख्या गोपाल सुआमी धन चरण रख्या जगदीस्वरह ॥ सरब रख्या गुर दयालह भै दूख बिनासनह ॥ भगति वछल अनाथ नाथे सरणि नानक पुरखु अचुतह ॥ ५२ ॥

श्री मुखबाक पा० १० सवैया ॥

रोगन ते अर सोगन ते जल जोगन ते बहु भांत बचावै ॥ सत्र अनेक चलावत घाव तऊ तन

एक न लागन पावै ॥ राखत है
अपनो कर दै कर पाप संबूह न
भेटन पावै॥और की बातकहाकहि
तो सो सु पेटहीके पटबीचबचावै॥

बिलावलु महला ५ ॥

तातो वाउ न लागई पार
ब्रहम सरणाई ॥ चउगिरद
हमारै राम कार दुखु लगै न
भाई ॥ १ ॥ सतिगुरु पूरा
भेटिआ जिनि बणत बणाई ॥
राम नामु अउखधु दीआ एका
लिवलाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राखि
लीए तिनि रखणहारि सभ

बिआधि मिटाई ॥ कहु नानक किरपा भई प्रभ भए सहाई ॥१॥

जनम समें दे मंगल मई शबद

आसा महला ५ ॥

सतिगुर साचै दीआ भेजि ॥ चिरु जीवनु उपजिआ संजोगि ॥ उदरै माहि आइ कीआ निवासु ॥ माता कै मनि बहुतु बिगासु ॥ १ ॥ जंमिआ पूतु भगतु गोविंद का ॥ प्रगटिआ सभ महि लिखिआ धुर का ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दसी मासी हुकमि बालक जनमु लीआ ॥

मिटिआ सोगु महा अनंदु थीआ॥ गुरबाणी सखी अनंद गावै ॥ साचे साहिब कै मनि भावै ॥२॥ वधी वेलि बहु पीड़ी चाली ॥ धरम कला हरि बंधि बहाली ॥ मन चिंदिआ सतिगुरू दिवाइआ ॥ भए अचिंत एक लिवलाइआ ॥ ३ ॥ जिउ बालकु पिता ऊपरि करे बहु माणु ॥ बुलाइआ बोलै गुरकै भाणि ॥ गुझी छंनी नाही बात ॥ गुरु नानक तुठा कीनी दाति ॥ ४ ॥

❀—❀

❀ अंमृत संस्कार ❀

अंमृत छकन वालिआं वलों

बेनती

वार जैतसरी

मेलि लैहु दइआल ढहि पए दुआरिआ ॥ रखि लेवहु दीन दइआल भ्रमत बहु हारिआ ॥ भगति वछलु तेरा बिरदु हरि पतित उधारिआ ॥ तुझ बिनु नाही कोइ बिनउ मोहि सारिआ ॥ करु गहि लेहु दइआल सागर संसारिआ ॥

आसा छंत महला ४ ॥

दीन दइआल सुणि बेनती हरि प्रभु हरि राइआ राम राजे ॥ हउ मागउ सरणि हरि नाम की हरि हरि मुखि पाइआ ॥ भगति वछलु हरि बिरदु है हरि लाज रखाइआ ॥ जन नानकु सरणागती हरिनामि तराइआ ॥

सलोक महला ५ ॥

जैसा सतिगुर सुणीदा तैसो ही मै डीठु ॥ विछुड़िआ मेले प्रभू हरि दरगह का बसीठु ॥

हरि नामो मंत्रु द्दड़ाइदा कटे हउमै रोगु ॥ नानक सतिगुरु तिना मिलाइआ जिना धुरे पइआ संजोगु ॥ १ ॥

राग मारू रविदास जी

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै ॥ गरीब निवाजु गुसईआ मेरा माथे छत्रु धरै ॥ १ ॥ राहउ ॥ जा की छोति जगत कउ लागै ता पर तुही ढरै ॥ नीचहु ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै ॥ १ ॥ नामदेव कबीरु तिलोचनु सधना सैनु

तरै ॥ कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरि जीउ ते सभै सरै ॥ २ ॥ १ ॥

कुड़माई के शबद

आसा महला ४ ॥

गुरमुखि ढूंढि ढूंढेदिआ हरि सजणु लधा राम राजे ॥ कंचन काइआ कोट गड़ विचि हरि हरि सिधा ॥ हरि हरि हीरा रतनु है मेरा मनु तनु विधा ॥ धुरि भाग वडे हरि पाइआ नानक रसि गुधा ॥

सूही महला ४ ॥

सतु संतोख करि भाउ कुड़म कुड़माई आइआ बलिराम जीउ ॥ संत जना करि मेलु गुरबाणी गवाईआ बलिराम जीउ ॥ बाणी गुर गाई परम गति पाई पंचि मिले सोहाइआ ॥ गइआ करोधु ममता तनि नाठी पाखंडु भरमु गवाइआ ॥ हउमै पीर गई सुखु पाइआ आरोगत भए सरीरा ॥ गुर प्रसादी ब्रहमु पछाता नानक गुणी गहीरा ॥ २ ॥

❀ विवाह दा अरंभ ❀

आसा महला ५ ॥

उदमु कीआ कराइआ आरंभु रचाइआ ॥ नामु जपे जपि जीवणा गुरि मंत्र दृड़ाइआ ॥१॥ पाइ परह सतिगुरू कै जिनि भरमु बिदारिआ ॥ करि किरपा प्रभि आपणी सचु साजि सवारिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कर गहि लीने आपणे सचु हुकमि रजाई ॥ जो प्रभि दिती दाति सा पूरन वडिआई ॥ २ ॥ सदा सदा

गुण गाईअहि जपि नामु मुरारी ॥
नेमु निबाहिओ सतिगुरू प्रभि
किरपा धारी ॥ ३ ॥ नामु धनु
गुण गाउ लाभु पूरे गुर दिता ॥
वणजारे संत नानका प्रभु साहु
अमिता ॥ ४ ॥

❀ ढुकाउ वेले ❀

हमघरि साजन आए ॥ साचै मेलि
मिलाए ॥ सहजि मिलाए हरि
मनि भाए पंच मिले सुखु पाइआ॥
साई वसतु परापति होई जिसु

सेती मनु लाइआ ॥ अन दिनु मेलु भइआ मनु मानिआ घर मंदर सोहाए ॥ पंच सबद धुनि अनहद वाजे हम घरि साजन आए॥

सूही महला १ घरु १ ॥

आवहु सजणा हउ देखा दरसनु तेरा राम ॥ घरि आपनड़े खड़ी तका मै मनि चाउ घनेरा राम ॥ मनि चाउ घनेरा सुणि प्रभ मेरा मै तेरा भरवासा ॥ दरसनु देखि भई निहकेवल जनम मरण दुख नासा ॥ सगली जोति जाता तूं सोई मिलिआ

भाइ सुभाए ॥ नानक साजन कउ बलि जाईऐ साचि मिले घरि आए ॥

सूही महला ३ ॥

साजन आइ वुठे घर माही ॥ हरि गुण गावहि तृपति अघाही ॥ हरि गुण गाइ सदा तृपतासी फिरि भूख न लागै आए ॥ दहदिसि पूज होवै हरि जनकीजो हरि हरि नामु धिआए ॥ नानक हरि आपे जोड़ि विछोड़े हरि बिन को दूजा नाही ॥ साजन आइ वुठे घर माही ॥ ४ ॥ १ ॥

सिखिआ वर ते कंनिआ नूं

वार सूही

धन पिरु एहि न आखीअनि बहनि इकठे होइ ॥ एक जोति दोइ मूरती धन पिरु कहीऐ सोइ ॥

तिलंग महला १ ॥

जो किछु करे सु भला करि मानीऐ हिकमति हुकम चुकाईऐ ॥

तिलग महला १ ॥

सहु कहै सु कीजै तनु मनु दीजै ऐसा परमलु लाईऐ ॥

(पुना) आप गवाईऐ ता सहु पाईऐ अउरु कैसी चतुराई ॥

सलोक सेख फरीद जी

निवणु सु अखरु खवणु गुणु जिहबा मणीआ मंतु ॥ ए त्रै भैणे वेस करि तां वसि आवी कंतु ॥

आसा महला ५ छंत विचों

मधुर बानी पिरहि मानी थिरु सोहागु ताका बना ॥ छंत ॥ साच सील सुच संजमी सा पूरी परवारि ॥ नानक अहिनिसि सदा भली पिर के हेति पिआरि ॥

सोरठ महला ५ विचों

देइ किवाड़ अनिक पड़दे महि पर दारा संगि फाकै ॥ चित्र

गुपतु जब लेखा मागहि तब कउणु परदा तेरा ढाकै ॥

पातशाही १० ॥

सुध जब ते हम धरी बचन गुर दए हमारे ॥ पूत इहै प्रण तोहि प्राण जब लग घट थारे ॥ निज नारी के साथ नेहु तुम नित बढईअहु ॥ पर नारी की सेज भूल सुपने हूँ नहि जईअहु ॥

लावां दे पाठ करन तों पहिलाँ
पड़न वाले शबद

卐

सूही महला ५ ॥

संता के कारजि आपि खलोइआ

हरि कंम करावनि आइआ राम॥ धरति सुहावी तालु सुहावा विचि अंमृत जलु छाइआ राम ॥ अंमृत जलु छाइआ पूरन साजु कराइआ सगल मनोरथ पूरे ॥ जै जै कार भइआ जग अंतरि लाथे सगल विसूरे ॥ पूरन पुरख अचुत अबिनासी जसु वेद पुरानी गाइआ ॥ अपना बिरदु रखिआ परमेसरि नानक नामु धिआइआ ॥ १ ॥

सूही छंत महला ४ विचों

हरि प्रभि काजु रचाइआ गुरमुखि

वीआहणि आइआ ॥ वीआहणि आइआ गुरमुखि हरि पाइआ साधन कंत पिआरी ॥ संत जना मिलि मंगल गाए हरि जीउ आपि सवारी ॥ सुरि नर गण गंधरब मिलि आए अपूरब जंञ बणाई ॥ नानक प्रभु पाइआ मै साचा ना कदे मरै न जाई ॥ ४ ॥

वर दा पला कंनिआ नूं फड़ान वेले

सलोक म० ५ ॥

उसतति निंदा नानक जी मै हभ वंञाई छोड़िआ हभु किछु तिआगी ॥

हभे साक कूड़ावे डिठे तउ पलै तैडै लागी ॥

सलोक महला ५ ॥

प्रेम पटोला तै सहि दिता ढकण कू पति मेरी ॥ दाना बीना साई मैडा नानक सार न जाणा तेरी ॥

लावां

सूही महला ४ ॥

हरि पहिलड़ी लाव परविरती करम द्रिड़ाइआ बलिराम जीउ ॥ बाणी ब्रहमा वेदु धरमु द्रिड़हु पाप तजाइआ बलिराम जीउ ॥ धरमु

दृड़हु हरिनामु धिआवहु सिम्रिति
नामु दृड़ाइआ ॥ सतिगुरु गुरु
पूरा आराधहु सभि किलविख
पाप गवाइआ ॥ सहज अनंदु
होआ वडभागी मनि हरि हरि
मीठा लाइआ ॥ जनु कहै
नानकु लाव पहिली आरंभु
काजु रचाइआ ॥ १ ॥
हरि दूजड़ी लाव सतिगुरु पुरखु
मिलाइआ बलिराम जीउ ॥
निरभउ भै मनु होइ हउमै मैलु
गवाइआ बलिराम जीउ ॥
निरमलु भउ पाइआ हरिगुण

गाइआ हरि वेखै रामु हदूरे ॥
हरि आतम रामु पसारिआ
सुआमी सरब रहिआ भरपूरे ॥
अंतरि बाहरि हरि प्रभु एको
मिलि हरि जन मंगल गाए ॥
जन नानक दूजी लाव चलाई
अनहद सबद वजाए ॥ २ ॥
हरि तीजड़ी लाव मनि चाउ
भइआ बैरागीआ बलिराम जीउ॥
संत जना हरि मेलु हरि पाइआ
वडभागीआ बलिराम जीउ ॥
निरमलु हरि पाइआ हरिगुण
गाइआ मुखि बोली हरि बाणी ॥

संत जना वडभागी पाइत्र्या हरि कथीऐ अकथ कहाणी ॥ हिरदै हरि हरि हरि धुनि उपजी हरि जपीऐ मसतकि भागु जीउ ॥ जनु नानकु बोलै तीजी लावै हरि उपजै मनि बैरागु जीउ ॥३॥ हरि चउथड़ी लाव मनि सहजु भइत्र्या हरि पाइत्र्या बलिराम जीउ ॥ गुरमुखि मिलित्र्या सुभाइ हरिमनि तनि मीठा लाइत्र्या बलिराम जीउ ॥ हरि मीठा लाइत्र्या मेरे प्रभ भाइत्र्या अनदिनु हरि लिव लाई ॥ मनु चिंदित्र्या फलु पाइत्र्या

सुआमी हरिनामि वजी वाधाई ॥ हरि प्रभि ठाकुरि काजु रचाइआ धन हिरदै नामि विगासी ॥ जनु नानकु बोले चउथी लावै हरि पाइआ प्रभु अबिनासी ॥ ४ ॥

लावां दे मगरों पढ़न वाले शबद

जैतसरी महला ५ छंतु घरु १ विचो

यार वे नित सुख सुखेदी सा मै पाई ॥ वरु लोड़ीदा पाइआ वजी वाधाई ॥ महा मंगलु रहसु थीआ पिरु दइआलु सद नवरंगीआ ॥ वडभागि पाइआ गुरि मिलाइआ साध कै सत संगीआ ॥ आसा

मनसा सगल पूरी प्रभ अंकि अंकु मिलाई ॥ बिनवंति नानकु सुख सुखेदी सा मै गुर मिलि पाई ॥ ४ ॥ १ ॥

श्री रागु महला ४ घरु २

वीआहु होआ मेरे बाबुला गुरमुखे हरि पाइआ ॥ अगिआनु अंधेरा कटिआ गुर गिआनु प्रचंड बलाइआ ॥ बलिआ गुर गिआनु अंधेरा बिनसिआ हरि रतनु पदारथु लाधा ॥ हउमै रोगु गइआ दुखु लाथा आपु आपै गुरमति खाधा ॥ अकाल मूरति वरु पाइआ

अबिनासी ना कदे मरै न जाइआ ॥वीआहु होआ मेरे बाबुला गुरमुखे हरि पाइआ ॥ २ ॥

वडहंस महला ५ छंत घरु ४ पउड़ी ४ ॥

पूरी आसा जी मनसा मेरे राम ॥ मोहि निरगुन जीउ सभि गुण तेरे रामु॥सभि गुन तेरे ठाकुर मेरे कितु मुखि तुधु सालाही ॥ गुणु अवगुणु मेरा किछु न बीचारिआ बखसि लीआ खिन माही॥नउ निधि पाई वजी वाधाई वाजे अनहद तूरे ॥ कहु नानक मै वरु घरि पाइआ मेरे लाथे जी सगल विसूरे॥४॥१॥

❀ चलाणे दे शबद ❀

अंते सतिगुर बोलिआ मै पिछे
कीरतन करिअहु निरबान जीउ ॥

सूही रविदास जीउ

जो दिन आवहि सो दिनु जाही॥ करना कूचु रहनु थिरु नाही ॥ संगु चलत है हम भी चलना॥दूरि गवनु सिर ऊपरि मरना ॥ १ ॥ किआ तू सोइआ जागु इआना ॥ तै जीवनु जगि सचु करि जाना॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिनि जीउ दीआ सु रिजक अंबरावै ॥ सभि घट भीतर हाटु चलावै ॥ करि बंदगी

छाडि मैं मेरा॥हिरदै नामु सम्हारि सवेरा ॥२॥ जनमु सिरानों पंथु न सवारा ॥ सांझ परी दहदिस अंधिआरा ॥ कहि रविदास निदानि दिवाने ॥ चेतसि नाही दुनीआ फन खाने ॥ ३ ॥ २ ॥

सोरठि महला ९

प्रीतम जानि लेहु मन माही ॥ अपने सुख सिउ ही जगु बांधिओं को काहू को नाही ॥१॥ रहाउ ॥ सुख मै आनि बहुतु मिलि बैठत रहत चहूदिसि घेरै ॥ बिपत परी सभ ही संगु छाडित कोऊन आवत

नैरै ॥ १ ॥ घर की नारि बहुत हित जासिउ सदा रहत संग लागी ॥ जबही हंस तजी इह कांइआ प्रेत प्रेत करि भागी ॥२॥ इह बिधि को बिउहारु बनिओ है जा सिउ नेहु लगाइओ ॥ अंतबार नानक बिनु हरि जी कोऊ कामि न आइओ ॥ ३ ॥ १२ ॥१३६॥

देव गधारी महला ९ ॥

सभकिछु जीवतको बिवहार॥ मात पिता भाई सुत बंधप अरु फुनि गृह की नारि॥१॥ रहाउ॥ तन ते प्रान होत जब निआरे टेरत

प्रेति पुकार ॥ आध घरी कोऊ नहि राखै घरि ते देत निकारि ॥ १ ॥ मृग तृसना जिउ जग रचना यह देखउ रिदै बिचारि ॥ कहु नानक भजु राम नाम नित जाते होत उधार ॥ २ ॥

तिलंग महला ९ ॥

जागि लेहु रे मना जागि लेहु कहा गाफल सोइआ ॥ जो तनु उपजिआ संग हो सो भी संग न होइआ ॥१॥ रहाउ ॥ मात पिता सुत बंधजन हितु जासिउ कीना ॥ जीउ छूटिओ जब देह ते डारि

अगति मै दीना ॥ १ ॥ जीवत लउ बिउहारु है जग कउ तुम जानउ ॥ नानक हरि गुन गाइ लै सभ सुफन समानउ ॥२॥२॥

देव गंधारी महला ९ ॥

जगत मै झूठी देखी प्रीति॥ अपने ही सुख सिउ सभ लागे किआ दारा किआ मीत ॥१॥ रहाउ ॥ मेरउ मेरउ सभै कहत है हित सिउ बाधिओ चीत ॥ अंतकाल संगी नह कोऊ इह अचरज है रीति ॥२॥ मन मूरख अजहू नह समझत सिख दै हारिओ नीत ॥

नानक भउजलु पारि परै जउ गावै प्रभ के गीत ॥ २ ॥ ३ ॥

गउड़ी महला ९ ॥

साधो रचना राम बनाई ॥ इकि बिनसै इक असथिरु मानै अचरजु लखिओ न जाई ॥१॥ रहाउ ॥ कामु क्रोधु मोह बसि प्रानी हरि मूरति बिसराई ॥ झूठा तनु साचा करि मानिओ जिउ सुपना रैनाई ॥ १ ॥ जो दीसै सो सगल बिनासै जिउ बादर की छाई ॥ जनु नानक जगु जानिओ मिथिआ रहिओ राम सरनाई ॥ २ ॥ २ ॥

❀ भगत रतनावली ❀

वार दसवीं भाई गुरदास जी

धरू भगत

ध्रू हसदा घरि आइआ कर पिआर पिउ कुछड़ लीता ॥ बाहहुं पकड़ उठालिआ मन विच रोस मत्रेई कीता॥ डडहु लिक्का मां पुछे तूं सावाणी हैंकि सुरीता॥सावाणी हां जनम दी नाम न भगती करम हडीता ॥ किस उदम ते राजमिलै शत्रू ते सभ होवन मीता॥ परमेसर आराधीऐ जिहूं होईऐ पतित

पुनीता॥ बाहर चलिया करन तप मन वैरागी होइ अतीता ॥ नारद मुनिउपदेसिआनाम निधान अमिउ रस पीता ॥ पिछहुं राजे सदिआ अवचल राज करहु नित नीता ॥ हार चले गुरमुख जग जीता ॥१॥

प्रहिलाद भगत

घर हरनाकश दैंत दे कलर कवल भगति प्रहिलाद ॥ पड़न पठाया चाटसालपांधेचित होआअहिलाद॥ सिमरै मन विच राम नाम गावै सबद अनाहद नाद॥ भगति करन सभ चाटड़े पांधेहोइ रहे विसमाद॥

राजे पास रूआइआ दोखी दैत वधाया वाद ॥ जल अगनी विच घतिआ जलै न डुबै गुर परसाद ॥ कढ खड़ग सह पुछिआ कउणु सु तेरा है उसताद ॥ थंम्म पाड़ परगटिआ नरसिंघ रूप अनूप अनाद ॥ बेमुख पकड़ पछाड़िअनु संत सहाई आद जुगाद ॥ जै जै कार करन ब्रहमाद ॥ २ ॥

बलि राजा

बलि राजा घर आपणो अंदर बैठा जग्ग करावै ॥ बावण रूपी आइआ चार वेद मुख पाठ

सुणावै ॥ राजे अंदर सदिआ मंग सुआमी जो तुध भावै ॥ अछल छलण तुधु आइआ शुक्र परोहित कहि समझावै॥ करों अढाई धरति मंग पिछहुं दे तृहु लोअ न भावै ॥ दुह कर वा कर तिन लोअ बलि राजा लै मगर मिणावै ॥ बलछल आप छलाइअनु होइ दयाल मिले गल लावै ॥ दिता राज पताल दा होइ अधीन भगत जस गावै ॥ होइ दरबान महा सुख पावै ॥३॥

भगत अंबरीक

अंबरीक मुहि वरत है रात

पई दुरबाशा आइआ ॥ भीड़ा
ओस उपारणा उह उठ न्हावण
नदी सिधाया ॥ चरणोदक लै
पोखिआ ओह सरापदेणनोधाया॥
चक्र सुदरशन काल रूप होइ
भीहावल गरब गवाया ॥ बामण
भंना जीउ लै रक्ख न हंघन
देव सबाया ॥ इंद्र लोक शिव
लोक तज ब्रहम लोक वैकुंठ
तजाया ॥ देवतिआं भगवान सण
सिख देइ सभनां समझाया ॥
आइ पइआ सरनागती मारीदा
अंबरीक छुडाया ॥ भगत वछल

जग बिरद सदाया ॥ ४ ॥

राजा जनक

भगत वडा राजा जनक है गुरमुख माया विच उदासी ॥ देव लोक नो चलिश्रा गण गंधरब सभा सुख वासी ॥ जमपुर गया पुकार सुन बिल लावन जी नरक निवासी ॥ धरम राइ नों श्राखिश्रोनु सभनां दी कर बंद खलासी ॥ करे बेनती धरम राइ हउ सेवक ठाकुर श्रबिनासी ॥ गहिणो धरिश्रनु इक नाउं पापां नाल करै निरजासी ॥ पासंग पाप न पुजनी गुरमुख

नाउं अतुल न तुलासी ॥ नरकहुं छुटे जीअ जंत कटी गलहुं सिलक जम फासी॥ मुकति जुगति नावै की दासी ॥ ५ ॥

राजा हरी चंद ॥

सुख राजे हरी चंद घर नार सुतारा लोचण राणी ॥ साध संगति मिल गांवदे रातीं जाइ सुणै गुरबाणी ॥ पिछों राजा जागिआ अद्धी रात निखंड विहाणी॥राणी दिस न आवई मन विच वरत गई हैराणी ॥ होरतु राती उठकै चलिआ पिछै तरतु जुआणी ॥

राणी पहुती संगतीं राजे खड़ी खड़ाउं निसाणी ॥ साध संगति आराधिआ जोड़ी जुड़ी खड़ाउं पुराणी ॥ राजे डिठा चलित इह इह खड़ांव है चोज विडाणी॥साध संगत विटहु कुरबाणी ॥ ६ ॥

भगत बिदर जी

आया सुणिआ बिदर दे बोलै दुरजोधन होइ रुक्खा॥ घर असाडे छडके गोलेदेघर जाहिकि सुक्खा॥ भीखम द्रोण करण तज सभा सीगार वडे मानुक्खा॥ झुगी जाइ वलाइओन सभना दे जीअ अंदर

धुक्खा ॥ हस बोले भगवान
सुणहु राजा होइ मनमुक्खा॥ तेरे
भाउ न दिस्सई मेरे नाही अपदा
दुक्खा ॥ भाउ जिवेहा बिदर दे
होरी दे चित चाउ न चुक्खा ॥
गोबिंद भाउ भगतदा भुक्खा॥७॥

दरोपती जी

अंदर सभा दुसासनै मथे वाल
द्रोपती आंदी ॥ दूतां नो
फुरमाइआ नंगी करहु पंचाली
बांदी ॥ पंजे पांडो वेखदे अउघट
रुद्धी नारि जिनां दी ॥ अक्खी
मीट धिआन धर हाहा क्रिशन

करे विललांदी॥ कपड़ कोट उसा-
रिओनु थक्के दूत न पार वसांदी॥
हत्थ मरोड़न सिर धुणनि पछोतान
करन जाह जांदी॥ घर आई ठाकुर
मिले पैज रही बोले शरमांदी॥
नाथ अनाथां बाण धुरांदी॥ ८॥

भगत सुदामा जी॥

विप सुदामा दालदी बाल
सखाई मित्र सदाए॥ लागू
होई बाम्हणी मिल जगदीस
दलिद्र गवाए॥ चलिआ गिणदा
गटोआं क्यों कर जाईए कौण
मिलाए॥ पहुता नगर दुआरका

सिंध दुआर खलोता जाए ॥ दूरहु देख डंडौत कर छड सिंघासण हरि जी आए ॥ पहिले दे परदखणा पैरीं पैके लै गल लाए ॥ चरणोदक लै पैर धोइ सिंघासण उपर बैठाए ॥ पुछै कुसल पिआर कर गुर सेवा दी कथा सुणाए ॥ लैके तंदुल चब्बिओन विदा करे अगे पहुंचाए ॥ चार पदारथ सकुच पठाए ॥ ६ ॥

भगत जै देउ जी

प्रेम भगति जै देउ करे गीत गोविंद सहज धुनि गावै ॥ लील्हा

चलित वखागादा अंतरजामी ठाकुर भावै ॥ अक्खर इक आवड़े पुसतक बन्ह संधिआ कर आवै ॥ गुण निधान घर आइकै भगत रूप लिखलेख बणावै॥ अक्खर पढ़ परतीत कर हुइ विसमाद न अंग समावै ॥ वेखै जाइ उजाड़ विच बिरख इक आचरज सुहावै ॥ गीत गोबिंद संपूरणो पतु पतु लिखिआ अंत न पावै ॥ भगति हेतु परगास कर होइ दइआल मिलै गल लावै ॥ संत अनंत न भेद गणावै ॥ १० ॥

भगत नामदेव जी

कंम किते पिउ चलिआ नामदेव नों आख सिधाया॥ ठाकुर दी सेवा करीं दुध पिआवणु कहि समझाया ॥ नाम देउ इसनान कर कपल गाइ दुहि कै लै आया ॥ ठाकुर नों न्हावालके चरणोदकलै तिलक चढ़ाया ॥ हत्थ जोड़ बिनती करै दुध पीआहु जी गोबिंद राया ॥ निहचउ कर आराधिआ होइ दयाल दरस दिखलाया ॥ भरी कटोरी नामदेव लै ठाकुर नों दुध पीआया ॥ गाइ मुई

जीवालिश्रोन नाम देउ दा छप्पर छाया ॥ फेर देहुरा रखिश्रोन चार वरन लै पैरीं पाया ॥ भगत जनां दा करे कराया ॥ ११ ॥

भगत तिरलोचन जी

दरसन वेखण नाम देव भलके उठ तृलोचन आवै ॥ भगति करन मिल दुइ जणे नामदेउ हरि चलत सुणावै ॥ मेरी भी कर बेनती दरशन देखा जे तिसभावै॥ ठाकुर जी नों पुछिश्रोस दरशन किवें तृलोचन पावै ॥ हस के ठाकुर बोलिश्रा नामदेउ नों कहि

समझावै ॥ हत्थ ना आवै भेट सो
तुम तूलोचन मैं मुहि लावै ॥
हउं अधीन हां भगत दे पहुच न
हंघां भगती दावै ॥ होइ विचोला
आण मिलावै ॥ १२ ॥

धंना भगत जी

ब्राम्हण पूजे देवते धंना गऊ
चरावण आवै ॥ धंने डिठा चलित
एह पुछै ब्राम्हण आख सुणावै ॥
ठाकुर दी सेवा करै जो इछै सोई
फल पावै ॥ धंना करदा जोदड़ी
मै भि देहि इक जे तुध भावै ॥
पथर इक लपेट कर दे धंने

नो गैल छुडावै ॥ ठाकुर नों न्हावाल कै छाहि रोटी लै भोग चड़ावै।।हथ जोड़ मिनत करै पैरीं पै पै बहुत मनावै ॥ हउं भी मूंह न जुठालसां तूं रुठा मैं किहुनसुखावै ॥गोसाईं परतक्ख होइ रोटीखाइ छाहि मुहि लावै ॥ भोला भाउ गोबिंद मिलावै ॥ १३ ॥

भगत बेणी जी

गुरमुख बेणी भगति कर जाइ इकांत बहै लिवलावै ॥ करम करै अधिआतमी होरसु किसै न अजर लखावै।।घर आया जां पुछीऐ राज

दुआर गइआ आलावै ॥ घर सभ वथूं मंगीअन वल छल करके भत्त लंघावै ॥ वडा सांग वरतदा उह इक मन परमेशर ध्यावै ॥ पैज सवारै भगत दी राजा होइ कै घर चल आवै ॥ देइ दिलासा तुस कै अनगणती खरचीं पहुचावै॥ओथहु आयाभगत पास होइ दिआल हेत उपजावै ॥ भगत जनां जैकार करावै ॥१४॥

भगत रामा नंद जी

होइ बिरकत बनारसी रहिंदा रामा नंद गुसाईं ॥ अंमृत वेले

उठके जांदा गंगा न्हावण तांईं। अगों ही दे जाइके लंमा पिआ कबीर तिथाईं ॥ पैरीं टुंब उठाइआ बोलहु राम सिख समझाई ॥ जिउं लोहा पारस छुहे चंदन वास निंम महिकाई ॥ पसू परेतहुं देव कर पूरे सतिगुर दी वडिआई ॥ अचरज नों अचरज मिलै विसमादै विसमाद मिलाई ॥ झरणा झरदा निझरहुं गुरमुख बाणी अघड़ घड़ाई ॥ राम कबीरै भेद न भाई ॥ १५ ॥

भगत सैण जी ॥

सुण परताप कबीर दा दूजा सिक्ख होआ सैण नाई ॥ प्रेम भगति रातीं करै भलके राज दुआरै जाई ॥ आए संत पराहुणे कीरतन होआ रैण सबाई ॥ छड न सकै संत जन राज दुआर न सेव कमाई ॥ सैण रूप हरि होइकै आइआ राणे नों रीझाई ॥ साध जना नों विदा कर राज दुआर गइआ शरमाई ॥ राणे दूरहुं सद्दकै गलहुं कवाइ खोल पैनाई ॥ वस कीता हउं तुध अज बोलै

राजा सुणै लुकाई ॥ परगट करै भगत वडिआई ॥ १६ ॥

भगत रवि दास जी

भगत भगत जग वजिआ चहु चकां दे विच चमरेटा ॥ पाणा गंढे राह विच कुला धरम ढोइ ढोर समेटा ॥ जिउं कर मैले चीथड़े हीरा लाल अमलो पलेटा ॥ चहु वरनां उपदेसदा ज्ञान् ध्यान कर भगत सहेटा ॥ न्हावण आया संग मिल बनारस कर गंगा थेटा ॥ कढ कसीरा सउपिआ रविदासै गंगा

दी भेटा ॥ लग्गा पुरब अभीच दा
डिठा चलित अचरज अमेटा ॥
लइआ कसीरा हत्थ कढ सूत इक
जिउं ताणा पेटा ॥ भगत जनां
हरि मां पिउ बेटा ॥ १७ ॥

अहिलिया जी

गोतमनारि अहिलिआतिसनोदेख
इंद्र लोभाणा ॥ परघर जाइ सराप
लैहोइसहस भग पछोताणा॥सुंञा
होआ इंद्र लोक लुकिआ सरवर
मन शरमाणा ॥ सहस भगहु
लोइण सहस लैंदोई इंद्र पुरी
सिधाणा ॥ सती सतहु टल सिला

होइ नदी किनारै बाझ पराणा ॥ रघुपति चरण छुहंदिआं चली सुरग पुर बणो बिबाणा ॥ भगत वछल भल्याईअहुं पतित उधारण पाप कमाणा ॥ गुण नों गुण सभ को करै अउगण कीते गुण तिस जाणा ॥ अवगति गति किआ आख वखाना ॥ १८ ॥

भगत बालमीक जी ॥

वाटै माणस मारदा बैठा बालमीक बटवाड़ा ॥ पूरा सतिगुर सेविआ मनविच होआ खिजोताड़ा ॥ मारण नो लोचै घणा कढ न हंघै हत्थ

उघाड़ा ॥ सतिगुर मनुश्रा रखिश्रा होइ न श्रावै उछोहाड़ा ॥ श्रउगण सभ प्रगासिश्रनु रोजगार है एह असाड़ा ॥ घर विच पुछण घलिश्रा अंत काल है कोइ असाड़ा ॥ कोड़मड़ा चउखंनीऐ कोइ न बेली करदे झाड़ा ॥ सच हड़ाइ उधारिश्रनु टप निकथा उपर वाड़ा ॥ गुरमुख लंघे पाप पहाड़ा ॥ १६ ॥

अजामल जी

पतित अजामल पाप कर जाइ कलावतणी दे रहिश्रा ॥ गुर ते

वेमुख होइ कै पाप कमावै दुरमति दहिया ॥ बृथा जनम गवाइयनु भवजल अंद्र फिरदा वहिया ॥ छिया पुत जाए वेसवा पापाँ दे फल इछे लहिया ॥ पुत्र उपंनां सतवां नाउं धरन नों चित उमहिया ॥ गुरू दुआरे जाइकै गुरमुख नाउं नराइण कहिया ॥ अंतकाल जमदूत वेख पुत्त नराइण बोल छहिया ॥ जमगण मारे हरि जनां गइआ सुरग जमडंड न सहिया ॥ नाइ लए दुख डेरा ढहिया ॥ २० ॥

गनका

गनका पापण होइकै पापाँ दा गल हार परोता ॥ महां पुरख अचाणचक गनका वाड़े आइ खलोता ॥ दुरमति देख दइआल होइ हत्थहुं उसनों दितोसु तोता ॥ राम नाम उपदेस कर खेल गिआ देवण जसओता॥ लिवलागी तिस तोतिअहुं नित पढ़ाए करै असोता ॥ पतित उधारण राम नाम दुरमति पाप कलेवर धोता ॥ अंतकाल जमजाल तोड़ नरकै विचि न खाधो सु गोता ॥ गई

वैकुंठ विबाण चढ़ नाउं नाराइण छोत अछोता॥ थाउं निथावै माण माणोता ॥ २१ ॥ (पूतना)

आई पापण पूतना दुहीं थणी विहु लाइ वहेली ॥ आइ बैठी परवार विच नेहुं लाइ नवहाणि नवेली ॥ कुछड़ लए गोविंदराइ कर चेटक चतुरंग महेली॥ मोहण मंमे पाइओन बाहिर आई गरब गहेली ॥ देइ वधाइ उचाइनु तिह चरिआर तार अठखेली ॥ तिहु लोआं दा भार दे चंमड़िआ गल होइ दुहेली ॥ खाइ पछाड़ पहाड़

वांग जाइ पई उजाड़ धकेली ॥
कीती माउं तुल सहेली ॥ २२ ॥

वद्धक

जाइ सुता परभास विच गोडे उते पैर पसारे ॥ चरण कमल विच पदम है झिलमिल झलकै वांगी तारे ॥ वद्धक आया भालदा मिरगै जाण बाण लै मारे ॥ दरशन डिठोसु जाइकै करण पलाव करै पूकारे ॥ गल विच लीता कृशन जी अवगुण कीते हरि न चितारे ॥ कर किरपा संतोखिआ पतित उधारण विरद

वीचारै ॥ भले भले कर मंनीअनि बुरिआं दे हरि काज सवारे ॥ पाप करंदे पतित उधारे ॥२३॥१०॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

†अथ नसीहत नामा

तिलंग महला १ ॥

कीचे नेकु नामी जो देवै खुदाइ ॥ जो दीसै ज़िमी पर सोहोसीफनाइ ॥ दायम व दौलत कसे बेशुमार ॥ न रहिंगे करोड़ी ना रहिंगे हज़ार॥दमड़ा तिसी का जो खरचै अर खाइ ॥ देवै दिलावै रजावै

†यह बाणी श्रीगुरु ग्रंथ साहिब में नहीं है।

खुदाइ ॥ होता न राखै अकेला न खाइ ॥ तहकीक दिलदानी वही भिसत जाइ ॥ कीजै तवजिश्रा ना कीजै गुमान ॥ न रहिसी इह दुनीश्रा न रहिसी दीवान॥ हाथी व घोड़े व लशकर हज़ार ॥ होवेंगे गरक कुछ लागे न बार ॥ दुनीश्रां का दीवाना कहे मुलख मेरा॥आई मौत सिर पर न तेरा न मेरा॥केती गई देख वाजे वजाइ ॥ वही एक रहसी जो साचा खुदाइ ॥ आइश्रा अकेला अकेला चलाइश्रा ॥ चलते वकत कोईकाम न आइश्रा॥

लेखा मंगीजै किया दीजै जवाब ॥ तोबा पुकारे तो पावे अज़ाब ॥ दुनीआं पै कर ज़ोर दमड़ा कमाइआ ॥ खाइआ हंडाइआ अजाई गवाइआ ॥ आखर पछोताणा करै हाइ हाइ ॥ दरगह गइआ ते तूं पावहि सज़ाइ ॥ लानत है तैकू व तैंडी कमाई ॥ दगेबाज़ी करके दुनीआ लूट खाई ॥ पीए पिआले अर खाएकबाब॥देखोरे लोको जोहोते खराब॥जिस का तूं बंदा तिसीका सवारिआ ॥ दुनीआं के लालच तैं

साहिब विसारिआ ॥ ना कीती इबादत न रखिओ इमान ॥ ना कीतीआ हकूमत पुकारे जहान ॥ अंदर महिल के तूं बैठा हैं जाइ ॥ हरमां से खेलें खुशबोई हवाइ ॥ न सूझै न बूझै बाहरि किआ होइ ॥ हरामी गरीबां को मारे बिगोइ ॥ बसती उजाड़ें फिर न बसावें ॥ कूके पुकारें तौ दाद न पावें ॥ लाखों करोड़ी करे बेशुमार ॥ कई किसान बपुड़े मरीवें हज़ार ॥ हाकम कहावें हकूमत न होइ ॥

दुनीयाँ का दीवाना फिरै मसत लोइ ॥ लूटे मुलक और पहिरे व खाइ ॥ दोज़क की आतश मारेगी जलाइ ॥ गरब सिउं ना देख दुनीयां के दीवाने ॥ हमेशा न रहिसी तूं ऐसी न जाने ॥ उठावे सभा उसको लागे न बार ॥ किसकी यह दुनीआं किसके घर बार ॥ चंद रोज़ चलना किछ पकड़ो करार ॥ ना कीचे हिरस बहुत दुनीआं के यार ॥ शर्मिंदा न हो कुछ नेकी कमाइ ॥ लानत का जामा तूं

पहरै न जाइ ॥ ग़फ़लत करोगे तो खावोगे मार ॥ बेटी व बेटा कोई लएगा ना सार॥ तोबा करो बहुतकीचेनज़ोर॥दोजककीआतश जलावेगी गोर ॥ मुशाइक पैकंबर केते शाहि खान ॥ न दीसें ज़िमीं पर उनो के निशान ॥ चलते कबूतर जनावर की छाउं ॥ केते खाक हुए कोईपूछे न नाउं॥ चाली गंज जोड़े न रखिओईमान॥ देखो रेलोकोकारू होतापरेशान॥नदानी ये दुनीआं वा फ़ानी मुकाम ॥ तूं खुदचशम बीनी है चलना जहान॥

हर वकत बंदे ना खिदमत विसार ॥ मसती औ गफलत में बाज़ी न हार॥ तोबा न कीतीआ करदे गुनाह ॥ नानक ऐसे आलम से तेरी पनाह ॥ १ ॥

❀ †पैंतीस अखरी ❀

ओअंकार सरब प्रकासी ॥ आतम सुध अक्षै अबिनासी ॥ ईस जीव मै भेद न जानो ॥ साध चोर सभ ब्रहम पछानो ॥ हसती चीटी तृण लौ आदं ॥ एक अखंडन बसै अनादं ॥ १ ॥ उ आ ई सा हा ॥

---

†यह बाणी श्रीगुरू ग्रंथ साहिब में नहीहै।

कारण करण अकरता कहीए ॥ भान प्रकाश जगत सिउ लहीए ॥ खान पान कछु रूप न रेखं ॥ निर विकार अद्वैख अलेखं ॥ गात ग्राम सभ देस दिसंतर ॥ सति करतार सरब के अंतर ॥ घन की निआईं सदा अखंडत ॥ ङिआन बोध परमातम पंडत॥२॥

का खा गा घा ङा ॥ चाप ज्ञान करि जाहि बिराजै ॥ छाया द्वैत सगल उठ भाजै ॥ जाग्रत सुपन सखोपत तुरीआ॥आतम भूपत की एह पुरीआ ॥ झुनतकार अनहद

[illegible] धीरं ॥ तृकुटी भीतर अति छ्ब जोरं॥ आणित जोगी इआ रस वाता ॥ सोहं शबद अमीरस माता ॥३॥चा छा जा झा ञा ॥ टारन भ्रमन अघन की सैना ॥ सतिगुर मुकति पदारथ दैना ॥ ठाकत दुबिधा निरमल करणं ॥ डारि सुधा मुख अपदा हरणं ॥ ढापित द्वैत अंधेरी मनकी ॥ णासति गुर भ्रमता सभ तनकी॥४॥ टा ठा डा ढा णा॥तारण गुरू बिना नहि कोई ॥ स्रुति सिमृति मध बात पराई ॥ थान अद्वैत तबै जाइ

परसै ॥ मन बच करम गुरू पग
दरसै ॥ दारिद रोग मिटै सब
तनका ॥ गुर करुणा कर होवै
मुकता ॥ धंन गुरदेव मुकति के
दाते॥ नाना नेत बेद जिस गाते ॥
५॥ता था दा धा ना॥पारब्रहम सभ
माहि समाना॥सांतिसिधांत कीओ
बख्याना॥फास कटी दवैत गुरपूरे॥
बाजे शबद अनाहद तूरे ॥ बाणी
ब्रहम साथ भयो मेला ॥ भंग दवैत
हउ सदा अकेला ॥ मान अपमान
दोऊ जर गए ॥ जोऊ थे सोऊ पुन
भए ॥६॥ पा फा बा भा मा ॥ या

क्रिरिआ कउ सोऊ पछानै ॥
अद्ध्ख अखंड आप कउ मानै ॥
रवि रहे सभ महि पुरख अलेखं ॥
आदि अपार अनाद अभेखं ॥
ड़ाड़ मिटी आतम दरसाना ॥
प्रगटे ज्ञान जोति तब भाना ॥
लिवलीन भए आतम मध ऐसे ॥
जिउ जल जलहि भेद कहु कैसे ॥
वासुदेव बिन अवर न कोऊ ॥
नानक ओअं सोहं आतम सोऊ ॥
७ ॥ या रा ला वा ड़ा ॥

गुरबाणी प्रेस, जलियां वाला बाग, अमृतसर
प्रिंटर—स० गुरबचन सिंह

संत का सुन्दर गुटका

१. जपुजी साहिब १
२. शब्द हजारे ३३
३. जापु साहिब ४६
४. शब्द हजारे पा० रेमन ऐमो ६१
५. सवैये श्री मुखवाक (सरावेग) १०२
६. स्व प्रसादि सवैये दीनन १०८
७. आनंद साहिब बड़ा ११४
८. अरदास १७५
९. कीर्तन सोहिला १६०
१०. वार १६६
११. साखी भाई लालो २१८
१२. कीरतनी आसा दी वार २१६
१३. छक्के छंद २२६
१४. आरती २६६
१५. सुखमनी साहिब ३०५
१६. सहसरनामा ४६५
१७. बसंत दी वार ४७२
१८. सलोक महला ६ ४७४

१९. मंगला चरन और प्रार्थना ४९१
२०. गरभवती के शब्द ४९२
२१. जनम समय के शब्द ४९४
२२. अमृत संसकार ४९६
२३. सुनाई के बाद ४९९
२४. शब्द विवाह का आरम्भ ५०१
२५. दुआओं समय ५०३
२६. शिक्षा के शब्द ५०५
२७. शब्द लावाँ पढ़ने से पहले ५०७
२८. वर का पला पकड़ने से पहले ५०९
२९. लावा ५१०
३०. शबद लावाँ के बाद ५१४
३१. शबद चलाने के ५१७
३२. भगत रतनावली ५२३
३३. नसीहतनामा ५५२
३४. पैंतीस अखरी ५५९

जवाहर सिंह कृपाल सिंह एन्ड को०
बाजार माई सेवाँ, अमृतसर